26 जून, 2025
आषाढ़, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा
संवत 2082
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
गुरुवार, वर्ष 10, अंक 246

झारखंड में नीली क्रांति को साकार करेगी सरकार : शिल्पी नेहा तिर्की

सिल्ली के गांव में घुसा बाघ, दहशत, शाम को किया गया रेस्क्यू

■ मारदू गांव में सुबह साढ़े चार बजे किसान के घर में घुसा था ■ पीटीआर की टीम ने बेहोश किये बिना किया रेस्क्यू

आजाद सिपाही संवाददाता

मुरी/सिल्ली। सिल्ली प्रखंड के मारदू गांव के एक घर में घुसे रॉयल बंगाल टाइगर का रेस्क्यू कर लिया गया है। पलामू टाइगर रिजर्व की टीम ने बाघ का रेस्क्यू कर उसे अपने कब्जे में ले लिया है। उक्त बाघ गांव के पुरंदर महतो के घर में घुस गया था। किसान और उसके परिजनों ने बाघ को घर के भीतर बंद कर दिया था। बुधवार सुबह गांव में उस समय हड़कंप मच गया, जब एक बाघ जैसे विशालकाय जानवर को गांव में घूमते हुए देखा गया। कुछ ही देर बाद बाघ भोजन की तलाश में पुरंदर महतो के घर में घुस गया। साहस और सूझबूझ का परिचय देते हुए पुरंदर महतो ने बाघ को घर में बंद कर दिया। जिस कमरे में बाघ घुसा था, उसमें उस वक्त कोई भी मौजूद नहीं था। घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीणों ने तुरंत सिल्ली थाना पुलिस और वन विभाग को सूचित किया।

बाघ के घर में घुसने की खबर जंगल में आग की तरह फैल गयी और देखते ही देखते पुरंदर महतो के घर के बाहर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गयी। बाघ को घर के अंदर देख पूरे गांव में दहशत फैल गयी और अफरा-तफरी का माहौल बन गया। गांव के कई लोगों ने सुबह के वक्त उस जानवर को गांव की गलियों में घूमते हुए देखा था। बताया जा रहा है कि जैसे ही पुरंदर महतो बकरी लेकर घर से बाहर निकले, उसी समय बाघ अंदर घुस गया। सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची। फिर पीटीआर की टीम भी वहां पहुंची। ग्रामीणों को अनावश्यक रूप से घटनास्थल के पास जाने से रोकने के लिए प्रशासन ने घर के आसपास निषेधाज्ञा लागू कर दी। बाघ को रेस्क्यू करने में बिरसा जैविक उद्यान के कर्मियों ने भी मदद की। घटना स्थल पर रांची के डीएफओ श्रीकांत में मौजूद थे। उन्होंने बताया कि बाघ पूरी तरह सुरक्षित है। सबसे खास बात है कि रेस्क्यू करने के दौरान बाघ को बेसुध करने की भी जरूरत नहीं पड़ी। बाघ को बिरसा जैविक उद्यान में रखा जायेगा। वहां उसका हेल्थ चेकअप होगा। हेल्थ रिपोर्ट ठीक आने के बाद नेशनल टाइगर कंजर्वेशन ऑथरिटी से बात करने के बाद तय होगा कि इसको कहां शिफ्ट करना है।

बुधवार को सिल्ली प्रखंड के मारदू गांव से रॉयल बंगाल टाइगर (बाघ) को रेस्क्यू कर बिरसा जैविक उद्यान ओरमांझी ले जाती पीटीआर की टीम।

न्यूज रील्स

2026 से साल में दो बार होगी सीबीएसइ 10वीं की बोर्ड परीक्षा

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। सीबीएसइ ने 2026 से साल में दो बार कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा आयोजित करने के मानदंडों को मंजूरी दी। यह जानकारी परीक्षा नियंत्रक संयम भारद्वाज ने दी है। सीबीएसइ कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षाएं वर्ष में दो बार आयोजित करेगा। पहला चरण फरवरी में और दूसरा चरण मई में होगा। कक्षा 10 के छात्रों के लिए बोर्ड परीक्षा के पहले चरण में उपस्थित होना अनिवार्य होगा, जबकि दूसरा चरण वैकल्पिक रहेगा। आंतरिक मूल्यांकन केवल एक बार किया जायेगा। इस फैसले के बाद छात्रों को अपने अंकों में सुधार का मौका मिल पायेगा। यदि किसी छात्र के अंक पहले चरण में कम रह जाते हैं, तो वह दूसरे चरण में अच्छा प्रदर्शन करके उसे सुधार कर सकेगा। सीबीएसई ने कक्षा 10वीं के लिए वर्ष में दो बार बोर्ड परीक्षा आयोजित करने के मानदंडों को मंजूरी दे दी है।

इमरजेंसी के 50 साल : देश ने याद किया लोकतंत्र का काला दिन

कोई भी भारतीय कभी नहीं भूल सकता वह दिन : मोदी

- कांग्रेस की तत्कालीन सरकार ने लोकतंत्र को बंधक बना लिया था
- संसद की आवाज दबा दी गयी और अदालतों को बंधक बनाया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। देश में 25 जून 1975 को लगाये गये आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ पर पीएम नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर बड़ा हमला बोला। उन्होंने आपातकाल के दिनों को याद करते हुए कहा कि आज भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के सबसे काले अध्यायों में से एक आपातकाल लागू होने के 50 साल पूरे हो गये हैं। यह वो वक्त था, जब तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने लोकतंत्र को बंधक बना लिया था।

पीएम मोदी ने कहा कि कोई भी भारतीय कभी नहीं भूल सकता कि किस तरह हमारे संविधान की भावना का उल्लंघन किया गया। संसद की आवाज दबायी गयी और अदालतों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया। 42वां संशोधन उनकी हरकतों का एक प्रमुख उदाहरण है। गरीबों, हाशिये पर पड़े लोगों और दलितों को खास तौर पर निशाना बनाया गया, जिसमें उनकी गरिमा का अपमान भी शामिल है।

आपातकाल के खिलाफ लड़ने वालों को सलाम : प्रधानमंत्री ने कहा कि हम आपातकाल के खिलाफ लड़ाई में डटे रहने वाले हर व्यक्ति को सलाम करते हैं। ये लोग पूरे भारत से, हर क्षेत्र से, अलग-अलग विचारधाराओं से आये थे, जिन्होंने एक ही उद्देश्य से एक-दूसरे के साथ मिलकर काम किया। उनका लक्ष्य था भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की रक्षा करना और उन आदर्शों को बनाये रखना, जिनके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। यह उनका सामूहिक संघर्ष ही था, जिसने यह सुनिश्चित किया कि तत्कालीन कांग्रेस सरकार को लोकतंत्र बहाल करना पड़ा और नये चुनाव कराने पड़े। जिसमें वे बुरी तरह हार गये।

गरीबों और वंचितों के सपने पूरे करेंगे : प्रधानमंत्री ने लिखा कि हम अपने संविधान में निहित सिद्धांतों को मजबूत करने तथा विकसित भारत के अपने सपने को साकार करने के लिए मिल कर काम कर रहे हैं। हम प्रगति की नयी ऊंचाइयों को छुएं तथा गरीबों और वंचितों के सपनों को पूरा करेंगे।

केंद्रीय कैबिनेट ने संविधान हत्या दिवस पर रखा मौन, प्रस्ताव भी पास

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। देश में आपातकाल लगाये जाने की 50वीं बरसी के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट की बुधवार को बैठक बुलायी गयी। इसमें आपातकाल के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रस्ताव में 1975 में लगे आपातकाल को 'लोकतंत्र और संविधान की हत्या' करार दिया गया और इसकी कड़ी निंदा की गयी। प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में आपातकाल की ज्यादतियों के पीड़ितों को श्रद्धांजलि के देने के लिए दो मिनट का मौन भी रखा गया। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी समेत सभी मंत्री खड़े रहे। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट मीटिंग में पारित प्रस्तावों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि वर्ष 2025 संविधान हत्या दिवस की 50वीं वर्षगांठ है। इस मौके पर केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 1975 में लगाये गये आपातकाल की कड़ी निंदा करते हुए प्रस्ताव पास किए हैं। प्रस्ताव में कहा गया है कि आपातकाल के दौरान देशभर में लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन हुआ और आम आदमी के संवैधानिक अधिकार छीने गये थे।

युवाओं से सीख लेने का किया आह्वान

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अपने प्रस्ताव में देश के युवाओं से लेकर वरिष्ठ नागरिकों तक से लोकतंत्र के सेनानियों और उनके बलिदान से सीख लेने का आह्वान किया गया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि आपातकाल के वीर सेनानियों ने तानाशाही प्रवृतियों का विरोध किया और हमारे संविधान और लोकतांत्रिक भावनाओं की दृढ़ता से रक्षा की थी। इसमें कहा गया है कि लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण, सुरक्षा और रक्षा का मूर्तरूप है।

अंतरिक्ष में लहराया तिरंगा : 41 साल बाद भारतीय शामिल

लखनऊ के शुभांशु ने शुरू किया अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र का सफर

एजेंसी

फ्लोरिडा। भारत ने अंतरिक्ष की दुनिया में इतिहास रच दिया है। लखनऊ के रहने वाले शुभांशु शुक्ला ने बुधवार को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र (आइएसएस) की ओर उड़ान भर कर भारत की मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम में 41 साल बाद वापसी करायी। वह अमेरिका की प्राइवेट कंपनी एक्सिओम मिशन के तहत अंतरिक्ष में गये हैं। इस मिशन में भारत के अलावा हंगरी और पोलैंड के अंतरिक्ष यात्री भी शामिल हैं। स्पेसएक्स के फाल्कन-9 रॉकेट ने बुधवार दोपहर 12 बजकर 01 मिनट पर फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर से उड़ान भरी। रॉकेट ने जैसे ही अंतरिक्ष में प्रवेश किया, भारत समेत दुनिया भर में इस ऐतिहासिक पल का जश्न शुरू हो गया। लखनऊ में शुभांशु शुक्ला के माता-पिता और सिटी मांटेसरी स्कूल के छात्रों ने भी लाइव लांच देखा और गर्व महसूस किया।

41 साल बाद रचा इतिहास : लांच के 10 मिनट बाद ही रॉकेट ने पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश कर लिया। इस दौरान शुभांशु शुक्ला ने उत्साह में कहा: कमाल की राइड थी। यह सुनते ही देशवासियों के चेहरे खिल उठे। उनका यह सफर भारत की अंतरिक्ष उड़ान में एक नया अध्याय है, जो राकेश शर्मा की 1984 में हुई ऐतिहासिक उड़ान के 41 साल बाद संभव हुआ है।

साथ मौजूद हैं ये अंतरिक्ष यात्री : एक्सिओम मिशन में शुभांशु शुक्ला के साथ अमेरिका की अनुभवी अंतरिक्ष यात्री पैगी व्हिटसन, पोलैंड के स्लावोस उजनांस्की-विस्निएव्स्की और हंगरी के टिबोर कपू शामिल हैं।

नये स्पेसक्राफ्ट का नाम ग्रेस : अंतरिक्ष में पहुंचते ही चारों अंतरिक्ष यात्रियों ने अपने नये स्पेसक्राफ्ट का नाम 'ग्रेस' रखा। स्पेसएक्स ने उन्हें शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जो अच्छा है, उसके लिए इंतजार करना पड़ता है। 'ग्रेस' के पहले क्रू को शुभकामनाएं। अंतरिक्ष यात्री अब 14 दिन तक आइएसएस पर रहेंगे और इस दौरान 60 वैज्ञानिक प्रयोग करेंगे।

चावल और आम भी पहुंचे अंतरिक्ष

खास बात यह है कि इस मिशन में वैज्ञानिक प्रयोगों के अलावा अंतरिक्ष यात्री अपने-अपने देश की सांस्कृतिक झलक भी लेकर गये हैं। शुभांशु शुक्ला भारतीय करी, चावल और आम का रस लेकर गये हैं, जबकि हंगरी से स्पाइसी पपरिका पेस्ट और पोलैंड से फ्रीज-फ्राइड पिरोगीज अंतरिक्ष में भेजे गये हैं। यह मिशन केवल वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का भी प्रतीक है।

मेरी नहीं, भारत की यात्रा: शुभांशु

पृथ्वी की कक्षा में पहुंचने के बाद शुभांशु शुक्ला ने हिंदी में देशवासियों को संबोधित करते हुए कहा: नमस्कार मेरे प्यारे देशवासियों, 41 साल बाद हम अंतरिक्ष में पहुंचे हैं। मेरी कंधों पर तिरंगा है, जो मुझे यह एहसास दिलाता है कि मैं अकेला नहीं, 140 करोड़ भारतीयों के साथ हूं। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ मेरी अंतरिक्ष यात्रा नहीं है, बल्कि भारत की मानव अंतरिक्ष यात्रा की शुरुआत है। शुभांशु शुक्ला ने अंतरिक्ष यात्रा से पहले कहा था कि वह भारत के युवाओं में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा जगाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मैं अंतरिक्ष जा रहा हूं, लेकिन यह 140 करोड़ भारतीयों की यात्रा है।

केंद्रीय कैबिनेट ने किया स्वागत

केंद्रीय कैबिनेट ने भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला और तीन अन्य लोगों के साथ अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए उनके एक्सिओम-4 मिशन के सफल प्रक्षेपण का स्वागत किया है। कैबिनेट द्वारा पारित प्रस्ताव में कहा गया, हम भारत, हंगरी, पोलैंड और अमेरिका के अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर अंतरिक्ष मिशन के सफल प्रक्षेपण का स्वागत करते हैं।

गोलीकांड के विरोध में बंद रहा हजारीबाग का कारोबार

- व्यवसायियों ने जुलूस निकाल कर सुरक्षा बढ़ाने की मांग की

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। रविवार को शहर के श्री ज्वेलर्स के बाहर हुई फायरिंग और उत्तम यादव नामक व्यक्ति द्वारा घटना की जिम्मेवारी लेने के विरोध में हजारीबाग स्वर्णकार व्यवसायी संघ और फेडरेशन ऑफ हजारीबाग चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के आह्वान पर बुधवार को शहर का कारोबार बंद रहा। बड़े प्रतिष्ठान और दुकानें बंद रहीं। व्यवसायी संघ के लोगों ने जुलूस निकाला और दुकानों को बंद कराया। व्यापारियों ने प्रशासन से सुरक्षा बढ़ाने की मांग की। उन्होंने कहा कि शहर में अपराधियों के हौसले लगातार बढ़ रहे हैं। कभी चोरी, कभी फायरिंग आम बात हो गयी है। जान-माल खतरे में है। अगर सुरक्षा नहीं मिली, तो हम बड़े आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। व्यापारियों का कहना था कि बार-बार शिकायत के बावजूद प्रशासन द्वारा ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा। पुलिस को अपराधियों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई करनी चाहिए। व्यापारियों ने प्रशासन से सुरक्षा की गारंटी, अपराधियों की तत्काल गिरफ्तारी और शहर में पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ाने की मांग की है। व्यापार संघ ने उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन भी सौंपा। ज्ञापन की प्रति मुख्यमंत्री, देश के गृह मंत्री और प्रधानमंत्री कार्यालय को भी भेजी गयी है। इसमें चार मांगें रखी गयी हैं, जिसमें घटना की निष्पक्ष एवं त्वरित जांच, दोषियों की शीघ्र गिरफ्तारी, व्यापारिक क्षेत्रों में पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ाने और ज्वेलर्स और अन्य संवेदनशील दुकानों के लिए सुरक्षा प्रदान करने की मांग शामिल है।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 26 जून, 2025
www.azadsipahi.in

इमरजेंसी के 50 साल: सत्ता के मद में कुचल दिया गया था लोकतंत्र

■ इंदिरा गांधी की कांग्रेस सरकार ने भारत के संविधान का गला घोंट दिया था

■ तानाशाही के उस भयानक दौर में महान भारत की आत्मा तक सिहर उठी थी

■ विरोध में उठनेवाले हर स्वर को सत्ता की ताकत के सहारे कुचल दिया गया था

■ आधी रात को छीन लिये गये थे आम भारतीय को दिये गये मौलिक अधिकार

किसी भी देश-समाज के लिए तारीखों का बड़ा महत्व होता है। जहां तक भारत की बात है, तो इसके लिए कई तारीखें महत्वपूर्ण हैं, लेकिन 26 जून, 1975 एक ऐसी तारीख है, जिसे भारत के 140 करोड़ लोग भूल जाना चाहते हैं, पर इसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस तारीख को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के संविधान की हत्या करने के दिन के रूप में याद किया जाता है। आज से 50 साल पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश की लोकतांत्रिक संरचना को सत्ता के मद में इतनी बुरी तरह निचोड़ दिया था कि उसका दर्द आज तक रह-रह कर उभर आता है। जिस भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का अभिमान था, उसकी आत्मा को सत्ताधारी दल कांग्रेस ने पिंजरे में कैद ही नहीं कर दिया था, बल्कि अपने विरोध में उठनेवाली हर आवाज को जबरन बंद कर दिया था। नागरिकों के लोकतांत्रिक अधिकारों को सत्ता के बूटों तले रौंद दिया गया था। अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार को जब्त कर लिया गया था। वह ऐसा दौर था, जिसमें एकबारगी ऐसा लगने लगा था कि भारत अब दोबारा कभी अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकेगा और न खुली हवा में सांस ले सकेगा। भारतीय लोकतंत्र पर यह सबसे बड़ा आघात था और 26 जून की तारीख को इसीलिए हमेशा याद रखने की जरूरत है। इमरजेंसी के उस काले दिन के 50 साल पूरा होने के मौके पर इसके तमाम पहलुओं के बारे में बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।

आजाद सिपाही विशेष

राकेश सिंह

50 वर्ष पहले 25 जून 1975 की आधी रात को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भारतीय संविधान की धारा 352 के अधीन देश में आपातकाल की घोषणा कर दी। पूरा देश इस फैसले से भौंचक रह गया। 26 जून, 1975 को सुबह रेडियो पर इमरजेंसी का एलान हुआ था। इस एलान से कुछ घंटे पहले आधी रात के आसपास तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में अपने खिलाफ बढ़ती नाराजगी को दबाने के लिए देश को इमरजेंसी की आग में झोंक दिया था। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में इस दिन को देश के सबसे दुर्भाग्यपूर्ण दिन की संज्ञा दी जाती है। 50 साल पहले आज के ही दिन देश के लोगों ने रेडियो पर वह एलान सुना और देश में जंगल की आग की तरह खबर फैल गयी कि सारे भारत में अब आपातकाल की घोषणा कर दी गयी है। 50 साल के बाद भले ही देश के लोकतंत्र की एक गरिमामयी तस्वीर सारी दुनिया में प्रशस्त हो रही हो, लेकिन आज भी अतीत में 26 जून का दिन लोकतंत्र के एक काले अध्याय के रूप में दर्ज है। भारतीय इतिहास में लोकतंत्र के लिए वह काला दिन था। आपातकाल मार्च 1977 तक चला। इस दौरान भारत में लोकतंत्र लगभग खत्म कर दिया गया और एक तानाशाही शासन की शुरुआत इस दौरान नागरिक अधिकारों का बड़े पैमाने पर हनन हुआ था। इंदिरा गांधी की सरकार ने अपने राजनीतिक विरोधियों को जेल में डाल दिया, मीडिया की आजादी छीन ली, लोगों के मौलिक अधिकारों को रौंदा, मानवाधिकारों का उल्लंघन किया और आम नागरिकों को बेरहमी से प्रताड़ित किया गया और हत्या तक की गयी। इस दौर में संविधान को भी कमजोर किया गया। हालांकि, आपातकाल का हर पहलू चौंकाने वाला था, लेकिन खासकर छात्रों पर किये गये अत्याचार बेहद निंदनीय थे। सब कुछ सिर्फ एक परिवार की तानाशाही को बरकरार रखने के लिए। पहली बार ऐसा मौका था जब देश में अनुच्छेद 352 के तहत आपातकाल की घोषणा की गयी थी। लोगों को आपातकाल के मतलब भी नहीं पता था। आपातकाल की घोषणा के साथ ही आम जनता के सभी मौलिक अधिकार छीन लिये गये थे। किसी तरह की अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार ही नहीं, लोगों के पास जीवन का अधिकार भी नहीं रह गया था। आम जनता, मीडिया समूह, रेडियो, और अन्य प्रचार के माध्यमों पर पूरी पाबंदी लगा दी गयी थी। आपातकाल की घोषणा के कुछ घंटे के भीतर की प्रमुख समाचार पत्रों के कार्यालयों में बिजली की आपूर्ति काट दी गयी थी।

आपातकाल की सूचना के बाद से ही देश में ढूंढ़-ढूंढ़ कर विपक्ष के नेताओं की गिरफ्तारियों का दौर शुरू हो गया था। तत्कालीन समय के बड़े नेता जयप्रकाश नारायण, लालकृष्ण आडवाणी, अटल बिहारी वाजपेयी, जॉर्ज फर्नांडिस को जेल में डाल दिया गया। विपक्षी नेताओं के साथ साथ समाज में प्रभाव रखने वाले कांग्रेस के विपरीत विचारधारा वाले सभी लोगों और आम जनता में बेगुनाहों को भी जेल में भर दिया गया था, जेलों में जगह नहीं बची थी। करीब 1.40 लाख लोगों आपातकाल में बिना किसी सुनवाई के राजनीतिक बंदी बनाया गया। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आपातकाल के दौरान पूरे देश का नियंत्रण गांधी-नेहरू परिवार के हाथ में था। कांग्रेस ने आपातकाल की आड़ में वो सभी काम किये, जो ना सिर्फ राजनीतिक लिहाज से अशोभनीय थे, बल्कि अमानवीय भी थे। प्रेस में सरकार या आपातकाल की आलोचना करना अपराध की श्रेणी में आ चुका था। प्रेस-मीडिया पर भी सेंसरशिप लगा दी गयी थी। हर अखबार में सेंसर अधिकारी तैनात किया गया था। हालात यह थे कि कांग्रेस समर्थित उस अधिकारी के अनुमति के बाद ही कोई समाचार छप सकता था। सरकार विरोधी समाचार छापने पर बिना किसी सुनवाई के गिरफ्तारी हो रही थी।

यही नहीं, कांग्रेस का विरोध करने वाले 26 संगठनों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। 4 जुलाई 1975 को राष्ट्रीय विचार और भारतीयता के लिए काम करने वाले संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। आपातकाल के मुखर आलोचक रहे फिल्मी कलाकारों को भी इसका दंश झेलना पड़ा। किशोर कुमार के गानों को रेडियो और दूरदर्शन पर बजाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। देव आनंद को भी अनौपचारिक प्रतिबंध का सामना करना पड़ा था। देश में आपातकाल लागू होने के बाद कई त्रासद घटनाएं हुईं। दिल्ली का तुर्कमान गेट कांड भी इनमें एक था। मुस्लिम बहुल उस इलाके को संजय गांधी ने दिल्ली के सौंदर्यीकरण के नाम पर खाली करा दिया। यह काम लोगों की सहमति से नहीं, बल्कि जबरन किया गया गया। बुल्डोजर से लोगों के घर ढहाये गये। जिन्होंने विरोध किया, उन्हें जेलों में ठूंस दिया गया। विरोध के दौरान पुलिस ने लाठियां बरसायीं और आंसू गैस के गोले छोड़े। पुलिस ने गोलियां भी चलायीं। चार लोगों की जान चली गयी। संजय गांधी की सनक के चलते सड़क से भिखारियों, झोपड़पट्टी के लोगों और राहगीरों को पकड़ कर जबरन नसबंदी के टारगेट पूरे किये जाने लगे। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में 18 अक्टूबर 1976 को नसबंदी अभियान का विरोध कर रहे आंदोलनकारियों पर पुलिस ने सीधी फायरिंग कर दी थी, जिसमें 42 बेगुनाहों की मौत हो गयी थी। मृतकों की स्मृति में यहां शहीद चौक बना हुआ है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इमरजेंसी के दौरान देशभर में 1.10 करोड़ से ज्यादा लोगों की नसबंदी कर दी गयी थी। 21 महीने के बाद जयप्रकाश का आंदोलन निर्णायक मुकाम तक जा पहुंचा। इंदिरा गांधी को सिंहासन छोड़ना पड़ा। मोरारजी देसाई की सरकार ने 28 मई 1977 में आपातकाल के दौरान हुए ज्यादतियों को जानने के लिए जस्टिस जे सी शाह की अध्यक्षता में शाह कमीशन गठित किया। शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया था कि जिस वक्त आपातकाल की घोषणा की गयी, उस वक्त ना देश में आर्थिक हालात खराब थे और ना ही कानून व्यवस्था में किसी तरह की कोई अड़चन थी। इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल अपनी इच्छा के अनुसार लगाया था और इस संबंध में उन्होंने अपने पार्टी के कुछ लोगों को छोड़कर किसी भी सहयोगी से कोई विमर्श नहीं किया था।

आपातकाल में गिरफ्तार किये गये अधिकतर सम्मानित और बुजुर्ग नेताओं को चिकित्सा सुविधा की आवश्यकता थी, जो उन्हें अस्पताल में उपलब्ध नहीं करायी गयी। इंदिरा गांधी की तानाशाही का एक नमूना इस बात से भी पता चलता है कि शाह आयोग ने नसबंदी कार्यक्रम पर सरकार के रवैये की बेहद आलोचना की थी। आयोग ने कहा था कि पटरी पर रहने वाले और भिखारियों की जबरदस्ती नसबंदी की गयी। इसके साथ-ऑटो रिक्शा चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस के नवीनीकरण के लिए नसबंदी सर्टिफिकेट दिखाना अनिवार्य कर दिया गया था। आयोग ने यह स्पष्ट रूप से माना था कि सरकारी तंत्र का उपयोग कर कुछ लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए इस पूरे आपातकाल का इस्तेमाल किया गया।

जनवरी 2011 में सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान यह स्वीकार किया कि वर्ष 1975 में आपातकाल के समय नागरिकों के मौलिक अधिकारों का हनन हुआ था। तत्कालीन अटॉर्नी जनरल नीरेन डे ने तब सुप्रीम कोर्ट में यह कबूल किया था कि जीने का अधिकार स्थगित है। आपातकाल के दौरान प्रेस की स्थिति को लेकर एक श्वेत पत्र एक अगस्त 1977 में संसद में पेश किया गया। 87 पेज के श्वेत पत्र से यह स्पष्ट हुआ कि तानाशाही की इच्छा रखने वाली इंदिरा गांधी ने अपनी अध्यक्षता में तय किया था कि प्रेस काउंसिल को भंग कर दिया जाये और तत्कालीन चारों समाचार एजेंसियों को मिलाकर एक कर दिया जाये, जिससे उन्हें सेंसर करने और संभालने में आसानी होगी।

राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी के जो नेता पिछले कुछ समय अक्सर लोकतंत्र बचाने की बात कर रहे हैं। संसद से सड़क तक वे संविधान की किताब लेकर घूमते हैं, उन्हें याद दिलाना जरूरी है कि उनकी पार्टी के नेता ने दादागिरी करके इस देश पर 21 महीने आपातकाल लगाकर लोगों को जेल में ठूंस दिया था। असल में, 1975 में लगाया हुआ आपातकाल इंदिरा गांधी की गलती नहीं थी, बल्कि इंदिरा गांधी का अहंकार था। दिसंबर 2024 को सदन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आपातकाल का उल्लेख किया और कहा, दुनिया में जब भी लोकतंत्र की चर्चा होगी तो कांग्रेस के माथे से कभी यह कलंक मिट नहीं सकेगा क्योंकि लोकतंत्र का गला घोंट दिया गया था। भारतीय संविधान निर्माताओं की तपस्या को मिट्टी में मिलाने की कोशिश की गयी थी।

इमरजेंसी के एलान से 13 दिन पहले इलाहाबाद में पड़ी इसकी नींव

तारीख 12 जून 1975। जगह, इलाहाबाद हाइकोर्ट परिसर। पूरे देश की नजरें यहां के जस्टिस जगमोहन लाल सिन्हा पर टिकी थीं। जस्टिस सिन्हा इंदिरा गांधी बनाम राजनारायण मामले में अपना फैसला सुनाने वाले थे। यह मामला साल 1971 के चुनावों से जुड़ा था। इस चुनाव में इंदिरा गांधी ने रायबरेली से राजनारायण को हराया था। हारने के बाद राजनारायण ने चुनावी नतीजों को कोर्ट में चुनौती दी थी। उन्होंने इंदिरा गांधी पर सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग, चुनाव में घोटाले और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया था और मांग की थी कि यह चुनाव रद्द किया जाये। 12 जून की सुबह करीब 10 बजे जस्टिस सिन्हा अपने चैंबर से कोर्ट रूम में आये और अपना फैसला सुनाने लगे। फैसले में उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को चुनाव में धांधली का दोषी करार दिया और चुनाव रद्द कर दिया। साथ ही जस्टिस सिन्हा ने यह भी कहा कि आने वाले छह सालों तक इंदिरा चुनाव नहीं लड़ सकेंगी। ऐसा पहली बार हुआ था कि भारत के प्रधानमंत्री का चुनाव ही रद्द कर दिया गया। इंदिरा गांधी किसी भी कीमत पर प्रधानमंत्री की कुर्सी छोड़ने को तैयार नहीं थी। उन्होंने हाइकोर्ट के इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने का फैसला किया। 23 जून को इंदिरा गांधी ने सुप्रीम कोर्ट में इस फैसले को रोकने के लिए याचिका दायर की। अगले ही दिन जस्टिस वीआर कृष्णा अय्यर ने याचिका पर सुनवाई करते हुए फैसला सुनाया। उन्होंने कहा कि वह हाइकोर्ट के फैसले पर पूरी तरह रोक नहीं लगायेंगे, लेकिन इंदिरा प्रधानमंत्री पद पर बनी रह सकती हैं। साथ ही यह भी कहा कि इस दौरान वह संसद की कार्यवाही में भाग तो ले सकती हैं, लेकिन वोट नहीं कर सकेंगी। सुप्रीम कोर्ट ने इंदिरा को थोड़ी राहत जरूर दी, लेकिन इंदिरा के लिए यह काफी नहीं था। इंदिरा गांधी के पास यह विकल्प था कि वह किसी और को प्रधानमंत्री बना सकती थीं, लेकिन कहा जाता है कि संजय गांधी इस बात के लिए राजी नहीं थे।

एक तरफ इंदिरा गांधी को कोर्ट से राहत नहीं मिली थी, दूसरी तरफ लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में पूरा विपक्ष सड़कों पर उतर कर इंदिरा के इस्तीफे की मांग कर रहा था। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद तो विपक्ष और आक्रामक हो गया था। 24 जून को फैसला आया और 25 जून को जयप्रकाश नारायण ने दिल्ली के रामलीला मैदान में एक रैली का आयोजन किया। इस रैली में लाखों की तादाद में भीड़ जुटी, जिसे संबोधित करते हुए जयप्रकाश नारायण (जेपी) ने रामधारी सिंह दिनकर की कविता का अंश पढ़ते हुए कहा, सिंहासन खाली करो कि जनता आती है। जेपी ने इंदिरा गांधी को स्वार्थी और महात्मा गांधी के आदर्शों से भटका हुआ बताते हुए उनसे इस्तीफे की मांग की। इंदिरा गांधी अब चौतरफा घिर चुकी थीं। इधर जेपी की रैली खत्म हुई और उधर इंदिरा गांधी राष्ट्रपति भवन पहुंचीं। 25-26 जून की दरम्यानी रात को तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी के आदेश पर दस्तखत करा लिये। 26 जून सुबह छह बजे कैबिनेट की आपातकालीन बैठक बुलायी गयी। अभी तक देश को इस फैसले की भनक तक नहीं थी। इंदिरा गांधी ने यह फैसला लेने से पहले अपने मंत्रिमंडल से सलाह तक नहीं ली थी। करीब आधे घंटे चली कैबिनेट बैठक के बाद इंदिरा गांधी ने आकाशवाणी पर देश में इमरजेंसी लगाने की घोषणा की। इसके साथ ही आजाद भारत के इतिहास के सबसे बुरे दौर की शुरुआत हो गयी। विपक्षी नेताओं समेत कांग्रेस के नेताओं को भी जेल में डाल दिया गया, प्रेस पर पाबंदी लगा दी गयी, नागरिकों के सारे अधिकार छीन लिये गये और देश में लोकतंत्र खत्म हो गया। अगले दिन देश में अखबार नहीं छप पाये, क्योंकि सरकार ने अखबार के दफ्तरों की बिजली काट दी थी। जो अखबार छप रहे थे, उन पर सख्त पाबंदिया लगायी गयीं। अखबारों में क्या छपेगा क्या नहीं, इसके लिए सरकार ने अखबारों के दफ्तर में अफसरों को तैनात कर दिया। इमरजेंसी के दौरान इंदिरा के छोटे बेटे संजय गांधी ने नसबंदी प्रोग्राम चलाया, जिसमें पकड़-पकड़ कर लोगों की नसबंदी की गयी। लाखों लोगों को जेल में डाल दिया गया। पूरा देश एक बड़ी जेल बन गया। इस दौरान इंदिरा गांधी ने नये-नये कानून लाकर संविधान को कमजोर करने की कोशिश भी की। इस भयंकर त्रासदी को पूरा देश 21 महीनों तक झेलता रहा। जनवरी 1977 में घोषणा की गयी कि 16 मार्च को देश में चुनाव होंगे। देश में चुनाव हुए और इंदिरा गांधी को जनता ने इमरजेंसी का सबक सिखा दिया। इंदिरा और संजय गांधी दोनों चुनाव हार गये। इसके बाद 21 मार्च 1977 को आपातकाल खत्म हो गया, लेकिन यह देश का सबसे काला वक्त साबित हुआ, जिसका दर्द लोगों के दिलों में आज भी जिंदा है।

कोयलांचल विवि में हो जनजातीय भाषा की पढ़ाई : डॉ लंबोदर महतो

पूर्व विधायक ने राज्यपाल को लिखा पत्र, कुरमाली, संथाली खोरठा जैसी जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा की पढ़ाई शुरू कराने के लिए पहल करने की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

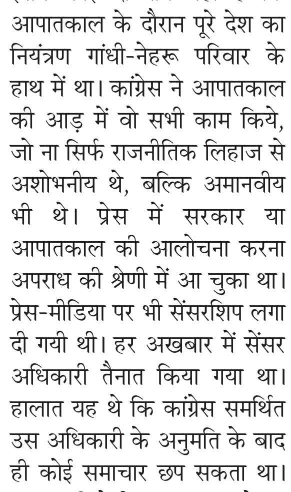

रांची। पूर्व विधायक डॉ लंबोदर महतो ने राज्यपाल सह कुलाधिपति संतोष कुमार गंगवार से बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर झारखंड की क्षेत्रीय और जनजातीय भाषा यथा कुरमाली, संथाली एवं खोरठा की पढ़ाई शुरू करने की मांग की है। उन्होंने राज्यपाल को इस बात से अवगत कराया है कि इस विश्वविद्यालय के 2017 में स्थापना के बाद अब तक कुरमाली, संथाली खोरठा जैसी जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा की पढ़ाई यहां के अंगीभूत महाविद्यालयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक आरंभ नहीं की गयी है सिर्फ कुछ संबद्ध (एफिलिएटेड) महाविद्यालय में इसकी पढ़ाई की सामान्य व्यवस्था है। दूसरी तरफ स्नातकोतर पर टीआरएल का विभाग तक खोला नहीं गया है। इस कारण यहां के बहुत से छात्र- छात्राएं एवं शोधार्थी स्नातकोत्तर की पढ़ाई आरंभ नहीं होने से परेशान है, मायूस है और भटक रहे हैं। विशेष कर यहां की छात्राओं को इन भाषाओं की पढ़ाई छोड़ने को विवश होना पड़ रहा है। उन्होंने राज्यपाल को लिखे अपने पत्र में इस बात की ओर उनका ध्यान आकृष्ट कराया है कि राज्य के रांची विश्वविद्यालय, कोल्हान विश्वविद्यालय, नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय आदि में क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषा की पढ़ाई स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक हो रही है पर बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय इन भाषाओं के अध्ययन अध्यापन से दूर है। उन्होंने कहा है कि बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय की ओर से पूर्व में इसके लिए शिक्षा निदेशालय को सूचित किया जा चुका है साथ ही जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं की अध्यापन व्यवस्था शुरू करने एवं सुचारु रूप से संबंधित विषय में आवश्यकता अनुसार पद सृजित करते हुए पढ़ाई आरंभ करने के नियमित निवेदन किया जा चुका है किंतु अब तक इस आशय का कोई आदेश विश्वविद्यालय को प्राप्त नहीं हुआ है।

रांची विवि में नामांकन के लिए अब 29 जुलाई तक करें आवेदन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। शैक्षणिक सत्र 2025-28 के लिए रांची विश्वविद्यालय में स्नातर पाठ्यकर्मों में दाखिले की प्रक्रिया जारी है। छात्रों की संख्या को देखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन ने चांसलर पोर्टल को 29 जुलाई 2025 तक के लिए फिर से खोलने का निर्णय लिया है, ताकि जो छात्र अब तक आवेदन नहीं कर पाये हैं, वे आवेदन कर सकें।

इस बार विश्वविद्यालय के पास कुल 70,000 सीटें उपलब्ध हैं, जिनमें से 43,000 से अधिक पर पहले ही आवेदन आ चुके हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन का कहना है कि सीटों की भरपूर उपलब्धता है और योग्य छात्रों को दाखिले के लिए पूरा मौका दिया जा रहा है।

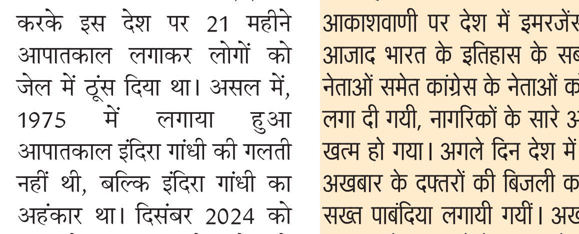

बिहार, बंगाल, ओड़िशा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों के छात्र भी बड़ी संख्या में आवेदन कर रहे हैं। विश्वविद्यालय की डीन स्टूडेंट वेलफेयर प्रोफेसर सुदेश कुमार साहू ने बताया कि 'चांसलर पोर्टल के माध्यम से दूसरे राज्यों से भी ऑनलाइन आवेदन आ रहे हैं और सभी का मूल्यांकन मेरिट के आधार पर किया जा रहा है।' उन्होंने यह भी बताया कि विश्वविद्यालय से जुड़े कॉलेजों में दाखिले की प्रक्रिया तेजी से चल रही है और जल्द ही पहली मेरिट लिस्ट जारी की जायेगी।

ये हैं जरूरी तारीखें

आवेदन की अंतिम तिथि- 29 जुलाई 2025
पहली मेरिट लिस्ट जारी होने की तिथि- 3 जुलाई 2025
दस्तावेजों की जांच और दाखिला- 4 जुलाई से 12 जुलाई तक।

अगर इसके बाद भी कुछ सीटें खाली रह जाती हैं तो चांसलर पोर्टल को फिर से खोला जा सकता है। रांची विश्वविद्यालय के कॉलेजों के साथ-साथ इसके स्नातक और स्नातकोत्तर विभागों में भी नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। छात्र ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं और तय समय पर मेरिट लिस्ट जारी की जायेगी। प्रो साहू ने कहा, जो छात्र किसी कारणवश अब तक आवेदन नहीं कर सके थे, उनके लिए यह अच्छा अवसर है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि कोई भी छात्र मौका चूक न जाये।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	26.8 °c	23.0 °c
सूर्यास्त (आज)	:	18.38 बजे
सूर्योदय (कल)	:	05.04 बजे

कभी नोटबंदी तो कभी कोरोना की बात पर आपातकाल लागू किया गया : सुप्रियो

विपक्षी दलों के शासित राज्यों को लेकर केंद्र का नजरिया सही नहीं

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने देश में वर्ष 1975 में कांग्रेस सरकार की ओर से लगाये गये आपातकाल पर कहा कि 25 जून 1975 को देश में आपातकाल लगा था, लेकिन इस बात को समझना होगा कि उस दौर में क्या परिस्थितियां रही होंगी कि सरकार को इतना बड़ा निर्णय लेना पड़ा था। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में सब कुछ जानते हुए कभी नोटबंदी तो कभी कोरोनाकाल की बात पर लोगों को जिस तरह जबरन अघोषित आपातकाल में धकेला जाता है यह जग जाहिर है।

भट्टाचार्य बुधवार को पार्टी के हरमू स्थित कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों के शासित राज्यों को लेकर केंद्र सरकार का नजरिया सही नहीं है। भट्टाचार्य ने कहा कि अपना हक और अधिकार मांगने पर या केंद्र के किसी नीति का विरोध करने पर इडी, सीबीआइ, आइटी जैसी जांच एजेंसियों को लगा दिया जाता है। झारखंड इसका भुक्तभोगी रहा है। उन्होंने कहा कि बिना विवेचना के लोगों को बंदी बना लिया जाता है। केंद्र का मकसद सिर्फ लोगों की आवाजों को बंद कर अपना इवेंट करना होता है। भट्टाचार्य ने कहा कि यह देश लोकतंत्र, संविधान, बाबा, अंबेडकर, बुद्ध, कबीर, गुरु नानक जैसे महान व्यक्तियों के साथ चलेगा न कि गलत लोगों के साथ।

केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने केन्या में प्रवासी भारतीयों के साथ संवाद किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने केन्या प्रवास के दौरान नैरोबी में प्रवासी भारतीयों के साथ संवाद किया। उन्होंने प्रवासी भारतीयों के साथ भारत के विकास और उपलब्धियों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संदेश को साझा किया। संजय सेठ ने प्रवासी भारतीयों को भारत की परिवर्तनकारी विकास यात्रा और उपलब्धियों से अवगत कराया। उन्होंने भारत की मजबूत आर्थिक वृद्धि और इसके उभरते वैश्विक नेतृत्व पर प्रकाश डाला।

संजय सेठ ने उन्हें आतंकवाद को लेकर भारत की जीरो टॉलरेंस की नीति से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि विकसित भारत 2047 सिर्फ भारत का नहीं, बल्कि दुनियाभर में रह रहे हर भारतीय का संकल्प है। इस अवसर पर केन्या में भारत के कार्यवाहक उच्चायुक्त सुशील प्रसाद, उच्चायोग के अधिकारी, केन्या में प्रतिष्ठित भारतीय संगठनों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

झारखंड में नीली क्रांति को साकार करेगी सरकार : शिल्पी नेहा तिर्की

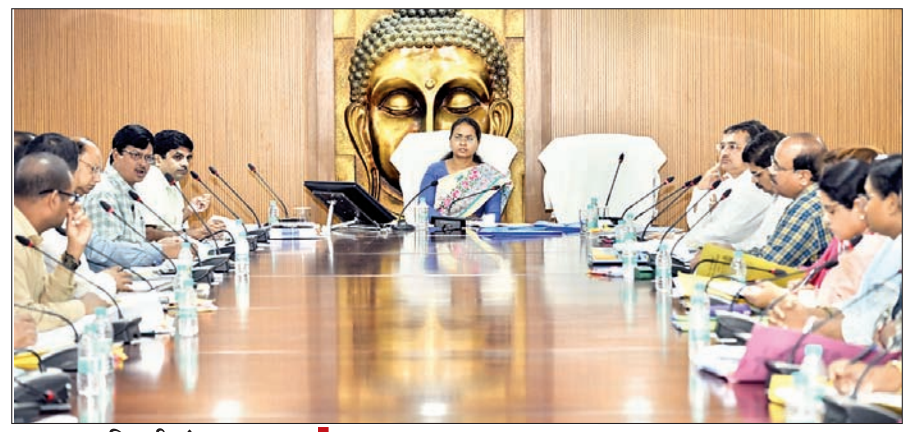

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड सरकार मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के साथ नीली क्रांति को साकार करने के लिए वृहद कार्य योजना तैयार करेगी। कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने मत्स्य विभाग की बैठक में अधिकारियों को मत्स्य बीज और फीड को बढ़ावा देने पर जोर देने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि राज्य के हर एक जिले में मत्स्य विभाग फीड मिल की स्थापना का प्रस्ताव तैयार करेगा। अधिकारियों को विभाग की योजनाओं की चर्चा स्थानीय विधायक और मुखिया से करने और उनकी सलाह को प्राथमिकता में रखने का निर्देश दिया।

झारखंड में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने की समीक्षा बैठक

उन्होंने कहा कि योजना का लाभ हर बार किसी एक लाभुक के बजाये नये लाभुकों को देने का प्रयास करना चाहिए। पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने लंबी लकीर खींचने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

तालाबों का जीर्णोद्धार: मिट्टी और गाद से भरे तालाबों की सूची जिला स्तर पर तैयार करने का निर्देश दिया गया और विभाग के स्तर पर इसका जीर्णोद्धार किया जायेगा।

फीड मिल स्थापना: राज्य के सभी जिलों में फीड मिल स्थापना का प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश दिया गया और पहले से संचालित फीड मिल को अपग्रेड करने के लिए एक कमेटी का गठन करने को कहा गया।

अधिकारियों को निर्देश: अधिकारियों को निदेशालय के बजाय जिला भ्रमण पर जाने को कहा गया और कलस्टर बना कर काम करने की सलाह दी गयी। बैठक में मत्स्य निदेशक एचएन द्विवेदी, विशेष सचिव प्रदीप हजारी, विभाग के उपनिदेशक, प्रमंडलीय प्रभारी, जिला मत्स्य पदाधिकारी मौजूद थे।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष नौकरी में उच्चाधिकारियों से सहयोग से नये पद-अधिकार प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगी।

वृष बनते कार्य में रुकावटे खड़ी होगी। व्यवहार दक्षता अधिक रखनी होगी। आपकी लापरवाही का दूसरे फायदा उठायेंगे।

मिथुन व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगा। कामकाज अच्छा चलेगा.आमदनी बढ़ेगी, कर्ज की स्थिति में सुधार होगा।

कर्क मानसिक चिंता रहेगी। भाई-बहनों अथवा मित्रों वर्ग से कष्ट होगा, लिखा-पढ़ी के काम में विशेष सावधानी रखें।

सिंह अपने सोचे अनुसार काम कम होंगे। नौकरी में स्थानातंरण अथवा अधिकारियों के साथ मतभेद होने की संभावना।

कन्या आपको आकस्मिक धन लाभ होने की संभावना, रोजगार-व्यापार के कार्य तेजी से चलेगा और आपकी प्रगति होगी।

तुला आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, आपका काम बनेगा। किसी काम से आपको पैसा मिलेगा, आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

वृश्चिक लेखन-पठन-पाठन में रूचि कम होगी घर में बड़े लोगों का समागम होगा, भूमि-भवन-वाहन सुख की अनुकूलता रहेगी।

धनु रोजी-रोजगार में सफलता, यशस्वी कार्य करने का अवसर मिलेगा, अभी तक जो कोई इच्छा अधूरी रही हो।

मकर अपने क्षेत्र के प्रमुख व्यापारियों अधिकारियों एवं उच्चस्तरीय लोगों से आप सम्बन्ध बनाने की चेष्टा करें ।

कुंभ आवश्यक कामों में व्यवहार कुशलता सिद्धि और प्रसिद्धि देने वाली है, आवश्यक कार्यों में सूझबूझ प्रशंसनीय होगी।

मीन मानसिक उलझनें होगी, आपने जिस पर भी आज तक भरोसा किया होगा या स्वयं कष्ट उठाकर उसको सुख दिया होगा।

रांची दंगा के आरोपी महबूब आलम को अग्रिम जमानत देने से हाइकोर्ट का इनकार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। साल 2022 में रांची के मेन रोड में हुए दंगा मामले के आरोपित महबूब आलम को झारखंड हाइकोर्ट ने अग्रिम जमानत देने से इनकार कर दिया है। बुधवार को सुनवाई के पश्चात न्यायाधीश आनंद सेन की अदालत ने महबूब आलम की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज कर दिया। 10 जून 2022 को जुमे की नमाज के बाद रांची के मेन रोड इलाके में उपद्रव, पत्थरबाजी और गोलीबारी की घटना हुई थी। इस घटना के बाद डेली मार्केट थाना में बड़ी संख्या में लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। मामले में कई लोगों को आरोपित बनाया गया है। महबूब आलम को भी इसी मामले में आरोपित बनाया गया है, जिसको लेकर आलम ने अग्रिम जमानत की मांग की थी लेकिन हाइकोर्ट ने याचिका पर सुनवाई के बाद उसे खारिज कर दिया।

प्रखंड स्तरीय 64वीं सुब्रत राय फुटबॉल प्रतियोगिता 2025 का हुआ आयोजन

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। संवाददाता: प्रखंड संसाधन केंद्र कटकमदाग स्थित खपरियावा हाई स्कूल खेल मैदान में बड़े ही उत्साह पूर्वक आयोजित की गयी। प्रखंड विकास पदाधिकारी शिव बालक प्रसाद मुखिया राजेश गुप्ता एवं कटकमदाग के उप प्रमुख विमल प्रसाद गुप्ता के द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया सभी अतिथियों को पौधा देकर सम्मानित किया गया । 15 वर्ष से कम आयु के बालक वर्ग में प्लस टू उच्च विद्यालय खपरियावा विजेता रहा और मध्य विद्यालय झगड़बांध उपविजेता रहा तथा 17 वर्ष से कम आयु के बालक वर्ग में प्लस टू उच्च विद्यालय खपरियावा विजेता रहा और पीएम उच्च विद्यालय सालगांवा उपविजेता रहा 17 वर्ष से कम आयु के बालिका वर्ग में झारखंड आवासीय बालिका विद्यालय कटकमदाग विजेता रहा। कार्यक्रम के सफल संचालन में बीपीओ पंकज कुमार गुप्ता, बीपीएम गौतम कुमार सेन, रिसोर्स शिक्षक मोनिशा कुमारी, बीआरपी नाज परवीन, डाटा ऑपरेटर सुनील कुमार और खेल शिक्षक पवन कुमार मृत्युंजय वैष्णो अनिल कुमार और सरजू रविदास का विशेष योगदान रहा।

सर्पदंश से युवक की मौत

विष्णुगढ़ (आजाद सिपाही) । सर्पदंश से युवक की मौत हो गयी।इस सम्बंध में मिली जानकारी के अनुसार विष्णुगढ़ थाना क्षेत्र के सिरय पंचायत के कोरियाटांड़ गाव के 21 वर्षीय युवक मुकेश कुमार महतो पिता भेखलाल महतो को विषैला करैत सांप डस लिया, आनन फानन गम्भीर अवस्था मे उसे बगोदर अस्पताल ले जाय गया जहां चिकित्सकों ने गम्भीर स्थिति देखते हुए सदर अस्पताल हजारीबाग रेफर किया गया, परिजनों ने विष्णुगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले आये तब तक उसकी मौत हो गयी। मौत की खबर पाकर परिजनों में शोक की लहर दौड़ पड़ी।पूरे गांव मे लोगो की आंखे नम थी।

दो हाथियों ने सिमराढाव में दो घरों को किया क्षतिग्रस्त

टाटीझरिया (आजाद सिपाही)। टाटीझरिया प्रखंड के खैरा पंचायत अंतर्गत सिमराढाव में मंगलवार रात को दो हाथियों ने रामा मांझी एवं सावित्री देवी के घर को क्षतिग्रस्त कर दिया। हाथियों ने रामा मांझी के घर रखे चावल एक ड्राम एवं आटा को खाकर छिट दिया। रामा मांझी के तबाही करने के बाद सावित्री देवी के घर तोडकर चावल और आटा बर्बाद कर दिया। वहीं हाथियों को क्षेत्र में पुनः आने के कारण करम्बा मांझी टोला, पूतो, नारायणपुर, अमनारी,पानीमाको,बेडमका समेत अन्य गांवों के लोगों रतजग्गा कर रहा है। वहीं गांव के लोगों ने विभाग के वनपाल और वनरक्षी को इसकी सुचना दे दिया है।

हाइवा ने बाइक सवार को मारी टक्कर, महिला की मौत, पति व बच्चे घायल

बरकट्ठा (आजाद सिपाही)। गोरहर थाना क्षेत्र के धरगुली मोड़ के समीप तेज रफ्तार हाइवा ट्रक ने बाइक संख्या जेएच02बीए 3940 को पीछे से टक्कर मार दी। जिससे बाइक सवार महिला की मौत हो गयी। बाइक चालक व बच्चे घायल हो गये। इनका इलाज बरही अनुमंडलीय अस्पताल में चल रहा है। बताया गया कि गोरहर थाना क्षेत्र के धरगुली मोड़ के समीप पीछे से आ रही हाइवा वाहन संख्या एचआर61ई 8950 ने बाइक को टक्कर मार दी। जिससे एक महिला की मौके पर ही मौत हो गयी। महिला का पति व बच्चा गंभीर रूप से घायल हो गये। ग्रामीणों की मदद से इन्हें बरकट्ठा के सामुदायिक स्वास्थ्य अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद इन्हें बरही अनुमंडलीय अस्पताल रेफर कर दिया गया। जहां चिकित्सकों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। बच्चे व पति का इलाज चल रहा है। महिला का पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। बताया गया कि मृतक महिला और उसका पति अपने बच्चे का इलाज कराने बनासो विष्णुगढ़ जा रहे थे। इसी दौरान यह घटना घटी। मृतक महिला चौपारण थाना क्षेत्र के जगदीशपुर गांव के मो अरशद की पत्नी खतीजा खातून (उम्र करीब 27 वर्ष) है। घायलों में मोहम्मद अंसारी का 33 वर्षीय पुत्र मो अरशद अंसारी और अरशद अंसारी का 3 वर्षीय पुत्र मो अरहम अली शामिल हैं।

छ ह वर्षो से अधिक समय से एक ही ब्लॉक में जमे हैं जनसेवक, कई दूसरे विभाग का भी मिला है प्रभार

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। हजारीबाग जिले में जनसेवक (विलेज लेवल वर्कर) छह साल से अधिक समय से एक ही ब्लॉक में जमे हैं, इनका स्थानांतरण छः वर्षों से नहीं हुआ है। 2018 के बाद जिले के विभिन्न प्रखंडों में पदस्थापित लगभग 50 से अधिक जनसेवक एक ही ब्लॉक में जमे हैं और सेवा दे रहे है, जबकि सरकारी नियम के अनुसार अब तक उनका स्थानांतरण हो जाना चाहिए था। अमूमन देखा जाता है कि अधिकतम 3 वर्षों में पदाधिकारी या कर्मचारियों का स्थानांतरण किया जाता है। इन जनसेवक को ब्लॉक में कई अन्य विभाग का प्रभार भी दिया गया है, वही कई जनसेवक पंचायत सचिव का भी जिम्मेवारी निभा रहे हैं। छः वर्षों से एक ही ब्लॉक में जमे रहने से लोगों का काम भी प्रभावित हो रहा है। इचाक ब्लॉक में पांच जनसेवक पदस्थापित है, जिन्हें पंचायत के साथ अन्य विभाग का भी प्रभार मिला है। किसी को प्रखंड कृषि पदाधिकारी, तो किसी को कल्याण विभाग, कोई सांख्यिकी तो कोई पंचायती राज का प्रभार संभाल रहे हैं। जबकि जन सेवक का कार्य कृषि संबंधी कार्य के लिए नियुक्ति हुआ है।

नशा मुक्ति अभियान के तहत कांडतरी में मुखिया के नेतृत्व में निकला जागरूकता अभियान

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के कांडतरी पंचायत में मुखिया राजदेव महतो के नेतृत्व में नशा मुक्ति अभियान के तहत पूरे गांव में घूम घूम कर नशा न करने को लेकर जागरूकता अभियान चलाया गया। मौके पर मुखिया राजदेव महतो ने बताया कि नशा मुक्त समाज को बनाने में स्वयं की सहभागिता महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि जब लोग स्वयं को नशा से दूर रखेंगे तब घर को नशा से दूर रख सकते हैं जब घर नशा से दूर होगा तो समाज को नशा से मुक्ति दिलाई जा सकती है जिससे हमारा समाज सुदृढ़ व सशक्त होगा। इसके साथ-साथ उपस्थित सभी महिला पुरुषों ने शपथ लिया कि ना अपने घर में किसी को नशा का सेवन करने देंगे और ना ही अगल-बगल आज पड़ोस में किसी को करने देंगे। मौके पर मुखिया राजदेव महतो, सहिया दीदी, आंगनबाड़ी सेविका, सहित दर्जनों ग्रामीण उपस्थित थे।

दुबई में फंसे झारखंड के 15 मजदूर

सोशल मीडिया पर वीडियो शेयर कर लगायी मदद की गुहार

आजाद सिपाही संवाददाता

विष्णुगढ़। गिरिडीह, हजारीबाग, और धनबाद जिले के प्रवासी मजदूरों के विदेश में फंसे होने का मामला एक बार फिर सामने आया है। 15 प्रवासी मजदूर दुबई में फंसे हैं। सभी मजदूर मसाई कॉन्ट्रैक्टिंग एल.एल.सी. कंपनी में काम करने गये थे। प्रवासी मजदूरों की ओर से वायरल वीडियो में कहा गया है कि पिछले तीन माह से मजदूरों को कंपनी की ओर से मजदूरी का भुगतान नहीं किया गया है। मजदूरों के सामने खाने-पीने का संकट खड़ा हो गया है। मजदूरों ने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर अपनी दुर्दशा बताते हुए केंद्र और राज्य सरकार से वतन वापसी में सहयोग की अपील की है। केंद्र और झारखंड सरकार से श्रमिकों की मदद करने की अपील मजदूरों ने सोशल मीडिया पर अपनी पीड़ा बतायी है।

सामाजिक कार्यकर्ता ने की मदद की अपील

झारखंड में प्रवासी श्रमिकों के लिए काम करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता सिकंदर अली ने केंद्र और झारखंड सरकार से अपील की है कि इन मजदूरों की सकुशल वतन वापसी के लिए ठोस पहल की जाये। इसके पहले भी कई बार ऐसा मामला सामने आया है, जब प्रवासी मजदूर पैसे कमाने के लिए विदेश चले गये। वहां जाने के बाद उनका शोषण किया गया। काम करवाकर उन्हें पैसे नहीं दिए गये। बदहाली में वक्त गुजारने को मजबूर हो गये। फिर अपने देश और राज्य की सरकार से अपील की। सरकार की मदद से उनकी सुरक्षित वापसी करवाई गयी। फिलहाल बिष्णुगढ़ थाना क्षेत्र के अंतर्गत जोबार पंचायत के दो प्रवासी मजदूर का शव सऊदी अरब और कुवैत में पड़ा हुआ है। जबकि गिरिडीह जिले के बगोदर के पांच मजदूर जो पिछले दो महीने पूर्व पश्चिमी अफ्रीका के नाइजर में अगवा हो गये हैं। जिनकी रिहाई अभी तक नहीं हो पायी है।

दुबई में फंसे मजदूर

हजारीबाग जिले के बिष्णुगढ़ थाना क्षेत्र के अंतर्गत अलखरी खुर्द के चुरामन महतो, चंद्रिका महतो, कैलाश महतो, उदयपुर के बिशुन महतो, जगन्नाथ सिंह, चितरामो के लखन सिंह, सुखदेव सिंह, गोविंदपुर के अर्जुन महतो, आंगो थाना क्षेत्र अंतर्गत जोलमी के त्रिलोकी महतो, पलमा के बालेश्वर महतो, गिरिडीह जिले के बगोदर थाना क्षेत्र के अंतर्गत अम्बाडीह के बैजनाथ महतो,महेंद्र महतो, निमियांघाट थाना क्षेत्र के अंतर्गत माकन के सीताराम महतो, मूरत महतो और धनबाद जिले के तोपचांची थाना क्षेत्र के अंतर्गत नेरो के संजय कुमार महतो शामिल है।

1975 की इमरजेंसी से वर्तमान अघोषित आपातकाल भयानक : संजय पासवान

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिवमंडल सदस्य संजय पासवान ने आपातकाल और आज की स्थिति पर विस्तार से जानकारी साझा करते हुए कहा कि 25 जून की आधी रात को 1975 में लगे आंतरिक आपातकाल की आधी सदी पूरी हो गई। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के लोकसभा चुनाव को अवैध घोषित कर दिया गया था। जब पूरा देश खासतौर से विद्यार्थी और युवा सड़कों पर थे। भ्रष्टाचार के खिलाफ गुजरात और बिहार से शुरू हुए छात्र आंदोलन की कमान जयप्रकाश नारायण ने संभाल ली थी और वह बहुत कम समय में आजाद भारत का सबसे विराट और व्यापक भागीदारी वाला जनआंदोलन बन गया था। सीपीएम देश की पहली पार्टी थी जिसने इस तानाशाही की असाधारण बर्बरता को झेला। 1972 से 1977 तक लगातार चले अर्ध फासिस्ट आतंक में विशेषकर पश्चिम बंगाल में 1200 से अधिक सीपीएम नेताओं की हत्याएं की गई थी। आजाद भारत के इतिहास में 1975 की 25 जून भारतीय लोकतंत्र का काला दिन है। आज का जो अघोषित आफतकाल है, उसकी तुलना में अब वह इमरजेंसी मामूली लगती है। इंदिरा गांधी ने जो किया वह कम से कम संविधान की किसी धारा में तो था, मगर आज कारपोरेट और हिन्दुत्ववादी सांप्रदायिकता के गठजोड़ वाले मोदी राज की अघोषित इमरजेंसी में लोकतंत्र, लिखने बोलने की आजादी, देश, समाज और खुद संविधान के साथ जो किया जा रहा है, वह संविधान की किसी धारा या उपधारा में नहीं है। यह उस 21 महीनों के जुल्म से कहीं ज्यादा गुना तीक्ष्ण और ज्यादा सर्वव्यापी व सर्वग्रासी है। उस इमरजेंसी में प्रेस पर सेंसरशिप थी, मगर वह सेंसरशिप के नियमों के तहत आधिकारिक रूप से की जाती थी। जो नहीं छपना है उसे बाकायदा किसी के द्वारा तय किया जाता था। आज जिस तरह की सेंसरशिप से मीडिया गुजर रहा है वह उस जमाने की तुलना में कहीं ज्यादा भयानक है।

जेएलकेएम ने मांडू विधायक तिवारी महतो का पुतला फूंका

आजाद सिपाही संवाददाता

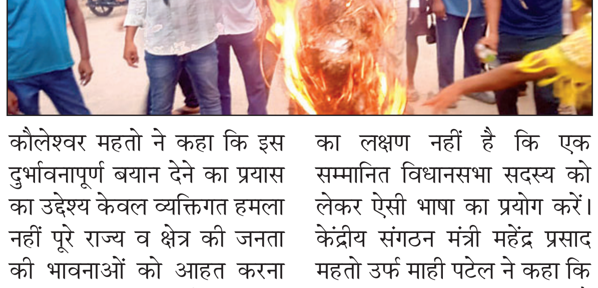

विष्णुगढ़ । झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) के केंद्रीय अध्यक्ष सह डुमरी विधायक जयराम कुमार महतो के ऊपर आपत्ति जनक टिप्पणी को लेकर मंगलवार शाम को जेएलकेएम कार्यकताओं द्वारा विष्णुगढ़ सातमील मोड से हॉस्पिटल चौक तक प्रतिवाद मार्च किया। पुतला लेकर कार्यकर्ताओ ने मांडू विधायक निर्मल महतो उर्फ तिवारी महतो मुदार्बाद , मांडू विधायक हाय हाय नारेबाजी करते हुए हॉस्पिटल चौक विष्णुगढ़ में पुतला दहन किया गया। साथ ही इस मामले पर थाने में आवेदन भी दिया गया। जेएलकेएम प्रखंड अध्यक्ष कौलेश्वर महतो ने कहा कि इस दुर्भावनापूर्ण बयान देने का प्रयास का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत हमला नहीं पूरे राज्य व क्षेत्र की जनता की भावनाओं को आहत करना ,सामाजिक सद्भाव को बिगड़ना और राजनीतिक माहौल को विषाक्त करना प्रतीत होता है। पूर्व जिप सदस्य जय प्रकाश सिंह पटेल ने कहा कि यह एक नेता का लक्षण नहीं है कि एक सम्मानित विधानसभा सदस्य को लेकर ऐसी भाषा का प्रयोग करें। केंद्रीय संगठन मंत्री महेंद्र प्रसाद महतो उर्फ माही पटेल ने कहा कि जिस पर पूरा राज्य गर्व कर रहा है ऐसे जन नेता के प्रति ऐसे शब्दों का उपयोग दुर्भाग्यपूर्ण है, मीडिया को क्या बोलना है क्या नहीं कम से कम एक जनप्रतिनिधि को इतनी समझ होनी चाहिए। मौके पर पूर्वी जिला परिषद सह केंद्रीय संगठन महामंत्री सरयू पटेल, प्रखंड अध्यक्ष कौलेश्वर महतो, गौतम कुमार, सुरेश कुमार, नंदलाल महतो, रामचंद्र राम, प्रदीप कुमार, सुनील कुमार, महेश कुमार, हेमलाल महतो, चूरामन महतो ,घनश्याम महतो,प्रवीण कुमार, राज किशोर कुमार महतो, टेकलाल कुमार महतो, बासुदेव महतो , बैजनाथ महतो, संजय महतो, जानकी महतो, प्रकाश कुमार, जितेंद्र महतो, अशोक महतो, संदीप कुमार अरविंद कुमार, नीतीश कुमार, लक्ष्मण कुमार, बासुदेव महतो, रंजीत कुमार समेत कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सांसद मनीष जायसवाल की अनूठी पहल: 'सांसद तीर्थ दर्शन-2025' का 29 जून को होगा आगाज

आजाद सिपाही संवाददाताा

हजारीबाग। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने एक अभूतपूर्व 'सांसद तीर्थ दर्शन-2025 योजना' की शुरूआत कर क्षेत्र के बुजुर्गों और तीर्थयात्रा से वंचित लोगों को सम्मान और अवसर देने का फैसला किया है। यह आध्यात्मिक पहल न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि सोशल मीडिया के माध्यम से पूरे राज्य और देश भर में प्रशंसा बटोर रही है।

29 जून को रवाना होंगे 180 तीर्थयात्री, तैयारियां जोरों पर

'सांसद तीर्थ दर्शन-2025' अभियान का विधिवत शुभारंभ और पहले जत्थे की रवानगी आगामी 29 जून 2025 को हजारीबाग के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल नृसिंह मंदिर प्रांगण से होगी। इस दिन 180 तीर्थयात्री अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर निकलेंगे। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सांसद मनीष जायसवाल, भाजपा के नेता-कार्यकर्ता, सांसद प्रतिनिधि और उनके समर्थक युद्धस्तर पर जुटे हुए हैं। सांसद जायसवाल स्वयं देश और राज्य के पार्टी नेताओं से मिलकर उन्हें निमंत्रण दे रहे हैं, वहीं हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के शहर से लेकर गांव-कस्बे तक एक लाख से अधिक आमंत्रण पत्र वितरित किये जा रहे हैं। उम्मीद है कि इस अवसर पर तीर्थयात्रियों के सम्मान में जनसैलाब उमड़ेगा।

सांसद प्रतिनिधियों ने किया स्थल निरीक्षण, तैयारी का लिया जायजा

बुधवार को सांसद मनीष जायसवाल के निर्देश पर, हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद प्रतिनिधि सत्येंद्र नारायण सिंह, सांसद मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी और इवेंट प्रबंधक सोनू कुमार ने नृसिंह स्थान मंदिर प्रांगण में बन रहे पंडाल के निर्माण कार्य का जायजा लिया।

इस अवसर पर सांसद प्रतिनिधि सत्येंद्र नारायण सिंह ने कहा कि यह योजना सांसद मनीष जायसवाल के सपने को साकार करेगी और क्षेत्र के उन लोगों को तीर्थ दर्शन करायेगी जो किसी कारणवश इस सुख से वंचित रह गये थे, जिससे उनके अरमान पूरे होंगे। लोकसभा क्षेत्र के सांसद मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी ने कहा कि सांसद मनीष जायसवाल क्षेत्र के विकास के साथ-साथ समाज के हर वर्ग के सम्मान का ध्यान रखते हैं। युवाओं के लिये खेल प्रतिस्पधाएं, जरूरतमंद कन्याओं के लिए सांसद सामूहिक विवाह उत्सव, निःशुल्क लहंगा वितरण जैसे कई कार्यों के बाद अब 'सांसद तीर्थ दर्शन - 2025' हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में एक अमिट धरोहर साबित होने जा रहा है। पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष ब्रजकिशोर जायसवाल की अपील, इस आध्यात्मिक कार्यक्रम का साक्षी जरूर बनें लोग हजारीबाग के पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष ब्रजकिशोर जायसवाल ने भी हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र वासियों से अपील करते हुए कहा कि इस आध्यात्मिक कार्यक्रम के ऐतिहासिक क्षण का गवाह जरूर बने और अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर तीर्थयात्रियों का हौसला बढ़ायें ।

व्यवसायी को अज्ञात अपराधियों ने मारी गोली

एक गंभीर रूप से घायल
दूसरा आंशिक रूप घायल

आजाद सिपाही संवाददाता

केरेडारी। बड़कागांव केरेडारी मुख्य सड़क के सिकरी ओपी क्षेत्र अंतर्गत पतरा पुल के समीप अपराधियों ने दो सुअर व्यवसाई को गोली मारकर घायल कर दिया। गोली लगने से बड़कागांव थाना क्षेत्र के लुरूंगा गांव निवासी सह सुअर व्यवसाई कुलेश्वर बेदिया पिता चेता बेदिया व बैजू बेदिया पिता गणेश बेदिया गंभीर रूप से घायल हो गए घायलों में कुलेश्वर बेदिया के सीने में गोली लगी हैं जो सीने में फंसा हुआ हुआ हैं। वहीं बैजू बेदिया के हाथ को छूते हुवे गोली निकल गई घटना 25 जून सुबह 9.30 बजे की हैं घटना की सूचना मिलते ही सीकरी ओपी एस आई संजीव कुमार दोनों घायलों को प्राथमिक उपचार के लिए केरेडारी में ले गए जहां जेएलकेएम नेता बालेश्वर कुमार व केरेडारी थाना प्रभारी विवेक कुमार के पहल पर गंभीर रूप से घायल कुलेश्वर बेदिया को बेहतर इलाज के लिए हजारीबाग रेफर कर दिया गया जहां उसका ईलाज जारी है गोली बारी करने वाले 3 बाइक सवार भागने में सफल रहें। घटना के उपरांत सीकरी ओपी प्रभारी सुनील सिंह मामले की छानबीन में जुट गए हैं घायल युवक सुअर पालन के साथ सुअर का व्यवसाई करते हैं घटना के संदर्भ में सिकरी ओपी प्रभारी सुनील सिंह ने बताया कि घटना के सभी पहलुओं की जांच पड़ताल बारीकी से की जा रही है।

गोरहर पुलिस ने दो वारंटियों को भेजा जेल

बरकट्ठा (आजाद सिपाही)। गोरहर पुलिस ने दो वारंटियों को जेल भेजा। इस बाबत थाना प्रभारी सोनू कुमार ने बताया कि लंबित वारंट,कुर्की के विरुद्ध समकालीन अभियान चला कर वारंटी महादेव साव, पिताझलाखों साव तथा दिलीप साव,पिताझमहादेव साव दोनों ग्राम बेलकप्पी निवासी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

सड़क दुर्घटना में बच्चे की मौत, दो घायल

कोडरमा (आजाद सिपाही)। बुधवार को कोडरमा थाना अंतर्गत होली फैमिली के समीप टोटो की चपेट में आने से 5 वर्षीय बच्चे की दर्दनाक मौत हो गई। मृतक बच्चे की पहचान विनय हांसदा (पिता सुदीप हांसदा, होली फैमिली) के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार चालक संगीता कुमारी नामक बच्ची, एक अन्य व्यक्ति खीरू सिंह (35 वर्ष) को झुमरीतिलैया से अपने टोटो में बिठाकर कोडरमा जा रहे थे। होली फैमिली के समीप महिलाएं सड़क पर खड़ी थीं। इसी दौरान एक बच्चा अचानक सड़क पर दौड़ गया और बिल्कुल इनके टोटो के सामने आ गया। जिसे बचाने का प्रयास किया गया, किन्तु वह बच्चा टोटो की चपेट में आ गया। वह घायल हो गया और टोटो का नियंत्रण बिगड़ जाने के कारण टोटो वहीं पर पलट गया। जिससे टोटो में बैठी बच्ची भी घायल हो गई। इधर घायल बच्चे व बच्ची को स्थानीय लोगों की मदद से सदर अस्पताल कोडरमा ले जाया गया। जहां इलाज के क्रम में बच्चे की मौत हो गई। वहीं टोटो में सवार बच्ची व टोटो सवार का अभी भी सदर अस्पताल में इलाज चल रहा है। इधर बच्चे की मौत की खबर सुनकर बच्चे के परिजन सदर अस्पताल पहुंचे। कोडरमा पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव को परिजनों को सौंप दिया।

वन इंडिया फैशन नये अवतार में, हुई रीलांचिंग

झुमरीतिलैया (आजाद सिपाही)। शहर के सामंतो पेट्रोल पंप के समीप पिछले 9 सालों से चल रहे वन इंडिया फैमिली मार्ट का रीलॉन्चिंग वन इंडिया फैशन के रूप में बुधवार को हुआ। इसका उद्घाटन समाजसेवी और स्थानीय विधायक डॉ नीरा यादव के पति विजय यादव ने किया। उन्होंने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि लोगों को एक ही जगह सभी सामग्री गुणवत्ता के साथ उपलब्ध होगी, ऐसा विश्वास है। 1 इंडिया फैशन अब एक नए रूप में दिखेगा। वहां के संचालक में बताया कि 9 वर्ष पहले वन इंडिया फैमिली मार्ट शुरू हुआ था, अब और बेहतर तरीके से इसकी री लांचिंग की गयी है। वहां के संचालक ने बताया कि पहले से बेहतर वैरायटी, पहले से बेहतर क्वालिटी, पहले से बेहतर दाम पर कई सारी वस्तुएं उपलब्ध रहेंगे। मौके पर पीर मोहम्मद, कुर्बान अली, राजेंद्र सिंह, नीरज कर्ण, मो जमाल, विनोद कुमार मुन्ना, निशांत के अलावा कई लोग मौजूद थे।

जबरा मे बस और बाइक की हुई टक्कर, एक व्यक्ति हुआ घायल

दारु (हजारीबाग) (आजाद सिपाही) । जबरा दारु चौक मे बुधवार की दोपहर एक बस और बाइक मे सीधी टक्कर हो गयी। जिसमे बाइक सवार व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना मे घायल व्यक्ति को बेहतर इलाज के लिए 108 एम्बुलेंस की सहायता से शेख बिहारी मेडिकल कॉलेज हजारीबाग भेज दिया गया। घटना के सम्बन्ध मे मिली जानकारी के अनुसार शिवम्बस संख्या जेएच 13 डी 1408 बिष्णुगढ़ से हजारीबाग जा रही थी जबकी बजाज बाइक मे सवार चिरवां इरगा निवासी गिरधारी साव धान का बिज लेकर अपने घर जा रहे थे वह जबरा मोड के पास जैसे ही अपने घर जाने के लिए मुडे सामने से आ रहे बस ने अपनी चपेट मे ले लिया। घटना के बाद मौके पर ग्रामीण और पुलिस पहुंची पर एम्बुलेंस की सुबिधा के लिए लोग लगातार फोन से सम्पर्क करते रहे। इस घटना के करीब 40 मिनट बाद एम्बुलेंस वाहन आया जिसके बाद उसे इलाज के लिए भेजा गया। इस बीच घायल व्यक्ति उतनी देर तक सडक पर ही तड़पता रहा। जबरा और दारु के ग्रामीणों ने बताया कि वाहनो की गति अत्यधिक होने के कारण जबरा चौक मे आये दिन दुर्घटना होते रहती है इसलिए जबरा चौक के दोनो तरफ सडक पर गति अवरोधक लगाया जाय साथ ही एक मास्ट लाइट लगाया जाय जिससे दुर्घटना मे कमी आ सके। ग्रामीणों ने विधायक सांसद से प्रखंड मे एक एम्बुलेंस सुबिधा मे देने की मांग की है।

कुएं में मिला आदिम जनजाति युवक का शव

पतरातू (आजाद सिपाही)। पतरातू थाना क्षेत्र के कोतो पंचायत अंतर्गत बिरहोर कॉलोनी निवासी आदिम जनजाति युवक छोटू बिरहोर (उम्र लगभग 35 वर्ष) का शव बुधवार को डाडीडीह अंबा टोला के पीछे एक कुएं से बरामद किया गया। वह बीते पांच दिनों से लापता था। शव की हालत देखकर अनुमान लगाया जा रहा है कि उसकी मौत 3-4 दिन पूर्व ही हो चुकी थी। घटना की सूचना मिलते ही पतरातू थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कुएं से बाहर निकालने की प्रक्रिया शुरू की। वहीं प्रखंड के बीडीओ मनोज कुमार गुप्ता भी घटनास्थल पर पहुंचे और मृतक के परिजनों से मुलाकात कर उन्हें ढाढस बढ़ाया। उन्होंने बताया कि आदिम जनजाति समुदाय के व्यक्ति की मृत्यु होने पर सरकारी प्रावधान के तहत परिजनों को चार लाख रुपये की सहायता राशि दी जायेगी। कुआं से शव को निकालने के बाद पतरातू पुलिस द्वारा पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल रामगढ़ भेज दिया गया।

एसपी ने पुलिस पदाधिकारियों के साथ की बैठक

पतरातू (आजाद सिपाही)। रामगढ़ एसपी अजय कुमार बुधवार को पतरातू पहुंचे। वे यहां पहुंच कर एसडीपीओ कार्यालय पतरातू में पतरातू पुलिस अनुमंडल क्षेत्र के पुलिस पदाधिकारियों के साथ बैठक की। साथ ही सभी थाना और ओपी क्षेत्र के कई समस्याओं की जानकारी ली और कई आवश्यक निर्देश दिए। मौके पर पतरातू एसडीपीओ गौरव गोस्वामी पुलिस इंस्पेक्टर सत्येंद्र सिंह, पतरातू थाना प्रभारी शिवलाल कुमार गुप्ता, भुरकुंडा ओपी प्रभारी निर्भय कुमार, बरकाकाना ओपी प्रभारी उमाशंकर वर्मा, भदानीनगर ओपी प्रभारी ब्रह्ममत कुमार, बासल थाना प्रभारी कैलाश कुमार आदि पुलिस पदाधिकारी शामिल थे।

एसबीआइ में मना 'सात दशक देश के साथ' कार्यक्रम

कुजू (आजाद सिपाही)। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, कुजू शाखा ने सात दशक देश के साथ एक कार्यक्रम का आयोजन किया। आयोजित कार्यक्रम में मुख्य रूप से कुजू ओपी प्रभारी आशुतोष कुमार सिंह और शाखा प्रबंधक एके सिंह शामिल रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ आगत अतिथियों ने संयुक्त रूप से केक काटकर किया। साथ ही, एक दूसरे को केक खिलाकर बधाई दी। मौके पर ओपी प्रभारी आशुतोष कुमार सिंह ने कहा कि बैंकिंग सुविधाएं को बेहतर बनाने में बैंकों और वित्तीय संस्थानों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उन्होंने बैंक अधिकारियों से ग्राहकों को बेहतर सुविधाएं समेत डिजिटल सेवाओं को प्रदान करने की अपील की। उन्होंने ग्राहकों से डिजिटल बैंकिंग सुविधाएं लेने की बात कही। तत्पश्चात ओपी प्रभारी ने बैंक में सुरक्षा मानकों का जायजा लिया। जिसमें कैमरा, गार्ड समेत सायरन की जानकारी लिया। वहीं, शाखा प्रबंधक एके सिंह ने बताया कि एसबीआइ का सात दशक देश के साथ कार्यक्रम में कुजू शाखा ने भी भाग लिया है। सन 1955 में इसके राष्ट्रीयकरण के 70 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में पहली बार आयोजित किया गया है। यह कार्यक्रम एसबीआई के इतिहास और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा। साथ ही, उन्होंने कहा कि गत सात दशक से एसबीआई अपने ग्राहकों को अबतक बेहतर सेवा देता आ रहा है। उन्होंने मौजूद ग्राहकों को बैंक से मिलने वाले डिजीटल बैंकिंग समेत अन्य सुविधाओं से अवगत कराया। मौके पर बैंक अधिकारी लीलावती कुमारी, विजय कुमार, मनीष कुमार, इंद्रनील भट्टाचार्य, महेश प्रसाद केशरी के अलावे ग्राहकों में सोनाराम मांझी, संजय मोदी, राम बहादुर सिंह, श्याम सिंह, प्रवीण गुप्ता, विशाल अग्रवाल, श्याम सिंह समेत कई लोग शामिल रहे।

बरका सयाल जीएम यूनिट कमिटी का पुनर्गठन, रामरत्न मंडल बने अध्यक्ष

उरीमारी (आजाद सिपाही)। झारखंड कोलियरी मजदूर यूनियन ने बुधवार को बरका सयाल जीएम यूनिट कमिटी का पुनर्गठन किया। इस दौरान बतौर मुख्य अतिथि झामुमो के हजारीबाग जिला अध्यक्ष सह झाकोमयू बरका सयाल क्षेत्र सचिव संजीव कुमार बेदिया उपस्थित हुए। सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्री बेदिया ने कहा कि झारखंड कोलियरी मजदूर यूनियन हमेशा मजदूरों के अधिकार के लिए संघर्ष करती रही है और मजदूरों के हितो की रक्षा के लिए आवाज उठाती रही है। आगे उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा चार श्रम कानून लागू करने की तैयारी की जा रही है। यह कानून मजदूर विरोधी है। इसे किसी भी हद तक झाकोमयू बर्दाश्त नही करेगी। चार लेबर कोड का राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन किसी भी सूरत में झारखंड में लागू नही होने देंगे। इस कानून के विरोध में 9 जुलाई को हड़ताल की जायेगी। यूनियन नेता सह पूर्व केंद्रीय सदस्य संजय वर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा की मजदूरो को एकता बनाये रखना है। साथ ही 9 जुलाई को बुलायी गयी हड़ताल में हमारे नेता संजीव कुमार बेदिया के मार्गदर्शन में सफल बनायेंगे। इस दौरान सर्वसहमति से झाकोमयू जीएम यूनिट पदाधिकारियों का चयन किया गया। जिसमें अध्यक्ष रामरत्न मंडल, उपाध्यक्ष सिकेंद्र कुमार, बालेश्वर महतो, सचिव विकाश कुमार, सहसचिव मुकेश किस्कू, संयुक्त सचिव प्रमिला कुमारी, संगठन मंत्री अजीत कुमार, कोषाध्यक्ष अखिलेश चौहान को बनाया गया।

तालाब का बांध टूटा, पानी बह जाने से ग्रामीण चिंतित

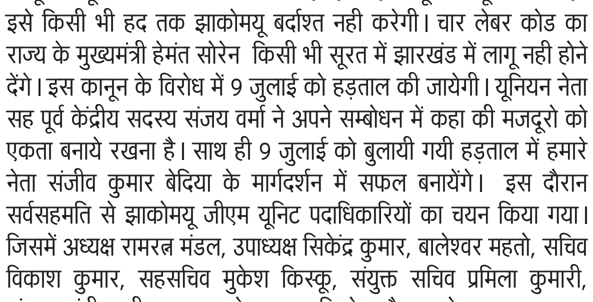

कुंदा/ चतरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के नवादा पंचायत के सिंदूरी गांव के टोला खुटवाली में पुरानी तालाब में बारिश के तेज पानी बहाव के कारण तालाब का बांध टूटने से ग्रामीण चिंतित हैं। ग्रामीणों की चिंता है कि इस तालाब से मशीन के द्वारा पानी पटवन कर धान का बिचड़ा के साथ धान की रोपाई भी करते थे। लेकिन बांध टूटने से तालाब से पानी बह गया तथा बांध की मिट्टी कई खेतो में बिखर गया। जिससे पूरा खेत दलदल हो गया है। जिससे किसानों को काफी परेशानी हो गया है। तालाब में पानी भर जाने पर किसान मछली का भी पालन कर अच्छा मुनाफा करते हैं। जब तक बांध की मरम्मत नहीं किया जायेगा, तब तक पानी का ठहराव नही हो पायेगा। ग्रामीणों ने प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं उपायुक्त से बांध को मरम्मती करवाने की मांग किया है।

महामाया मंदिर से लाखों के जेवर और नगदी की चोरी

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक महामाया मंदिर को भी चोरों ने नहीं बक्शा। इस मंदिर में भी सेंध लगाकर चोरों ने लाखों रुपए के जेवर और नगदी उड़ा लिए हैं। इस मामले में मंदिर कमेटी के सचिव झलक देव महतो के द्वारा रामगढ़ थाने में प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है। इस सूचना के बाद बुधवार को रामगढ़ थाना प्रभारी पीके सिंह खुद मौके पर पहुंचे और उन्होंने घटनास्थल का मुआवजा किया। उन्होंने बताया कि चोरों के आने और जाने के रास्ते के अलावा उन सुरागों को भी ढूंढा जा रहा है, जिससे उनकी पहचान हो सके। उन्होंने कहा कि जल्द ही चोर गिरफ्तार कर लिए जायेंगे।

सोने चांदी के जेवर, बर्तन और सीसीटीवी कैमरे तक ले गये चोर : मंदिर कमेटी के सचिव झलक देव महतो में पुलिस को बताया था कि चोरों के द्वारा 10 ग्राम का सोने का नथिया, 5 ग्राम का सोने का टीका, सोने का पानी चढ़ा हुआ दो नेकलेस, आधा किलो के चांदी का तीन मुकुट, चांदी का चार छत्र, दान पेटी में मौजूद 10,000 रुपये, सीसीटीवी कैमरे, डीवीआर, एलइडी टीवी, बर्तन तक कर ले गये।

जेवर चुराने वालों की जल्द होगी गिरफ्तारी

रामगढ़ थाना प्रभारी पीके सिंह ने चोरी की वारदात की बारीकी से जांच की। इसके बाद उन्होंने कहा कि जेवर चुराने वाले चोर जल्द गिरफ्तार किए जायेंगे। पुलिस उनकी पहचान के लिए विभिन्न स्थानों पर लगाये गये सीसीटीवी कैमरे भी खंगाल रही है। कितने लोग आये थे और उन्होंने मंदिर का ताला किस चीज से तोड़ा इसका भी पता लगाया जा रहा है।

एनसीओइए (सीटू) भुरकुंडा शाखा की बैठक, हड़ताल को सफल बनाने की अपील

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। एनसीओईए (सीटू) भुरकुंडा शाखा की एक महत्वपूर्ण बैठक बुधवार को शाखा कार्यालय में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता शाखा अध्यक्ष किरण कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में मुख्य रूप से क्षेत्रीय अध्यक्ष बासुदेव साव और क्षेत्रीय सचिव राम नरेश सिंह उपस्थित थें। बैठक का मुख्य उद्देश्य 9 जुलाई 2025 को प्रस्तावित हड़ताल को सफल बनाने एवं संगठन को जमीनी स्तर पर और अधिक मजबूत बनाना रहा। इस दौरान संगठनात्मक गतिविधियों, मजदूरों की समस्याओं और भविष्य की रणनीतियों पर गहन चर्चा की गयी। मौके पर शाखा सचिव संतोष यादव ने कहा कि वर्ष 2025 में संगठन की सदस्यता बढ़ाकर संगठन को अधिक सशक्त बनाया जाएगा। साथ ही उन्होंने आश्वासन दिया कि किसी भी मजदूर या कर्मचारी को कंपनी से संबंधित समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जाएगा। क्षेत्रीय सचिव राम नरेश सिंह ने कहा कि 9 जुलाई की हड़ताल कोयला मजदूरों के भविष्य को तय करने वाली एक ऐतिहासिक हड़ताल होगी। यह हड़ताल केंद्र सरकार द्वारा लाए गए 4 लेबर कोड, एमडीओ नीति और रेवेन्यू शेयरिंग जैसे ज्वलंत मुद्दों के खिलाफ मजदूरों की आवाज होगी। उन्होंने सभी मजदूर साथियों से इस हड़ताल को सफल बनाने का आह्वान किया। बैठक में किरण कुमार, असगर अंसारी, गणेश उरांव, सुशील कुमार सिंह, एतवा मुंडा, प्रमोद कुमार सिंह, सन्यासन घोष सहित कई सदस्य मौजूद थे।

पूर्व सीएम और सुदेश महतो की छवि को सोशल मीडिया पर बदनाम करने के मामले में आजसू ने दिया आवेदन

गोला (आजाद सिपाही)। आजसू युवा प्रखंड कमिटी ने गोला थाना में आवेदन देकर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश महतो, डॉ देवशरण भगत और दीपक महतो की छवि को सोशल मीडिया पर जानबूझकर बदनाम करने के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की है। आजसू नेताओं ने कहा कि फेसबुक व इंस्टाग्राम पर कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा छेड़छाड़ किए गए वीडियो को आपत्तिजनक गानों के साथ पोस्ट किया जा रहा है। जिससे सम्मानित नेताओं की गरिमा को ठेस पहुँच रही है। बताया कि जेएलकेएम पार्टी पेज और एक संदीप महतो के इंस्टाग्राम आईडी से यह पोस्ट किया गया है। पार्टी नेता विशु रजवार ने कहा कि कुछ लोग अपनी नेतागिरी चमकाने के लिए छेड़छाड़ किया गया वीडियो को हथियार बना रहे हैं। मौके पर पूर्व पंचायत समिति सदस्य सिकंदर शर्मा, आजसू छात्र संघ अध्यक्ष अध्यक्ष राहुल कुशवाहा,अरुण दांगी,भानू रजवार, प्रीत नायक,सागर, भगत,शंकर,बादल कुमार आदि मौजूद थे।

व्यवसायी सुबोध सिंह का आज सुबह 9 बजे ढौलिया में होगा अंतिम संस्कार

चतरा (आजाद सिपाही)। चतरा के बाइपास रोड नगवां मोहल्ला निवासी व्यवसायी सह संवेदक सुबोध सिंह के शव का पोस्टमार्टम एमजीएम मेडिकल कॉलेज जमशेदपुर में हुआ। चार चिकित्सकों की मेडिकल टीम ने शव का पोस्टमार्टम किया। घटना की सूचना पाकर चतरा से 20 से अधिक लोग जमशेदपुर गए हुए हैं। संवेदक संघ के जिला अध्यक्ष शशिकांत सहाय उर्फ बड़े ने बताया कि मेडिकल टीम द्वारा शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद शव को चतरा लाया जा रहा हैं। देर रात तक शव के चतरा आने के बाद गुरुवार को सुबह नौ बजे उनके पैतृक गांव हंटरगंज के ढौलिया में शव का अंतिम संस्कार किया जायेगा।

बिजली की समस्या को लेकर डीवीसी के डायरेक्टर और जीएम से मिलीं अंबा प्रसाद

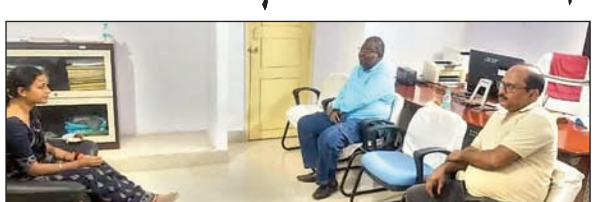

आजाद सिपाही संवाददाता

पतरातू। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की राष्ट्रीय सचिव व पूर्व विधायक अंबा प्रसाद ने पतरातू बड़कागांव और केरेडारी समेत हजारीबाग लोकसभा और चतरा जिले में अघोषित बिजली कटौती को लेकर रांची में डीवीसी के रेज़िडेंट डायरेक्टर एवं सीनियर जीएम (एनर्जी) संजय कुमार से मुलाकात किया। पूर्व विधायक अंबा प्रसाद ने मुलाकात के संबंध में बताया कि हुई वार्ता में यह साफ प्रतीत हुआ कि डीवीसी अब केंद्र सरकार के इशारों पर काम करने वाली संस्था बनकर रह गयी है, जिसकी वजह से राज्यहित की उपेक्षा हो रही है। अंबा प्रसाद ने कहा कि निरंतर प्रयासों से जिस 220/33 केवीए पावर ग्रिड की आधारशिला राज्य के मुख्यमंत्री व मेरे द्वारा रखी गयी थी, उसका निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण होना अत्यंत आवश्यक है। यही एकमात्र उपाय है जिससे बड़कागांव के साथ-साथ हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र और चतरा ज़िले में बिजली की समस्या का स्थायी समाधान संभव है। आगे उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि केंद्र सरकार की लापरवाही और राजनीतिक भेदभाव के चलते गैर-भाजपा शासित राज्यों में जानबूझकर बिजली संकट पैदा किया जा रहा है।

योजनाओं का दोहरीकरण ना हो, अधिकारी ध्यान दें : डीसी

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। सांसद, विधायक एवं सीएसआर मद से संचालित योजनाओं के तहत बुधवार को डीसी फैज अक अहमद मुमताज की अध्यक्षता में जिला समाहरणालय के सभागार में बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान बैठक में डीसी ने अलग-अलग वित्तीय वर्ष में सांसद, विधायक एवं सीएसआर मद के तहत ली गई योजना एवं उनके वर्तमान स्थिति की जानकारी ली।

मौके पर डीसी ने सभी अधिकारियों को योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान देने एवं किसी भी परिस्थिति में योजनाओं का दोहरीकरण नहीं होने देने का निर्देश दिया। सीएसआर मद से संचालित योजनाओं की समीक्षा के क्रम में डीसी ने रामगढ़ जिला अंतर्गत सीएसआर एजेंसियों द्वारा विगत 5 वर्षों में किये गये कार्य से संबंधित प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान डीसी ने सांसद एवं विधायक मद से संचालित योजनाओं की प्रखंडवार प्रखंड विकास पदाधिकारियों से जानकारी ली। मौके पर डीसी ने योजनाओं को जल्द से जल्द पूर्ण करने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दियक। बैठक में उप विकास आयुक्त आशीष अग्रवाल, सिविल सर्जन डॉ महालक्ष्मी प्रसाद, प्रभारी पदाधिकारी गोपनीय शाखा रविंद्र कुमार गुप्ता, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी इंदु प्रभा खालखो सहित अन्य उपस्थित थे।

इमरजेंसी के 50 साल को भाजपा ने बताया लोकतंत्र हत्या दिवस

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। देश में इमरजेंसी के 50 साल पूरे हो गए हैं। भाजपा इस दिन को लोकतंत्र हत्या दिवस के रूप में मना रही है। बुधवार को झारखंड के प्रभारी प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र राय रामगढ़ पहुंचे और उन्होंने एक बार फिर इमरजेंसी की त्रासदी को उजागर किया। उन्होंने कहा कि 25 जून 1975 वह काला अध्याय इस देश के इतिहास में लिखा गया है, जिसे सोचकर डर लगता है। आज एक बार फिर उसे काले दिवस को हम याद कर रहे हैं, जब इंदिरा गांधी ने जन आंदोलन, न्यायालय और जन अधिकारों को कुचलने का काम किया था। आज हमें उस इतिहास के संघर्ष को याद रखने की आवश्यकता है। क्योंकि भविष्य में कभी भी तानाशाही सत्ता में शामिल लोग लोकतंत्र की हत्या ना कर सके। हमारा संविधान ही वह ताकत है जिससे इंदिरा गांधी के चुनाव को रद्द किया गया था। इमरजेंसी के दौरान लाखों लोगों को जेल भेजा गया। ऐसे कानून बनाये गये थे, जिसकी ना तो दलील थी ना अपील।

क्षेत्रीय पार्टियां जातिवाद के आधार पर चला रही परिवारवाद : भाजपा के प्रभारी प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र राय ने क्षेत्रीय पार्टियों पर बड़ी टिप्पणी की है। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय पार्टियां जातिवाद को आधार बनाकर अपना परिवारवाद चला रही है। कांग्रेस भी इस परिवारवाद का राष्ट्रीय नमूना है। देश में एकमात्र भाजपा ही है जो परिवारवाद से ऊपर उठकर समाजवाद पर चल रही है। राष्ट्रीय जनता दल, समाजवादी पार्टी, झारखंड मुक्ति मोर्चा या देश की अन्य क्षेत्रीय पार्टियां जिन्होंने अपने को जाति और समुदाय में बांध रखा है।

वित्तीय समावेशन को लेकर जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

चतरा। उपायुक्त कीर्तिश्री के निर्देशानुसार समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में अपर समाहर्ता अरविंद कुमार की अध्यक्षता में स्पेशल कैंप हेतु जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तीय साक्षरता के तहत जिले के सभी ग्राम पंचायतों में विशेष शिविर आयोजित करने की योजना पर विस्तार से चर्चा की गयी। यह विशेष शिविर 1 जुलाई 2025 से 30 सितंबर 2025 तक आयोजित किये जायेंगे। अपर समाहर्ता ने जिला अग्रणी प्रबंधक को निर्देशित किया कि इस शिविर के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अंतर्गत खाता खोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाये। साथ ही, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और अटल पेंशन योजना के लिए अधिक से अधिक आवेदन प्राप्त किये जाये, जिससे आमजन इन योजनाओं का सीधा लाभ उठा सकें। बैठक में यह भी तय किया गया कि शिविर आयोजन के दौरान बैंकों, बीमा एजेंसियों एवं संबंधित विभागों का सक्रिय सहयोग सुनिश्चित किया जायेगा।

आनंद साईं दरबार के स्थापना दिवस के दूसरे दिन हुए कई धार्मिक अनुष्ठान

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। शहर के राधा कृष्ण कॉलोनी स्थित आनंद साईं दरबार के 15वें स्थापना दिवस समारोह के दूसरे दिन बुधवार को कई धार्मिक अनुष्ठान किया गया। इस दौरान पुजारी राजेश पांडे ने यजमान अमित कुमार सिन्हा, नंदकिशोर गुप्ता और शैलेन्द्र ठाकुर सपत्नीक के हाथों समस्त पूजन और हवन का अनुष्ठान संपन्न करवाया। इस मौके पर यजमानों द्वारा साईं बाबा से रामगढ़ जिले में अमन चैन और खुशहाली की कामना की गयी। पूजन के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे जिनके बीच पूजन के उपरांत प्रसाद का वितरण किया गया। पूजन और हवन के दौरान स्कॉन की ओर से आनंद साईं दरबार में भजन और कीर्तन की विशेष प्रस्तुती की गयी। वहीं, भजन संध्या में शाम को चिंटू मिश्रा और ध्रुव कुमार द्वारा साईं बाबा के आकर्षक भजनों की प्रस्तुती की गयी। इस दौरान साईं भक्त झूमते रहे।

विशेष पूजन और हवन में ये हुए शामिल : रामगढ़ विधायक ममता देवी, वरिष्ठ कांग्रेस नेता अरूण कुमार सिन्हा, खोगेन्द्र साव, रजरप्पा थाना प्रभारी कृष्ण कुमार, कुजू ओपी प्रभारी आशुतोष सिंह, जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष मानिक चंद जैन, गुरुद्वारा प्रधान परमदीप सिंह कालरा, साहू समाज के अध्यक्ष उपेंद्र साव, अजीत कुमार, आनंद प्रताप सिंह, सुरेश सिंह, अधिवक्ता आनंद सिन्हा, जीतू अग्रवाल, अरविंद अग्रवाल, अजीत जायसवाल, विमल शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

पूर्व मध्य रेल

खुली ई-निविदा सूचना

(निर्माण विभाग)

e-Tender No. ELCSMHX-ETEN-20-24-25

भारत के राष्ट्रपति के तरफ से निम्न कार्य हेतु ई.निविदा आमंत्रित की जाती है **1. कार्य का नाम एवं स्थान:** उपमुख्य विद्युत अभियंता/निर्माण/दक्षिण के अधीन पूर्व मध्य रेलवे के बानदाग–हजारीबाग में इलेक्ट्रिकल जनरल वर्क्स और Banadag रैपिड लोडिंग सिडिडिंग धनबाद डिवीजन में प्रकाश व्यवस्था और किसी भी अन्य स्थान पर dy.cee/con/दक्षिण/MHX अंतर्गत काम करने के लिए खुली निविदा। **2. अनुमानित कार्य की लागत:** रु. 99017640.14 **3. जमा किए जाने वाले बयाना राशि एवं निविदा प्रपत्र का मूल्य:** NIT के अनुसार एवं रु. शून्य **4. कार्य पूर्ण करने का समय :** 06 माह **5. निविदा बंद होने की तिथि एवं समय:** 15.07.2025 दोपहर 12:00 बजे तक। **6. वेबसाइट का विवरण, नोटिस बोर्ड का स्थान जहां निविदा की पूर्ण जानकारी देखा जा सकता है तथा कार्यालय का पता जहां से निविदा प्रपत्र खरीदा जा सकता है:** आई.आर.ई.पी.एस वेबसाइट www.ireps.gov.in पर निविदि डाउन लोड किया जा सकता है एवं सीईई/कॉन महेन्द्रूघाट, कार्यालय सीएओ/कॉन ईसीआर ऑफिस परिसर, पटना–800004 में निविदा पट पर देखा जा सकता है। हिन्दी एवं अंग्रेजी की सूचना में किसी प्रकार की भिन्नता पाये जाने पर अंग्रेजी में प्रकाशित सूचना को सही माना जायेगा।

उप मुख्य विद्युत अभियंता/निमार्ण/दक्षिण
पू.म.रे./महेन्द्रूघाट/पटना

पीआर/0473/एमएचएक्स/एस/टी/25-26

AFFIDAVIT

As per Affidavit date 24.09.2024, I, GOPI KISHAN AGARWAL S/O Late Radhey Sham Agarwal aged about 64 years, by faith Hindu,by profession business resident of 186 Addi bunglowroad Jhumritelaiya Distt. Kodarma (Jharkhand), do hereby solemnly affirm and declare as follows:-

1. That my name printed in passport Gopi Krishna Agarwal instead of Gopi Kishan Agarwal.
2. That my date of birth is 15th January 1959 as per my Aadhar, PAN and school certificates.
3. That I further declare that by mistake in old passport my date of birth printed 20.02.1960 instead of 15th January 1959.
4 That I am also known as Gopi Kishan Agarwal and Gopi Krishna Agarwal.

I.Gopi Kishan Agarwal, deponent, do hereby solemnly affirm and state that the contents of Paragraph No. 1 & 5 of this affidavit are true to my personal knowledge, that no part of it is incorrect and false Nothing material has been concealed in it

जिंदगी दाव पर लगा रहे युवा

आज सोशल मीडिया का जमाना है और हर किसी को किसी न किसी तरह चर्चा में आने की पड़ी है। ऐसे में युवक-युवतियों में रील बनाकर प्रसिद्धि पाने का जुनून जोरों पर है। रील बनाने वाले युवा उल्टी-सीधी हरकतों से कभी तो लोगों के मनोरंजन का साधन बनते हैं और कभी रील बनाने के चक्कर में घायल हो जाते हैं या फिर अपनी जान ही गंवा बैठते हैं। इसके कई उदाहरण हैं। 18 अप्रैल को दुर्ग में रील बनाते समय तीन नाबालिगों की मोटरसाइकिल 2 वाहनों से टकरा गयी, जिससे 2 नाबालिगों की घटनास्थल पर ही मृत्यु और तीसरा घायल हो गया। 26 अप्रैल को वाराणसी में कुर्थिया गांव के निकट चलती मोटरसाइकिल पर रील बना रहे 2 युवक सामने से आ रही एक कार से टकरा कर गंभीर रूप से घायल हो गए। 12 मई को सिवनी (मध्य प्रदेश) में रेल की पटरी पर रील बनाने के दौरान 1 युवक की रेलगाड़ी की चपेट में आ जाने से मौत हो गयी। 17 मई को अमरोहा के हसनपुर में तेज रफ्तार से मोटरसाइकिल चलाते हुए रील बना रहे 2 युवकों की मोटरसाइकिल दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के परिणामस्वरूप दोनों युवक अपनी जान से हाथ धो बैठे। 4 जून को आगरा के नगला नाथू गांव में यमुना नदी में रील बनाते समय 6 युवतियां गहरे पानी में चली गयीं तथा भंवर में फंस जाने के कारण डूब जाने से उनकी मौत हो गयी। इनमें से 3 युवतियां एक ही परिवार की थीं, जबकि 3 अन्य इनकी रिश्तेदार थीं। 14 जून को बहराईच में रील बनाने के लिए सड़क पर स्टंट कर रहे 2 मोटरसाइकिल सवार युवकों ने एक महिला को टक्कर मार दी और उसे दूर तक घसीटते चले गये, जिससे उसकी मौत हो गयी। 15 जून को सहरसा के विश्वकर्मा ढाला में रेलवे यार्ड में खड़ी एक मालगाड़ी के इंजन पर चढ़ कर रील बनाते समय एक युवक हाईटेंशन तारों की चपेट में आ जाने से 90 प्रतिशत झुलस गया। इसी तरह 16 जून को हरिद्वार में एक युवक गंगा नदी में नहाने के दौरान रील बनाने के लिए गहरे पानी में चला गया और जल्द ही पानी के तेज बहाव में बह गया और डूब गया। रील बनाने का एक कारण यह भी है कि बहुत अधिक बार देखी जाने वाली तथा फॉलो व फारवर्ड किये जाने पर रील बनाने वालों को सोशल मीडिया साइट के संचालकों द्वारा आकर्षक धनराशि भी मिलने लगती है। उक्त घटनाएं सोशल मीडिया पर रील बनाने के बढ़ते चलन और इससे जुड़े खतरों को उजागर करती हैं। पिछले कुछ समय के दौरान रील बनाने के रुझान और इससे होने वाली दुर्घटनाओं में भारी वृद्धि हुई है, जिसने इस मामले में सावधानी बरतने के बारे में सोचने के लिए विवश किया है। इस संबंध में हम युवाओं को यही सलाह देंगे कि वे अपनी जान जोखिम में डाल कर इस प्रकार के स्टंट न करें, क्योंकि चंद पलों की भूल जिंदगी भर के लिए पीड़ा दे सकती है।

पिछले कुछ समय के दौरान रील बनाने के रुझान और इससे होने वाली दुर्घटनाओं में भारी वृद्धि हुई है। हम युवाओं को यही सलाह देंगे कि वे अपनी जान जोखिम में डाल कर इस प्रकार के स्टंट न करें, क्योंकि चंद पलों की भूल जिंदगी भर के लिए पीड़ा दे सकती है।

अभिमत
आजाद सिपाही

भारतीय रेल भी तीर्थयात्रियों को सेवा में हमेशा की तरह तत्पर है। तीर्थयात्रियों के सुखद अनुभव के लिए भारतीय रेल उनकी सेवा में तत्पर है। पिछले 11 वर्ष, ओड़िशा के रेल इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास की दृष्टि से ऐतिहासिक रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'पूर्वोदय नीति' के तहत ओडिशा को आवंटित रेल बजट में 2009-14 के वार्षिक औसत के मुकाबले 12 गुना उछाल देखने को मिला है। वर्ष 2025-26 में बजट का आंकड़ा 10,500 करोड़ रुपये से भी अधिक हो गया है।

जगन्नाथ रथयात्रा: श्रद्धालुओं की सेवा में सदैव तत्पर भारतीय रेल

अश्विनी वैष्णव

महाप्रभु की पावन नगरी, जगन्नाथ पुरी, रथयात्रा के लिए पूरी तरह तैयार है। दुनिया भर से हर वर्ष आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के लिए यह आस्था की अनोखी यात्रा है। भारतीय रेल भी तीर्थयात्रियों को सेवा में हमेशा की तरह तत्पर है। तीर्थयात्रियों के सुखद अनुभव के लिए भारतीय रेल उनकी सेवा में तत्पर है। पिछले 11 वर्ष, ओड़िशा के रेल इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास की दृष्टि से ऐतिहासिक रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'पूर्वोदय नीति' के तहत ओडिशा को आवंटित रेल बजट में 2009-14 के वार्षिक औसत के मुकाबले 12 गुना उछाल देखने को मिला है। वर्ष 2025-26 में बजट का आंकड़ा 10,500 करोड़ रुपये से भी अधिक हो गया है। ओडिशा में 2014 से अब तक 2,100 किलोमीटर से अधिक नयी पटरियां बिछायी जा चुकीं हैं। यह मलेशिया के पूरे रेल नेटवर्क से भी अधिक है। ओडिशा में वर्तमान में 73,000 करोड़ रुपये की नयी रेल लाइन परियोजनाएं चल रही हैं।

59 अमृत स्टेशन विकसित किए जा रहे हैं, जिनमें आकांक्षी जिलों में 16 स्टेशन शामिल हैं। राज्य में संचालित 6 वंदे भारत सेवाएं 17 जिलों को कवर कर रहीं हैं। ओडिशा में भारतीय रेलवे का सबसे खास योगदान रथयात्रा के दौरान होता है। रेलवे हर साल इस दौरान लाखों तीर्थयात्रियों की सेवा का जिम्मा उठाता है।

इस वर्ष जगन्नाथपुरी के लिए 850 नियमित और 365 विशेष ट्रेन सेवाओं सहित कुल 1,215 ट्रेन सेवाएं संचालित हैं।

भारतीय रेल की विशेष इंजीनियर्स और टेक्नीशियन्स की टीम पूरी रथयात्रा के दौरान रथों के साथ तैनात रहती है। यह रथों को निर्माण स्थल से जगन्नाथ मंदिर तक ले जाने के साथ उनकी सुगम आवाजाही और मरम्मत में सहयोग करती है। यह टीम स्पेशल स्क्रू जैक का उपयोग कर रथों को ठीक जगह पर रखना, उनकी दिशा और सीध भी सुनिश्चित करती है।

सुगम यात्रा, सहज व्यवस्था

पिछले 11 वर्षों में रथयात्रा स्पेशल ट्रेनों की संख्या चार गुना बढ़ी है। इस वर्ष जगन्नाथपुरी के लिए 850 नियमित और 365 विशेष ट्रेन सेवाओं सहित कुल 1,215 ट्रेन सेवाएं संचालित हैं। ये ट्रेनें ओड़िशा के कई आकांक्षी जिलों जैसे कालाहांडी, बलांगीर, नुआपाड़ा, कोरापुट, रायगढ़ा, गजपति और ढेंकनाल और आदिवासी क्षेत्रों को श्रीक्षेत्रपुरी से जोड़तीं हैं।

एआइ-आधारित रियल-टाइम डिमांड प्रिडिक्शन सिस्टम के जरिए ट्रेनों का बेहतर संचालन हो रहा है। पुरी में इस बार 10 प्लेटफॉर्म तीर्थयात्रियों के स्वागत के लिए तैयार हैं। पुरी के साथ-साथ अन्य रेलवे स्टेशनों पर अतिरिक्त टिकट काउंटर लगाये गये हैं।

आस्था आधारित सार्वजनिक सेवा मॉडल

'सेवा परमो धर्म :' की भावना के साथ, भारतीय रेल यह सुनिश्चित कर रही है कि रथ यात्रा के दौरान तीर्थयात्रियों को सम्मान, सुविधा और सुरक्षा मिले।

इस वर्ष तीर्थ यात्रा को समावेशी बनाने की बहुत बड़ी पहल हो रही है। प्रतिदिन अधिकतम 2 लाख की क्षमता के साथ रेलवे करीब 20 लाख यात्रियों की सेवा के लिए तैयार है। 25,000 तीर्थयात्रियों की क्षमता वाला होल्डिंग एरिया भी बनाया गया है। गर्मी से राहत के लिए पर्याप्त व्यवस्था की गयी है। भोजन, पानी और कूलर की व्यवस्था है। लगभग 2.5 लाख निःशुल्क भोजन सामग्री के वितरण की व्यवस्था है।

सफाई के लिए आधुनिक जेट क्लीनिंग मशीनें, सीवर सफाई ट्रक सहित अत्याधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं। तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त सुरक्षा बल, सीसीटीवी, ड्रोन और फेस रिकग्निशन सिस्टम लगाये गये हैं। दिव्यांगजनों, बुजुर्गों, महिलाओं और बीमार श्रद्धालुओं की आवश्यकताओं का ध्यान रखा गया है। डॉक्टर, एंबुलेंस, मेडिकल बूथ और फर्स्ट एड काउंटर स्थापित किये गये हैं। इस बार भारतीय रेलवे ने पुरी स्टेशन को आस्था-आधारित सार्वजनिक सेवा के एक मॉडल के रूप में परिवर्तित किया है।

स्पेशल जैक के साथ रथयात्रा में प्रत्यक्ष सहभागी

भारतीय रेल की विशेष इंजीनियर्स और टेक्नीशियन्स की टीम पूरी रथयात्रा के दौरान रथों के साथ तैनात रहती है। यह रथों को निर्माण स्थल से जगन्नाथ मंदिर तक ले जाने के साथ उनकी सुगम आवाजाही और मरम्मत में सहयोग करती है।

यह टीम स्पेशल स्क्रू जैक का उपयोग कर रथों को ठीक जगह पर रखना, उनकी दिशा और सीध भी सुनिश्चित करती है। रथों के बीच उचित दूरी बनाये रखने और मार्ग की बाधाओं को हटाने की जिम्मेदारी भी रेलवे की टीम देखती है। भारतीय रेल को राष्ट्र की जीवनरेखा कहा जाता है। रथ यात्रा को अपनी जीवनरेखा मानने वाले तीर्थयात्रियों के साथ हर भारतीय की सेवा के लिए भारतीय रेल प्रतिबद्ध है।

(लेखक : भारत सरकार में केंद्रीय रेल, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आइटी तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्री हैं।)

कोल्हान की खबरें

मुखियागणों से मिले कांग्रेस जिला अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे, कहा

पंचायतों को मिले पूर्ण अधिकार और सम्मान

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। जमशेदपुर प्रखंड कार्यालय स्थित पंचायत सचिवालय में एक बैठक का आयोजन किया गया। पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे के नेतृत्व में आयोजित बैठक में सभी मुखियागण उपस्तित हुए।

मौके पर पंचायतों को पूर्ण वित्तीय एवं प्रशासनिक अधिकार देने, राज्य वित्त आयोग की निधि सीधे पंचायतों को उपलब्ध कराने, 25,000 मासिक मानदेय, मनरेगा योजना का संचालन पंचायतों के माध्यम से कराने और जनप्रतिनिधियों को दुर्घटना बीमा का लाभ देने की मांगें रखीं गयी। बैठक में मुखिया संघ के महासचिव कान्हू मुर्मू ने कहा कि वर्तमान में पंचायतों को मात्र 1-2 विभागों से पत्राचार होता है, जबकि 14 विभागों का अधिकार पंचायतों को मिलना चाहिए। श्री दुबे ने आश्वासन दिया मुखियागणों की सभी मांगों को विभागीय मंत्री दीपिका पांडे सिंह के समक्ष रखा जायेगा। शीघ्र ही एक जिला स्तरीय संवाद बैठक भी आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर कांग्रेस के कई वरिष्ठ पदाधिकारी, पंचायत प्रतिनिधिगण सहित कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

पुलिस ने अवैध मिनी शराब फैक्ट्री का किया खुलासा, दो गिरफ्तार

66 बोतल विदेशी शराब सहित 800 खाली बोतल बरामद

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। सोनारी पुलिस ने वरीय पदाधिकारी के निर्देश सोनारी नॉर्थ ले-आउट में विनोद सिंह के मकान में चल रही अवैध मिनी शराब फैक्ट्री का खुलासा कर दिया। बुधवार को पुलिस ने अवैध कारोबार में शामिल दो कर्मचारियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। गिरफ्तार आरोपियों में दोनों बंधु कुमार और जयंत कुमार शामिल है। यह मकान एक पूर्व आयकर विभाग के अधिकारी होने का अनुमान लगाया जा रहा है। हालांकि इसकी कोई आधिकारिक सूचना नहीं मिली है। छापेमारी के दौरान पुलिस ने विदेशी शराब के 66 बड़ी बोतल, बड़ी मात्रा में शराब बनाने की सामग्री, नकली ब्रांडेड बोतलें, स्टीकर और पैकिंग सामग्री बरामद कर लिया। फिलहाल पुलिस पूरे नेटवर्क की जांच की जा रही है। पुलिस के अनुसार प्रारंभिक जांच में बॉटलिंग कर नकली शराब आसपास के क्षेत्रों में सप्लाई करने की बात सामने आ रही है। इसके पीछे कोई बड़ी गिरोह का हाथ होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

शहर पहुंचने पर झारखंड प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष का भव्य स्वागत

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष शहजादा अनवर का जमशेदपुर आगमन पर पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष मौलाना अंसार खान ने उनका भव्य स्वागत किया। श्री अनवर एक निजी कार्य में शामिल होने पहुंचे थे। इस दौरान दोनों के बीच झारखंड की वर्तमान राजनीतिक स्थिति और संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा हुई। मौलाना अंसार खान ने उन्हें जिला कांग्रेस अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे द्वारा जन समस्याओं को लेकर चलाये जा रहे आंदोलनों की जानकारी दी। मौके पर कांग्रेस संगठन को मजबूत करने हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किया।

शिक्षकों को दिखायी जा रही प्रधानाध्यापक अरविंद के नवाचारों की प्रेरणादायक कहानी

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। नयी शिक्षा नीति के तहत झारखंड के प्राथमिक शिक्षकों के लिए सतत व्यवसायिक विकास नामक 50 घंटे का अनिवार्य कोर्स चलाया जा रहा है। जिसमे गुरुजी ऐप के माध्यम से 20 घंटे का ऑनलाइन प्रशिक्षण 1 जून से 30 जून तक दी जारही है। इस कोर्स के कुल 24 मॉड्यूल में से 18वां मॉड्यूल स्कूल लीडरशिप पर आधारित है। जिसमें उत्क्रमित मध्य विद्यालय, टांगराईन के प्रधानाध्यापक अरविंद तिवारी द्वारा किये गये नवाचारों और विद्यालय में लाये गये परिवर्तन को शामिल किया गया। अरविंद तिवारी विशेष रूप से आदिम जनजाति के बच्चों को शिक्षा से जोड़ने और बालिकाओं के ड्रॉप आउट को रोकने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। उनके कार्यों को मॉडल के रूप में प्रस्तुत कर राज्यभर के शिक्षकों को प्रेरित किया जा रहा है। प्रशिक्षण में प्रत्येक वीडियो के अंत में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होते हैं, जिनका उत्तर देकर शिक्षकों को अपनी समझ भी प्रमाणित करनी होती है।

जिला स्तरीय माइनिंग टास्क फोर्स की बैठक में डीसी ने सख्त कार्रवाई के दिये आदेश, टोल फ्री नंबर जारी

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। डीसी नितिश कुमार सिंह की अध्यक्षता में जिला स्तरीय माइनिंग टास्क फोर्स की बैठक संपन्न हुई। बुधवार को बैठक में एनजीटी दिशा-निर्देशों के अनुपालन और अवैध खनन पर सख्ती से रोक के लिए अधिकारियों को निर्देश दिये गये। डीसी ने कहा कि बालू उत्खनन पर 10 जून से 15 अक्टूबर तक पूर्ण रोक है। अवैध खनन में संलिप्त लोगों पर कानूनी कार्रवाई, चेकनाका स्थापित कर वाहनों की जांच, वन मार्गों पर निगरानी और ग्राम पंचायत स्तर पर टोल फ्री नंबर 18003456490 के प्रचार का निर्देश दिया। बैठक में अब तक की कार्रवाई में 34 वाहन जब्त, 53700 घनफुट बालू जब्त, 40.10 लाख जुमार्ना वसूली और 7 एफआईआर दर्ज होने की जानकारी दी गयी।

डीसी ने सड़क सुरक्षा में जनसहभागिता के लिए अपील की

सरायकेला (आजाद सिपाही)। सरायकेला खरसावां जिले के जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक डीसी नितिश कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बुधवार को बैठक में डीसी ने सड़क दुर्घटनाओं पर नियंत्रण और जन-जागरूकता बढ़ाने को लेकर कई निर्देश दिए। डीसी ने 18 चिन्हित ब्लैक स्पॉट पर साइनेज बोर्ड लगाने, ट्रैफिक पुलिस की तैनाती और नियमित गश्ती सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। साथ ही अवैध पार्किंग और अतिक्रमण पर कार्रवाई तथा गम्हरिया से स्वर्णरेखा पुल तक स्ट्रीट लाइटों की निगरानी के निर्देश दिए। बीते मई माह में जिले के 27 सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 20 लोगों की मौत हो गयी। डीसी ने सड़क सुरक्षा में जनसहभागिता के लिए अपील की। बैठक में पुलिस अधीक्षक मुकेश लुनायत, अपर उपायुक्त जयवर्धन कुमार, आदित्यपुर नगर निगम प्रशासक रवि प्रकाश, जिला परिवहन पदाधिकारी गिरजा शंकर महतो, चांडिल अनुमंडल पदाधिकारी, पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय, सभी अंचलाधिकारी, जिले के सभी थाना क्षेत्र के प्रभारी और समिति के अन्य सदस्यगण उपस्थित रहे।

बिस्टुपुर राम मंदिर से 27 जून को निकलेगी इस्कॉन की भव्य रथयात्रा

एक हजार स्वयंसेवक करेंगे रथ संचालन

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। लौहनगरी जमशेदपुर में इस्कॉन के द्वारा प्रभु जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा 27 जून को बिष्टुपुर स्थित श्रीराम मंदिर से निकाली जायेगी। बुधवार को इस्कॉन से जुड़े लोगों ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया तीन रथों पर भगवान श्रीजगन्नाथ, मां सुभद्रा और बलभद्र विराजमान रहेंगे। यह रथ यात्रा हरि भक्तों, सामाजिक धार्मिक संगठनों एवं कीर्तन मंडलियों की सहभागिता से मौसी बाड़ी तक जायेगी। आयोजन की सभी तैयारियों की समीक्षा हेतु आंध्र भक्त श्रीराम मंदिर में इस्कॉन प्रमुख स्वामी पद्मनाभजगन्नाथ दास की अध्यक्षता में बैठक हुई। करीब 1000 स्वयंसेवक रथ संचालन की जिम्मेदारी संभालेंगे। रथ यात्रा में हजारों हजार की संख्या श्रद्धालुओं शामिल होंगे।

गढ़वा सदर अस्पताल परिसर के सरकारी आवास में डॉक्टर की पत्नी ने की आत्महत्या

गढ़वा (आजाद सिपाही)। गढ़वा सदर अस्पताल में परिसर में अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ तरुण की पत्नी सुषमा देवी (कुमारी) 25 वर्ष ने अस्पताल परिसर स्थित अपने सरकारी आवास में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के बाद पूरे अस्पताल परिसर में सनसनी फैल गयी और गमगीन माहौल व्याप्त हो गया। मिली जानकारी के अनुसार, घटना के वक्त डॉ तरुण अस्पताल की ओपीडी में मरीजों का इलाज कर रहे थे। इस दौरान उनके आवास पर कुछ पारिवारिक सदस्य भी मौजूद थे। ड्यूटी समाप्त होने के बाद जब वे अपने आवास लौटे, तो दरवाजा अंदर से बंद पाया गया। कई बार दस्तक देने के बावजूद कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर उन्होंने तत्काल सिविल सर्जन को सूचना दी और इसके बाद पुलिस को बुलाया गया। पुलिस की उपस्थिति में जब दरवाजा तोड़ा गया, तो अंदर का दृश्य देखकर सभी स्तब्ध रह गये। डॉ तरुण की पत्नी सुषमा का शव पंखे से लटका हुआ पाया गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। आत्महत्या के कारणों का अब तक कोई स्पष्ट खुलासा नहीं हुआ है। थाना प्रभारी ब्रिज कुमार ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

लंबित आवास कार्य प्रारंभ नहीं करने वाले लाभुकों के विरुद्ध होगी कार्रवाई: बीडीओ

विशुनपुरा (आजाद सिपाही)। विशुनपुरा प्रखंड के सदर पंचायत अंतर्गत 2023-24 एवं 2024-25 में मिले अबुआ आवास एवं पीएम आवास के पैसा लेने के बावजूद जो लाभुक आवास कार्य प्रारंभ नहीं किए हैं। उनके यहां बुधवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी सह अंचलाधिकारी राजेश कुमार, आवास समन्वयक निरंजन मिश्रा एवं पंचायत सेवक हुसैन अंसारी के द्वारा स्थल का निरीक्षण किया गया। वहीं सभी लाभुकों को यथाशिघ्र आवास कार्य प्रारंभ करने का निर्देश भी दिया गया। साथ ही एक सप्ताह के अन्दर निर्देश के अनुपालन कर आवास कार्य प्रारंभ नहीं करने वाले लाभुकों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाई करने की चेतावनी प्रखंड विकास पदाधिकारी राजेश कुमार के द्वारा दिया गया।

दूसरे राज्य में मजदूरी करने गये युवक की मौत

मृतक संतोष की फाइल फोटो।

हरिहरपुर (आजाद सिपाही)। मंगलवार की शाम कांडी प्रखंड के मझिगावां पंचायत स्थित पोखरा टोला में उस समय मातम छा गया, जब बेंगलुरु मजदूरी करने गये संतोष यादव का शव ताबूत में बंद होकर गांव पहुंचा। संतोष की असामयिक मौत की खबर ने पूरे गांव को गमगीन कर दिया। बताया जाता है कि 35 वर्षीय संतोष यादव, पिता कामेश्वर यादव, रोजी-रोटी के लिए बेंगलुरु के सरजापुर क्षेत्र स्थित एक नंदीरा निर्माण कंपनी में मजदूरी कर रहा था। शनिवार को कार्य के दौरान वह छः मंजिला ऊंची इमारत से नीचे गिर गया, जिससे उसके शरीर के कई हिस्सों में गंभीर चोटें आईं और अत्यधिक रक्तस्राव हुआ। इलाज के लिए ले जाते समय रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गयी। परिजनों को घटना की सूचना मिलते ही पूरे गांव में कोहराम मच गया। मृतक के बूढ़े माता-पिता व पत्नी ने बेंगलुरु जाकर कानूनी प्रक्रिया पूरी की और मंगलवार देर शाम उसका पार्थिव शरीर ताबूत में लेकर गांव लौटे। मृतक संतोष अपने पीछे वृद्ध माता-पिता, पत्नी, दो पुत्र व एक पुत्री को छोड़ गया है। घटना की सूचना मिलते ही पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि शंभूनाथ शाह, उपमुखिया श्रवण पासवान बीडीसी प्रतिनिधि सुनील यादव, वार्ड सदस्य सत्य। प्रकाश चौबे समेत कई जनप्रतिनिधियों ने शोक-संतप्त परिवार से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाया।

घघरी गांव में राशन वितरण में भारी अनियमितता की शिकायत, डीलर के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग

सगमा (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत घघरी गांव में जन वितरण प्रणाली के तहत राशन वितरण में भारी अनियमितता की शिकायत सामने आई है। गांव के दर्जनों राशन कार्ड धारि दुखी राम, छोटेलाल, सुनीता देवी, चिंता देवी, त्रिपुरारी भुइयां, कामेश्वसर राम, भुखनी देवी, राजू धीरकार, राजा राम, माधव यादव, लालमोहन गुप्ता, मनमित यादव, मुन्नी कुंवर, सोनिया देवी, आनंद गुप्ता बसंत कुमार, मंगरी देवी, सरस्वती देवी, फूलमती देवी, कृष्णा यादव सहित अन्य कार्डधारियों ने बताया कि पिछले दो से तीन महीने से वे नियमित रूप से अंगूठा लगवाने के बावजूद उन्हें राशन नहीं दिया जा रहा है। इस गंभीर लापरवाही को लेकर ग्रामीणों में जबरदस्त आक्रोश है। राशन कार्ड धारी का आरोप है कि मई, जून, जुलाई महीने का कर कार्डधारियों से अंगूठा लगवा कर डीलर सुचिता देवी के द्वारा राशन नहीं दिया गया है। डीलर टाल मटोल करते हुए गोदाम से एक ही माह का राशन गोदाम से मिला है। वहीं पर उपस्थित मुखिया प्रतिनिधि अशोक राम के द्वारा गोदाम मैनेजर इरफान अंसारी से फोन के माध्यम से जानकारी लिया गया, तो पता चला कि गोदाम के द्वारा डीलर को जून और जुलाई दोनों माह का राशन डीलर को दे दिया गया है। वहीं राशन कार्ड धारियों का कहना कि डीलर सुचिता देवी की ओर से लगातार बहानेबाजी की जाती है। ग्रामीणों का यह भी आरोप है कि डीलर के सुचिता देवी के पति बिंदा राम, जो अक्सर दुकान का संचालन करते हैं, शराब के नशे में धुत होकर राशन लेने आये लोगों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं और गाली-गलौज तक करते हैं। महिलाओं ने बताया कि उन्हें अपमानित किया जाता है और डांट-फटकार के डर से कई लोग दुकान पर जाने से कतराते हैं। स्थानीय ग्रामीणों ने प्रखंड विकास पदाधिकारी और आपूर्ति विभाग से मांग की है कि डीलर के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये।

डोरी बीनने गयी महिला की मिली निर्वस्त्र लाश, रेप के बाद हत्या की आशंका

मृतका रेखा देवी की फाइल फोटो।

विशुनपुरा (आजाद सिपाही)। विशुनपुरा थाना क्षेत्र में एक महिला की संदिग्ध हालात में मौत ने पूरे इलाके को दहला दिया है। मृतका की पहचान विशुनपुरा थाना क्षेत्र के सारांग निवासी रेखा देवी (उम्र लगभग 34 वर्ष), पति राकेश चंद्रवंशी के रूप में हुई है। मृतका अपने पीछे तीन छोटे-छोटे बच्चों को छोड़ गयी हैं, जिनमें 13 वर्षीय गुंजा कुमारी, 5 वर्षीय दुर्गेश और 4 वर्षीय आयुष शामिल हैं। रेखा देवी के पति राकेश चंद्रवंशी ने जानकारी दी कि रविवार रात लगभग 11 बजे तक उनकी पत्नी घर पर ही थी। रेखा रोजाना की तरह रात में पास के गांव के किनारे डोरी बीनने जाती थी। रात 11 बजे के बाद वह डोरी बीनने के लिए निकली, लेकिन अगली सुबह तक घर नहीं लौटी। मंगलवार की सुबह करीब 10 बजे ग्रामीणों ने गांव से लगभग 400 मीटर दूर केवाल बांध के पास एक महिला का शव नग्न अवस्था में देखा, जिसकी आंख फूटी हुई थी, मुंह में कपड़ा ठूंसा हुआ था और शरीर पर खासकर प्राइवेट पार्ट पर मारपीट के गंभीर निशान थे। शव की स्थिति देख कर आशंका जतायी जा रही है कि महिला के साथ पहले दुष्कर्म किया गया और फिर हत्या कर दी गयी। इस संबंध में थाना प्रभारी राहुल कुमार ने कहा कि पीड़ित के परिजन के अज्ञात लोगों के विरुद्ध थाने में आवेदन दिया गया है। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है और आरोपियों की तलाश में छापेमारी जारी है।

प्रपत्र VII
झारखण्ड सरकार,राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग

(भू–अर्जन निदेशालय) या
समाहर्त्ता या समुचित सरकार
अधिघोषणा
(अधिनियम–30/2013 की धारा–19(1) के अधीन)
संख्या–414/भू0अ0 दिनांक–21/06/2025

चूंकि झारखण्ड सरकार/समाहर्त्ता को यह प्रतीत होता है कि सार्वजनिक प्रयोजनार्थ यथा परियोजना–**तिलैया से बगड़ो भाया जयनगर पथ के पुर्ननिर्माण हेतु** ग्राम–सोन्देडीह थाना–कोडरमा, थाना सं0–259, अंचल–कोडरमा, जिला–कोडरमा में कुल– 0.9230 एकड़ यानि–0.3735 हे0 भूमि अपेक्षित है।

इसलिए अधिघोषणा किया जाता है कि उपर्युक्त परियोजना के लिए अर्जन के अधीन एक भू–खण्ड है, जो मानक माप में कमोवेश–0.9230 एकड़ यानि–0.3735 हेक्टेयर है और जो ग्राम–सोन्देडीह थाना–कोडरमा, थाना सं0–259, अंचल–कोडरमा, जिला–कोडरमा में है, जिसका विवरण निम्नलिखित है:–

ग्राम–सोन्देडीह थाना–कोडरमा, थाना सं0–259, अंचल–कोडरमा, जिला–कोडरमा।

क्रम सं0	खाता नं0	सर्वे भूखंड सं0	स्वामित्व का प्रकार	सर्वे किस्म (भूमि का प्रकार)	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखंड सं0)			
							उ0	द0	पू0	प0
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	8	277	रैयती	टांड	0.0070	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकू वो बाबु महतो पेशरान खेमचन्द महतो वो मासोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो।	प्लॉट 277 अंश	रास्ता	प्लॉट 279	सीमाना मौजा डुमरडीहा
2	8	279	रैयती	बाद	0.020		प्लॉट 279 अंश	रास्ता	प्लॉट 280	प्लॉट 277
3	5	280	रैयती	टांड	0.010	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादव पिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	प्लॉट 280 अंश	रास्ता	प्लॉट 281	प्लॉट 279
4	5	281	रैयती	टांड	0.0050		प्लॉट 281 अंश	रास्ता	प्लॉट 282	प्लॉट 280
5	5	282	रैयती	टांड	0.0060		प्लॉट 282 अंश	रास्ता	प्लॉट 283	प्लॉट 281
6	5	283	रैयती	टांड	0.0090		प्लॉट 283 अंश	रास्ता	प्लॉट 284	प्लॉट 282
7	18	284	रैयती	टांड	0.0090	कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादव पिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो रामु यादव पिता–डेगन महतो	प्लॉट 284 अंश	रास्ता	प्लॉट 285	प्लॉट 283
8	1	285	रैयती	टांड	0.0070	मसो0 बन्धनी पति–बंशी महतो वो कौशल्या देवी पति–तुलसी यादव वो बुलाकी यादव पिता–अमरीत महतो वो पिन्टू कुमार पिता–मनी यादव वो लक्ष्मण यादव वो किशोर यादव वो बिनोद यादव वो संतोष यादव पिता–प्रभु यादव वो विक्की यादव पिता–जगन यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–बंशी यादव वो प्रयाग यादव पिता–धानो महतो	प्लॉट 285 अंश	रास्ता	प्लॉट 286	प्लॉट 284
9	20	286	रैयती	टांड	0.0080	मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राजकूमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन वो अकल महतो पिता.......वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 286 अंश	रास्ता	प्लॉट 287	प्लॉट 285
10	20	287	रैयती	टांड	0.0050		प्लॉट 287 अंश	रास्ता	प्लॉट 288	प्लॉट 286
11	20	288	रैयती	टांड	0.0140		प्लॉट 288 अंश	रास्ता	प्लॉट 289	प्लॉट 287
12	11	289	रैयती	टांड	0.0070	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 289 अंश	रास्ता	प्लॉट 292	प्लॉट 288
13	8	292	रैयती	टांड	0.0380	म्सोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकू वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 292 अंश	रास्ता	प्लॉट2 92 अंश	प्लॉट 289
14	5	393	रैयती	टांड	0.0070	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादव पिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	प्लॉट 393 अंश	रास्ता	प्लॉट 394	रास्ता
15	5	394	रैयती	बाद	0.0090		प्लॉट 394 अंश	रास्ता	प्लॉट 397	प्लॉट 393
16	5	397	रैयती	बाद	0.0140		प्लॉट 397 अंश	रास्ता	प्लॉट 623	प्लॉट 394
17	18	401	रैयती	बाद	0.0030	कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादव पिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो रामु यादव पिता–डेगन महतो	रास्ता	प्लॉट 401 अंश	रास्ता	प्लॉट 402
18	11	402	रैयती	बाद	0.0010	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	रास्ता	प्लॉट 402 अंश	प्लॉट 401	प्लॉट 403
19	18	411	रैयती	बाद	0.0170	कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादवपिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो रामु यादव पिता–डेगन महतो	रास्ता	प्लॉट 411 अंश	प्लॉट 411 के अंश	सीमानाम ैजाडुमर डीहा
20	6	503	रैयती	बाद	0.0070	झरी गोप वल्द हेमन गोप	रास्ता	प्लॉट 503 अंश	प्लॉट 504	प्लॉट 502
21	8	504	रैयती	टांड	0.0090	जागेश्वर यादव पिता–शिवल यादव वो देवन्ती देवी पति–युगल यादव वो कुन्ती देवी पति–भुनेश्वर यादव	रास्ता	प्लॉट 504 अंश	प्लॉट 505 अंश	प्लॉट 503
22	5	505	रैयती	बाद	0.0220	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादव पिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	रास्ता	प्लॉट 505 अंश	प्लॉट 512	प्लॉट 504
23	5	512	रैयती	बाद	0.0140		रास्ता	प्लॉट 512 अंश	प्लॉट 513	प्लॉट 505
24	5	513	रैयती	बाद	0.0210		रास्ता	प्लॉट 513 अंश	प्लॉट 514	प्लॉट 512
25	5	514	रैयती	बाद	0.0090		रास्ता	प्लॉट 514 अंश	प्लॉट 515	प्लॉट 513
26	5	515	रैयती	बाद	0.0020		रास्ता	प्लॉट 515 अंश	रास्ता	प्लॉट 514
27	8	565	रैयती	बाद	0.0150	बाबुलाल यादव पिता–सोहर महतो वगैरह	रास्ता	प्लॉट 565 अंश	प्लॉट 566	प्लॉट 564
28	8	566	रैयती	बाद	0.0290	भुनेश्वर यादव पिता–दर्शन यादव वो नुनू महतो पिता–गया यादव	रास्ता	प्लॉट 566 अंश	प्लॉट 1738	प्लॉट 565
29	20	574	रैयती	बाद	0.0150	मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राजकूमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन वो अकल महतो पिता–.....वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 574 अंश	रास्ता	प्लॉट 567	प्लॉट 575
30	20	575	रैयती	बाद	0.0070		प्लॉट 575 अंश	रास्ता	प्लॉट 574	प्लॉट 578
31	11	583	रैयती	बाद	0.0010	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 583 अंश	रास्ता	प्लॉट 579	प्लॉट 584
32	8	584	रैयती	बाद	0.0040	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकू वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 584 अंश	रास्ता	प्लॉट 583	प्लॉट 585
33	8	585	रैयती	बाद	0.0070		प्लॉट 585 अंश	रास्ता	प्लॉट 584	प्लॉट 607
34	8	607	रैयती	बाद	0.0020		प्लॉट 607 अंश	रास्ता	प्लॉट 585	प्लॉट 608
35	5	608	रैयती	बाद	0.0010	देवन्ती देवी पति–युगल यादव	प्लॉट 608 अंश	रास्ता	प्लॉट 607	प्लॉट 610
36	5	610	रैयती	चिरा–मीठा	0.0010	भीखी यादव पिता–जगन यादव	प्लॉट 610 अंश	रास्ता	प्लॉट 608	प्लॉट 612
37	5	612	रैयती	बाद	0.0020	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादव पिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	प्लॉट 612 अंश	रास्ता	प्लॉट 610	प्लॉट 613
38	5	613	रैयती	बाद	0.0070		प्लॉट 613 अंश	रास्ता	प्लॉट 612	प्लॉट 622
39	8	622	रैयती	बाद	0.0180	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकू वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 622 अंश	रास्ता	प्लॉट 613	प्लॉट 623
40	8	623	रैयती	बाद	0.0120		प्लॉट 623 अंश	रास्ता	प्लॉट 622	प्लॉट 397
41	18	1539	रैयती	टांड	0.0110	कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादव पिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो रामु यादव पिता–डेगन महतो	प्लॉट 1539 अंश	1556	प्लॉट 1540	प्लॉट 1557
42	18	1540	रैयती	टांड	0.0150		प्लॉट 1540 अंश	प्लॉट 1556	प्लॉट 1541	प्लॉट 1539
43	11	1541	रैयती	टांड	0.0060	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 1541 अंश	प्लॉट 1556	प्लॉट 1541 अंश	प्लॉट 1540
44	8	1542	रैयती	टांड	0.0280	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकु वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 1542 अंश	प्लॉट 1554	प्लॉट 1543	प्लॉट 1554,1555 एवं 1556
45	8	1543	रैयती	टांड	0.0110		प्लॉट 1543 अंश	प्लॉट 1554	प्लॉट 1544	प्लॉट 1542
46	8	1544	रैयती	टांड	0.0110		प्लॉट 1544 अंश	प्लॉट 1554	प्लॉट 1545	प्लॉट 1543
47	8	1545	रैयती	टांड	0.0020		प्लॉट 1545 अंश	प्लॉट 1554	प्लॉट 1545	प्लॉट 1544
48	8	1555	रैयती	टांड	0.0260		प्लॉट 1556	प्लॉट 1554	प्लॉट 1542	रास्ता
49	8	1556	रैयती	टांड	0.0430		प्लॉट1539एवं 1540	प्लॉट 1555	प्लॉट 1542	रास्ता
50	20	1557	रैयती	टांड	0.025	मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राजकूमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन वो अकल महतो पिता–.....वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 1557 अंश	रास्ता	प्लॉट 1539	प्लॉट 1558
51	20	1558	रैयती	टांड	0.010		प्लॉट 1558 अंश	रास्ता	प्लॉट 1557	प्लॉट 1559
52	20	1559	रैयती	टांड	0.0140		प्लॉट 1559अंश	रास्ता	प्लॉट 1558	प्लॉट 1560
53	5	1560	रैयती	टांड	0.0180	मुन्द्रीका देवी पति–खुशरू यादव वो छतरू यादव पिता–रघु गोप वो दर्शन यादव पिता–भोला गोप वो सहदेव यादव वो धानेश्वर यादव वो महादेव यादव वो कार्तिक यादवपिता–रामसहाय यादव वो बासदेव यादव पिता–लट्टु महतो	प्लॉट 1560अंश	रास्ता	प्लॉट 1559	प्लॉट 1564
54	8	1564	रैयती	टांड	0.0150	मसोमात ठगनी जौजे ललीत महतो वो बिसुन गोप वो बबुन गोप पेशरान रेवल गोप वो मोसोमात बुधनी दोख्तर जोवी गोप वो हेमन महतो वो नन्हकू वो बाबु पेशरान खेमचन्द महतो वो मोसोमात जगीया जोजे परेम महतो वो पुनीत वल्द जागो वो शीतवा वो चमना वो टेकवा पेशरान वीशु वो भीखो वो बुधन पेशरान बेचु वो मसो0 भीखनी जौजे खेमन वो धुपाल वो चमन वो मुरत वो नीरो पेशरान अनुप महतो	प्लॉट 1564अंश	रास्ता	प्लॉट 1560	प्लॉट 1565
55	1	1565	रैयती	टांड	0.010	गीता देवी पति–जागेश्वर यादव वो मसो0 बन्धनी पति–बंशी महतो वो कौशल्या देवी पति–तुलसी यादव वो बुलाकी यादव पिता–अमरीत महतो वो पिन्टू कुमार पिता–मनी यादव वो लक्ष्मण यादव वो किशोर यादव वो बिनोद यादव वो संतोष यादव पिता–प्रभु यादव वो विक्की यादव पिता–जगन यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–बंशी यादव वो प्रयाग यादव पिता–धानो महतो	प्लॉट 1565अंश	रास्ता	प्लॉट 1564	प्लॉट 1566
56	1	1566	रैयती	टांड	0.0140		प्लॉट 1566अंश	रास्ता	प्लॉट 1565	प्लॉट 1567
57	1	1567	रैयती	टांड	0.0090		प्लॉट 1567 अंश	रास्ता	प्लॉट 1566	प्लॉट 1568
58	20	1568	रैयती	टांड	0.0280	मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राजकुमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन यादव वो अकल महतो पिता–......वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 1568अंश	रास्ता	प्लॉट 1567	प्लॉट 1569
59	20	1569	रैयती	टांड	0.0160		प्लॉट 1569 अंश	रास्ता	प्लॉट 1568	प्लॉट 1573
60	11	1573	रैयती	टांड	0.0340	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 1573 अंश	रास्ता	प्लॉट 1569	प्लॉट 1574
61	18	1574	रैयती	टांड	0.0150	बंधनी देवी पति–बंशी यादव वो कैलाश यादव पिता–तुलसी यादव वो रेशमन यादव वो बालेश्वर यादव पिता–रिझो महतो वो रितलाल यादव वो प्रकाश यादव वो शंम्भु यादव पिता–डेगन महतो	प्लॉट 1574 अंश	रास्ता	प्लॉट 1573	प्लॉट 1577
62	1	1577	रैयती	टांड	0.0390	लिलावती देवी पति–भुनेश्वर यादव	प्लॉट 1577अंश	रास्ता	प्लॉट 1574	प्लॉट 1578
63	20	1578	रैयती	टांड	0.0240	भोला चरण पिता–लालधारी वो मोहनलाल यादव वो सहदेव यादव पिता–कारू यादव वो गुरूसहाय यादव वो भोला यादव पिता–लालधारी यादव वो बिरेन्द्र यादव वो राज कुमार यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–रूपन यादव वो गणपत पिता–खेमन वो अकल महतो पिता–...... वो भुनेश्वर यादव वो बालेश्वर यादव वो लखन यादव पिता–दर्शन यादव वो सखिया देवी पति–डीलो यादव वो रामेश्वर यादव पिता–रूपन यादव वो अशोक यादव वो रंजीत यादव वो गौतम यादव पिता–सुरेन्द्र यादव वो जगदीश यादव पिता–लिलो यादव वो भीखन यादव वो मुंशी यादव वो युगल यादव पिता–बोधी यादव वो जागेश्वर यादव पिता–बंधन यादव वो तुलसी यादव वो चन्दर यादव पिता–भातु यादव वो कोसुम देवी पति–जीतन यादव वो नुनू महतो पिता–चमन महतो वो वोजीर महतो पिता–चोकन महतो	प्लॉट 1578 अंश	रास्ता	प्लॉट 1577	प्लॉट 1580
64	20	1579	रैयती	बाद	0.0120		प्लॉट 1579 अंश	रास्ता	प्लॉट 1580	रास्ता
65	20	1580	रैयती	टांड	0.0360		प्लॉट 1580 अंश	रास्ता	प्लॉट 1578	प्लॉट 1579
66	1	1726	रैयती	चीरामीठा	0.0010	जसीया देवी पति–रामेश्वर यादव	प्लॉट 1726 अंश	रास्ता	प्लॉट 1728	प्लॉट 1725
67	1	1728	रैयती	टांड़	0.003	मसो0 बन्धनी पति–बंशी महतो वो कौशल्या देवी पति–तुलसी यादव वो बुलाकी यादव पिता– अमरीत महतो वो पिन्टू कुमार पिता–मनी यादव वो लक्ष्मण यादव वो किशोर यादव वो बिनोद यादव वो संतोष यादव पिता–प्रभु यादव वो विक्की यादव पिता–जगन यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–बंशी यादव वो प्रयाग यादव पिता–धानो महतो	प्लॉट 1728	रास्ता	प्लॉट 1729	प्लॉट 1729
68	1	1729	रैयती	टांड़	0.0030		प्लॉट 1729 अंश	रास्ता	प्लॉट 1730	प्लॉट 1728
69	1	1730	रैयती	टांड़	0.0060		प्लॉट 1730 अंश	रास्ता	प्लॉट 1731	प्लॉट 1729
70	11	1731	रैयती	बाद	0.0170	तुला महतो वल्द–सेवा महतो	प्लॉट 1731अंश	रास्ता	रास्ता	प्लॉट 1730
71	8	1735	रैयती	टांड	0.0010	जागेश्वर यादव वो महावीर यादव वो बासुदेव यादव पिता–बिहारी यादव	रास्ता	प्लॉट 1735 अंश	प्लॉट 1734	प्लॉट 1736
72	1	1736	रैयती	टांड	0.0010	मसो0 बन्धनी पति–बंशी महतो वो कौशल्या देवी पति–तुलसी यादव वो बुलाकी यादव पिता– अमरीत महतो वो पिन्टू कुमार पिता–मनी यादव वो लक्ष्मण यादव वो किशोर यादव वो बिनोद यादव वो संतोष यादव पिता–प्रभु यादव वो विक्की यादव पिता–जगन यादव वो सुरेन्द्र यादव पिता–बंशी यादव वो प्रयाग यादव पिता–धानो महतो वो बंधनी देवी पति–बृधू यादव वो प्रकाश यादव पिता–बंशी यादव	रास्ता	प्लॉट 1736 अंश	प्लॉट 1735	प्लॉट 1737
73	1	1737	रैयती	टांड	0.0040		रास्ता	प्लॉट 1737 अंश	प्लॉट 1736	प्लॉट 1738
74	1	1738	रैयती	टांड	0.0140		रास्ता	प्लॉट 1738 अंश	प्लॉट 1737	प्लॉट 566
	कुल:–				0.9230					

यह अधिघोषणा हितबद्ध व्यक्तियों की आपत्तियों के सुनने और अधिनियम सं0–30/3013 की धारा 15 में प्रदत्त यथा उपबंधित सम्यक जांच के पश्चात् किया गया है। भूमि अर्जन के कारण पुनर्व्यवस्थापन के लिए संभावित परिवारों की संख्या जिनके लिए पुनर्व्यवस्थापन के क्षेत्र चिहिन्त किये गयेहै, जिसकी संक्षिप्त विवरणी निम्नवतहै:–

ग्राम–सोन्देडीह थाना–कोडरमा, थाना सं0–259, अंचल–कोडरमा, जिला–कोडरमा कुल रकवा–0.9230 एकड़ यानि–0.3735 हेक्टेयर भूमि अर्जन पदाधिकारी, कोडरमा के कार्यालय में किसी कार्य दिवस के दिन भूमि योजना का निरीक्षण किया जा सकता है।

पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन योजना के सार नीचे दिये गये हैं:–**शून्य**

ह0/–
समुचित सरकार–सह–
उपायुक्त, कोडरमा

PR 355935 Land Reforms(25-26).D

भाजपा ने आपातकाल की बरसी पर कांग्रेस की आलोचना की

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा 25 जून 1975 को लगाये गये आपातकाल की 50वीं बरसी पर भारतीय जनता पार्टी ने बुधवार को गुदरी बाजार स्थित खेमराज स्मृति भवन में प्रेस कांफ्रेंस, सेमिनार एवं अखबार कतरनों की प्रदर्शनी लगाकर कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष मनीर उरांव ने की। मुख्य अतिथि बोकारो विधायक बिरंचि नारायण ने कहा कि इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल थोप कर लोकतंत्र का गला घोंटने का काम किया। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे बड़ी हत्या थी। उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता बचाने के लिए संविधान में कई संशोधन किए और न्यायपालिका, विधायिका व मीडिया जैसे लोकतंत्र के स्तंभों को कमजोर किया। विधायक ने राहुल गांधी पर भी निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस नेतृत्व पीढ़ी दर पीढ़ी संविधान को जेब में रखकर केवल अपने स्वार्थ के लिए देश की छवि विदेशों में खराब करता है।

लेवी वसूलते दो उग्रवादी गिरफ्तार

30 हजार रुपये नकद, मोबाइल और मोटरसाइकिल बरामद, दो अलग-अलग मामलों में थी तलाश

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। उग्रवादी संगठन पीएलएफआई के खिलाफ पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। कुडू थाना क्षेत्र में चल रहे एक पुल निर्माण कार्य से लेवी वसूली कर रहे संगठन के दो उग्रवादियों को पुलिस ने रंगेहाथ गिरफ्तार किया है। पुलिस गिरफ्त में आये उग्रवादियों की पहचान खूंटी निवासी निखिल मुंडा उर्फ पिन्टू और सुनिल सांगा के रूप में किया गया है। गिरफ्तार आरोपियों के पास से लेवी के 30 हजार रुपये नकद, एक मोबाइल फोन और एक बजाज पल्सर मोटरसाइकिल बरामद की गयी है। इस संदर्भ में पुलिस अधीक्षक सादिक अनवर रिजवी ने बताया कि पलामू के रहनेवाले वादी नेयाज अहमद खान के लिखित आवेदन पर

पुलिस ने पहले कुडू थाना कांड संख्या 13/25, दिनांक 05.02.2025, धारा 308(2)/308(4) भान्यासं एवं 17 सीएलए एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था। वादी से पीएलएफआइ के नाम पर लेवी की मांग की गयी थी, साथ ही वाट्सएप के माध्यम से संगठन का पर्चा भी भेजा गया था। बाद में लेवी की मांग दोबारा की गयी, और मांग पूरी नहीं होने पर लावागाई स्थित पुल निर्माण स्थल पर आगजनी की घटना को अंजाम दिया गया। मौके पर पीएलएफआइ संगठन का पर्चा भी छोड़ा गया। इस घटना को लेकर कुडू थाना में प्राथमिकी दर्ज की गयी थी।

उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि उग्रवादी वादी से लेवी की रकम लेने आने वाले हैं। तत्पश्चात अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, किस्को वेदांत शंकर के नेतृत्व में छापामारी दल गठित किया गया। पुलिस निरीक्षक लोहरदगा अंचल, थाना प्रभारी कुडू व जोबांग, तकनीकी शाखा, सैट-78 और सशस्त्र बल के सहयोग से छापामारी कर उग्रवादियों को 30,000 रुपये लेवी की रकम लेते वक्त गिरफ्तार किया गया।गिरफ्तार अभियुक्तों को 25 जून 2025 को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। पुलिस अन्य संभावित संलिप्त व्यक्तियों की तलाश में जुटी है। छापामारी दल में वेदांत शंकर, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, किस्को, सुधीर प्रसाद साहू, पुलिस निरीक्षक, लोहरदगा अंचल, मनोज कुमार, थाना प्रभारी, कुडू, हर्षवर्धन कुमार सिंह, थाना प्रभारी, जोबांग, कुन्दन कुमार रवानी, अश्विनी कुमार राणा, प्रकाश कुमार, तकनीकी शाखा, सैट-78 एवं अन्य सशस्त्र बल शामिल थे।

चाइनीज एप का प्रयोग कर चकमा दे रहे थे नक्सली

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। पुलिस गिरफ्त में आये पीएलएफआइ नक्सली निखिल मुंडा और सुनील सांगा ने अपने नक्सली संगठन के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण खुलासे पुलिस के समक्ष किया है। इन उग्रवादियों की तलाश पुलिस को लंबे समय से थी पर मोबाइल फोन में चाइनीज एप का कथित प्रयोग कर पुलिस को चकमा दे रहे थे। इस ऐप में नक्सलियों का स्थान और लोकेशन पल-पल बदलता है। धमकी लोहरदगा से देने पर दूसरे राज्य का लोकेशन मिलता था। पुलिस ने टेक्निकल सेल के माध्यम से इन्हें दबोचा। दरअसल कई माह बाद नक्सली तीन लाख की राशि वसूलने पहुंचे थे। जिसे मौके पर पुलिस ने दबोच लिया।

संदिग्धों की सूचना पुलिस को दें: एसपी

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। पुलिस अधीक्षक सादिक अनवर रिजवी ने कहा कि, नक्सली और अपराध की घटनाओं को नियंत्रित करने में जन भागीदारी नितांत आवश्यक है। जन सहयोग के बिना असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण लगाना मुश्किल होगा। अपराध व उग्रवाद से जुड़े संदिग्धों की सूचना और जानकारी को लोग पुलिस को देना सुनिश्चित करें तो, बेहतर समाज के निर्माण में मदद मिलेगी।

लोहरदगा में चोरी की योजना बना रहे दो अपराधी हथियार के साथ गिरफ्तार

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। शहर में लगातार हो रही चोरी की घटनाओं को लेकर पुलिस ने गंभीर रुख अपनाते हुए कार्रवाई तेज कर दी है। इसी क्रम में बीती रात थाना क्षेत्र के जुरिया इलाके में चोरी की योजना बना रहे दो संदिग्ध युवकों को पुलिस ने हथियार के साथ धर दबोचा। उनके पास से चोरी का जेनरेटर, मोटरसाइकिल, मोबाइल फोन सहित अन्य सामान भी बरामद हुआ है। पुलिस गिरफ्त में आये अपराधी की पहचान खूंटी निवासी सतोष उरांव व गुमला निवासी जीतराम उरांव के रूप में किया गया है। अपराधियों के पास से एक देशी पिस्टल, 315 बोर की एक जिंदा गोली, पेचकस और अन्य औजार, भारत कंपनी का 7.5 केवी का जनरेटर, चोरी की गयी बजाज डिस्कवर मोटरसाइकिल और दो मोबाइल फोन बरामद किया गया है। जानकारी के अनुसार पुलिस अधीक्षक सादिक अनवर रिजवी के निर्देश पर थाना प्रभारी रत्नेश मोहन ठाकुर के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने सोमवार-मंगलवार की दरम्यानी रात गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी की। पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि कुछ संदिग्ध युवक जुरिया स्थित राजा बंगला के आसपास घूम रहे हैं और किसी बड़ी वारदात की फिराक में हैं। सूचना मिलते ही पुलिस निरीक्षक रत्नेश मोहन ठाकुर, सअनि अमरनाथ पांडेय व सशस्त्र बल की टीम मौके पर पहुंची। रात करीब 1:20 बजे जब टीम चण्डी स्थान के समीप पहुंची, तो देखा कि मो यासीन अंसारी के घर के गली वाले दरवाजे पर तीन-चार युवक पेचकस, रेंच व रॉड से ग्रील तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। पुलिस को देखते ही वे भागने लगे, लेकिन दो युवकों को दौड़ाकर पकड़ लिया गया। पुलिस अन्य फरार अभियुक्तों की तलाश में जुट गयी है। छापेमारी टीम में रत्नेश मोहन ठाकुर (थाना प्रभारी), सअनि अमरनाथ पांडेय, चन्द्रदीप मेहता, मुकेश शर्मा, सत्यकिशोर समेत अन्य शामिल थे।

भंडरा में रथ मेला की तैयारी जोरों पर

भंडरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड में आगामी 27 जून को लगने वाली नौ दिवसीय ऐतिहासिक रथयात्रा मेला की तैयारियाँ जोरों पर है। भंडरा में ऐतिहासिक रथयात्रा मेला को लेकर स्थानीय प्रशासन भी अपनी ओर से तैयारियों में जुटा है। भंडरा थाना प्रभारी अरविंद कुमार सिंह द्वारा रथयात्रा मेला में शांति व्यवस्था को लेकर बेड़ो-लोहरदगा मुख्य पथ के मसमानो मोड़, नौडीहा चौक और आकाशी-भंडरा मुख्य मार्ग अखिलेश्वर धाम गेट के समीप बड़े वाहनों के प्रवेश पर रोक लगाने के लिए बैरियर का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। जबकि रथयात्रा मेला आयोजन समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा भी मेले में शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए स्वयं सेवी दल का गठन किया जा रहा है। इधर भगवान जगनाथ, भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा को ठाकुरबाड़ी से मौसीबाड़ी तक ले जाने के लिए भव्य रथ का निर्माण कार्य अंतिम चरण में है। थानेदार अरविंद सिंह का कहना है कि चलती रथयात्रा मेला को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह से सतर्क है और थाना क्षेत्र में चौकस व्यवस्था कर रखी है। मेला के सफल आयोजन को लेकर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की जाएगी। इसके लिए जिला मुख्यालय से पुलिस बल की मांग की गयी है। बीडीओ प्रतिमा कुमारी सीओ दुर्गा कुमार ने कहा कि मेला को लेकर दंडाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गयी है। दंडाधिकारी और पुलिस के अधिकारी शस्त्र बल के साथ मेला का मुआयना करते रहेंगे। वहीं मेला आयोजन समिति के प्रमुख राधा मोहन शर्मा ने बताया कि चलती रथ मेला में 27 जून को अपराह्न एक बजे भगवान जगनाथ, भाई बलभद्र व बहन सुभद्रा को रथ में बैठाकर सैकड़ों भक्तों द्वारा रथ खींचा जाएगा। जो रथ को अखिलेश्वर धाम स्थित मौसीबाड़ी पहुंचायेंगे। जहां भगवान जगरनाथ भक्तों को अपने दसो रूपों का दर्शन देने के बाद वापस ठाकुर बाड़ी लौटेंगे।

लोगों के प्रति संवेदनशील रहें पदाधिकारी : डीसी

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। जिला विकास समन्वय समिति की बैठक बुधवार को डॉ ताराचंद की अध्यक्षता में समाहरणालय सभाकक्ष में आयोजित हुई। बैठक में उपायुक्त ने समीक्षा में पदाधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि सरकारी की योजनाएं जन-जन तक पहुंचे यही हमारी प्राथमिकता है। लोगों के प्रति संवेदनशील रहें और उनकी समस्याएं सुनें। स्वीकृत योजनाओं को निर्धारित अवधि में पूर्ण करें। किन्हीं की लापरवाही से किसी योजना को पूर्ण करने में अगर विलंब होता है तो यह कतई बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। आपकी एक लापरवाही से जिला की छवि खराब हो सकती है। अपनी जिम्मेवारी को समझें और ग्रामीणों से बेहतर संबंध रखें। बैठक में ग्रामीण कार्य विभाग अंतर्गत विभिन्न पथों के निर्माण की कार्यप्रगति की समीक्षा की गयी और संवेदक को समय से कार्य पूर्ण करने के लिए निर्देश दिया गया। समय पर कार्य नहीं करने वाले

संवेदक पर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। केरार-बुलबुल पथ निर्माण कार्य सितंबर माह तक पूर्ण करने का निदेश दिया गया। पेशरार प्रखंड में पुंदाग-हुसरू पथ में पुंदाग नदी पर उच्च स्तरीय पुल का निर्माण प्रारंभ करने का निदेश दिया गया। राष्ट्रीय उच्च पथ अंतर्गत कुडू-घाघरा पथ, बायपास रोड के कार्य प्रगति की समीक्षा की गयी। वन प्रमण्डल पदाधिकारी द्वारा सभी अंचल अधिकारियों को सुप्रीम कोर्ट से प्राप्त भूमि चिन्हितिकरण के आदेश से अवगत कराया। जिला कृषि पदाधिकारी को बीज वितरण का कार्य सौ प्रतिशत पूर्ण कराने का निर्देश दिया गया। पथ प्रमण्डल लोहरदगा के एकमात्र योजना नदिया मोड़-इरगांव, अरकोसा, रामपुर पथ निर्माण कार्य की समीक्षा की गई और निर्धारित अवधि में पूर्ण करा लिये जाने का निर्देश दिया गया। लघु सिंचाई के द्वारा जिला में निर्माणाधीन चेकडैम, तालाब जीर्णोद्धार व एससीए से संचालित कार्यो की समीक्षा करते हुए उन्हें पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया गया। बैठक मे उप विकास आयुक्त दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, वन प्रमण्डल पदाधिकारी अभिषेक कुमार, अपर समाहर्ता जितेंद्र मुण्डा, आइटीडीए परियोजना निदेशक सुषमा नीलम सोरेंग, अनुमंडल पदाधिकारी अमित कुमार समेत संबंधित तकनीकी व गैर तकनीकी जिला स्तरीय पदाधिकारीगण और अन्य उपस्थित थे।

भरण-पोषण नहीं देने पर पति को जेल

सेन्हा/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। सेन्हा थाना क्षेत्र के सेरेंगहातु तोड़ार पंचायत अंतर्गत बड़का टोली निवासी रोबिन उरांव को बुधवार को सेन्हा पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय के निर्देश पर जेल भेज दिया। थाना प्रभारी वारिश हुसैन ने जानकारी देते हुए बताया कि रोबिन उरांव पर उसकी पत्नी विनीता नाग ने भरण-पोषण नहीं देने का आरोप लगाया था। इस संबंध में विनीता नाग ने न्यायालय में याचिका दाखिल कर अपने और बच्चों के लिए भरण-पोषण की गुहार लगायी थी। न्यायालय ने रोबिन उरांव को आदेश दिया था कि वह प्रत्येक माह चार हजार रुपये भरण-पोषण के रूप में अपनी पत्नी को दे। परंतु जुलाई 2024 से लेकर अब तक उसने यह राशि नहीं दी थी। न्यायालय के आदेश की अवहेलना और भरण-पोषण राशि नहीं चुकाने के कारण रोबिन उरांव को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

काष्ठ नीलामी प्रक्रिया में 4.96 लाख राजस्व की प्राप्ति

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। वन प्रमंडल लोहरदगा अंतर्गत बुधवार को बक्सीडीपा स्थित वन विभाग के सभागार में आयोजित काष्ठ नीलामी प्रक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न हुई। वन प्रमंडल पदाधिकारी अभिषेक कुमार की अगुवाई में हुई इस नीलामी प्रक्रिया से विभाग को 4,96,300 का राजस्व प्राप्त हुआ है। वन विभाग के अधिकारियों ने जानकारी दी कि लोहरदगा वन क्षेत्र कार्यालय में शीशम, साल, आम, अकेशिया, यूकेलिप्टस, चकौण्डि, जामुन, डूमर बोटा, विविध बोटा जैसी विभिन्न प्रजातियों की लकड़ी भंडारित थी, जिसे 'जहां है, जैसी स्थिति में है' के आधार पर कुल 42 लॉट में नीलामी के लिए रखा गया था। इस नीलामी प्रक्रिया में कुल 10 डाकवक्ताओं ने भाग लिया और उच्चतम डाक लगाकर विभिन्न लॉट्स को खरीदा। नीलामी के लिए, सूचना पूर्व में 13 जून को विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम से जारी की गयी थी, जिसमें सर्वसाधारण, निर्बंधित आरा मिल मालिकों एवं निर्बंधित प्रकाष्ठ डीपू मालिकों को आमंत्रित किया गया था। नीलामी के दौरान फॉरेस्टर महावीर उरांव, रामलाल राम, डाकवक्ता इश्तेखार आलम, रेयाजुल अंसारी, रिजवान आलम, बारीक खान, तौफीक अंसारी, रौशन हजाम, राहुल कौशल, राम महली, राजा राम, समसेर आलम अंसारी समेत अन्य मौजूद थे। वन विभाग ने काष्ठ नीलामी के इस आयोजन को पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया बताते हुए कहा कि आगे भी समय-समय पर इस प्रकार की नीलामी की जाएगी ताकि विभागीय संसाधनों का समुचित उपयोग हो सके और राजस्व में वृद्धि हो।

मानव तस्करी के आरोप में महिला गिरफ्तार, तीन नाबालिग किये गये रेस्क्यू

लातेहार (आजाद सिपाही)। लातेहार एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग थाना लातेहार को मानव तस्करी के खिलाफ बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने जहां इस मामले में तस्करी के आरोप में एक महिला को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। वहीं दूसरी ओर तस्करी के लिए ले जा रहे तीन नाबालिग बच्चों को रेस्क्यू कर चाइल्ड होम भेज दिया गया है। गिरफ्तार महिला मनीषा पूर्ति पति रथ गंगाराम पूर्ति ग्राम तिरिलबुटा पोस्ट नाकाहासा, थाना मुफसिल जिला पश्चिमी सिंहभूम की रहने वाली है। इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए अहातु थाना प्रभारी नवीन कुमार ने बताया कि आरपीएफ नियंत्रण कक्ष बरकाकाना को गुप्त सूचना मिली की टाटानगर से जम्मूतवी जाने वाली ट्रेन में एक महिला कुछ नाबालिग बच्चों को लेकर कहीं जा रही है, जिसके बाद आरपीएफ सक्रिय हो गया और बरवाडीह में रेलवे स्टेशन में महिला को पकड़ लिया, जिससे पूछताछ करने करने पर उनसे कानपुर जाने की बात बताई। जिसके बाद महिला को आरपीएफ ने हिरासत में लिया और इसकी जानकारी अहातु थाना को दिया गया, अहातु थाना के द्वारा मामला दर्ज कर महिला को कल जेल भेज दिया गया। वहीं तीनों नाबालिग बच्चो को सही सलामत चाइल्ड हेल्प लाईन की निगरानी में रखा गया है। रेस्क्यू किए गय तीनों बच्चे पश्चिमी सिंहभूम जिले के रहने वाले हैं।

कस्तूरबा विद्यालय में वर्ग 6 में नामांकन के लिए चयनित छात्राओं की सूची जारी

बरवाडीह (आजाद सिपाही)। बरवाडीह प्रखंड मुख्यालय स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए वर्ग 6 में नामांकन प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी है। जिला शिक्षा पदाधिकारी ने प्रखंड चयन समिति द्वारा अनुमोदित नामों को स्वीकृति प्रदान करते हुए विद्यालय वार्डन को नामांकन प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया है। मिली जानकारी के अनुसार बीते दिनों प्रखंड चयन समिति की बैठक आयोजित की गयी थी। बैठक में वर्ग 6 में नामांकन हेतु प्राप्त आवेदनों में से 72 छात्राओं के नाम जिला शिक्षा पदाधिकारी को अनुमोदन हेतु भेजे गये थे। इसके पश्चात जिला शिक्षा पदाधिकारी ने अनुसूचित जनजाति की 50, अनुसूचित जाति की 12 और अत्यंत पिछड़ा वर्ग की 10 छात्राओं की सूची को स्वीकृति दी है। चयनित छात्राओं की सूची विद्यालय परिसर और प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी कार्यालय परिसर में चस्पा कर दी गयी है।

लेंसकार्ट फाउंडेशन ने 1105 जरूरतमंद लोगों को दिया चश्मा

आजाद सिाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता के नेतृत्व में लातेहार प्रखंड के परसही पंचायत सचिवालय में लेंस कार्ट फाउंडेशन द्वारा एक दिवसीय निःशुल्क चश्मा वितरण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ उप विकास आयुक्त सैय्यद रियाज अहमद, गणमान्य व्यक्तियों एवं उपस्थित पदाधिकारियों के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उप विकास आयुक्त के द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि उपायुक्त के मार्ग दर्शन में लातेहार प्रखंड के चिन्हित पंचायतों में लेंस कार्ट फाउन्डेशन, दिल्ली के द्वारा आयोजित पांच दिवसीय निःशुल्क नेत्र जांच शिविर में कुल 1800 लोगों का रजिस्ट्रेशन कर नेत्र परीक्षण किया गया था। विशेषज्ञ के जांच के आधार पर जिन व्यक्तियों को चश्मा की आवश्यकता पायी गयी थी। यह पहल लोगों को बेहतर दृष्टि प्रदान करने और उनकी जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के उद्देश्य से की गयी है। आगे उन्होंने कहा कि नेत्र हमारे शरीर का महत्वपूर्ण अंग है इसलिए हमें उनकी देखभाल में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। समय-समय पर अपनी आंखों की जांच करवानी चाहिए। उप विकास आयुक्त के द्वारा मौके पर उपस्थित सभी लोगों को नशा मुक्ति एवं मादक पदार्थों के रोकथाम हेतु शपथ ग्रहण करवाया गया। परसही पंचायत में आयोजित शिविर में उप विकास आयुक्त के द्वारा कुल 252 जरूरतमंद लोगों के बीच चश्मा का वितरण किया गया। सासंग पंचायत में आयोजित शिविर में कुल 218, नवागढ़ पंचायत में आयोजित शिविर में कुल 230, पांडेपुरा पंचायत में आयोजित शिविर में कुल 205, मोंगर पंचायत में आयोजित शिविर में कुल 200 मरीजों के बीच चश्मा का वितरण किया गया। लातेहार प्रखंड के चिन्हित पंचायतों में आयोजित शिविर में कुल 1105 लोगों के बीच चश्मा का वितरण किया गया।

जेएसपीएलएस का संघर्ष से सम्मान तक : फूलों झानो लाभार्थी सम्मेलन

बरवाडीह (आजाद सिपाही)। बरवाडीह प्रखंड मुख्यालय में बुधवार को झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी द्वारा फूलों झानो आशीर्वाद अभियान के तहत संघर्ष से सम्मान तक: फूलों झानो लाभार्थी सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रखंड प्रमुख सुशीला देवी, जिला परिषद सदस्य संतोषी शेखर,बीडीओ रेशमा रेखा मिंज,बीपीएम अरुण कुमार समेत अन्य अतिथियों द्वारा संयुक्त रूप से दीप जला कर किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हड़िया और शराब के अवैध कारोबार से बाहर निकलकर सम्मानजनक वैकल्पिक आजीविका अपनाने वाली महिलाओं को प्रोत्साहित करना और समाज में उन्हें सम्मान दिलाना रहा इस दौरान लाभार्थियों को अंगवस्त्र देकर अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया.सम्मेलन में कई महिलाओं ने मंच से अपने संघर्ष और परिवर्तन की कहानी साझा की और पुनः कभी शराब कारोबार में न लौटने का संकल्प लिया.इस अवसर पर राज्य एवं केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई. साथ ही प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना से वंचित लाभुकों के नामांकन के लिए आवेदन लिये गये। स्वरोजगार को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न ट्रेड में प्रशिक्षण की जानकारी भी प्रदान की गयी। कार्यक्रम में दी नज फाउंडेशन के ब्लॉक लीड लॉरेंस लकड़ा, उप प्रमुख वीरेंद्र जायसवाल,बीस सूत्री अध्यक्ष मोहम्मद नसीम अंसारी, प्रेम कुमार सिंह, समूह के महिला सदस्यों,सभी सामुदायिक समन्वयक, एफटीसी, डाटा एंट्री ऑपरेटर, जेंडर सीआरपी, नवजीवन सखी कैडर सहित 150 से अधिक लाभार्थी शामिल हुए।

विशेष शिविर में 113 आवेदन मिले

बरवाडीह (आजाद सिपाही)। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान एवं प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान योजना के तहत अंतिम दिन बुधवार को बरवाडीह प्रखंड क्षेत्र के ग्राम हरातू पंचायत सचिवालय परिसर में विशेष शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य अनुसूचित जनजाति समुदाय के परिवारों को केंद्र प्रायोजित योजनाओं का लाभ उनके गांव में ही उपलब्ध कराना था। शिविर में लाभान्वित लोगों को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान की गयी। इस दौरान कुल 113 आवेदन मिले जिसमे 23 मनरेगा जॉब कार्ड जारी हुए, 21 आयुष्मान भारत कार्ड वितरित, जनधन खाता खोले गये, पेंशन लाभार्थियों का चयन, 34 लोगों का सिकल सेल टेस्ट किया गया, जाति प्रमाण पत्र जारी किए गए, राशन से संबंधित मामलों का समाधान किया गया, आवासीय प्रमाण पत्र जारी हुए। लाभुकों को मुद्रा योजना का लाभ मिला और स्वास्थ्य विभाग की ओर से 80 लाभुकों की ओपीडी जांच कर निःशुल्क दवाइयों का भी वितरण किया गया। इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी रेश्मा रेखा मिंज मुखिया सावित्री देवी, पशुपालन चिकित्सक डॉ प्रमोद कुमार प्रभारी बीपीओ कमलेश सिंह जेई, कंप्यूटर ऑपरेटर पप्पु कुमार समेत कई गणमान्य लोग और ग्रामीण उपस्थित थे।

सड़क दुर्घटना में दो लोग घायल

भंडरा (आजाद सिपाही)। भंडरा-लोहरदगा मुख्य पथ भंडरा थाना क्षेत्र के मैना बगीचा के समीप सड़क दुर्घटना में दो लोग गंभीर रुप से घायल हो गए। जिसे स्थानीय ग्रामीणों की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भंडरा पहुंचाया गया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार कर बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल रेफर कर दिया है।

जनता से सीधा संवाद कर समस्याओं का समाधान किया जायेगा : डॉ रामेश्वर उरांव

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। पूर्व मंत्री सह स्थानीय विधायक एवं आंतरिक संसाधन तथा केंद्रीय सहायता समिति के सभापति डॉ रामेश्वर उरांव कैरो प्रखंड मुख्यालय एवं लोहरदगा के बरवाटोली स्थित विधायक कार्यालय पहुंचे। इस दौरान उन्होंने पार्टी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं आम जनता से सीधा संवाद कर विभिन्न जनसमस्याओं का समाधान किया। जनसंवाद के दौरान ग्रामीणों ने अतिवृष्टि से फसल क्षति, अबुआ आवास, प्रधानमंत्री आवास, सड़क निर्माण, सामुदायिक भवन, पेयजल,

स्वास्थ्य सेवाएं एवं समाज कल्याण से संबंधित कई मुद्दों को लेकर आवेदन सौंपे।

डॉ उरांव ने त्वरित कार्रवाई करते हुए संबंधित पदाधिकारियों से फोन पर वार्ता कर समस्याओं के निराकरण का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि, जनता की सेवा ही हमारा धर्म है। सभी प्रखंडों में जाकर जनता से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का समाधान सुनिश्चित किया जायेगा। उन्होंने स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के लिए लोगों को बेझिझक आवेदन देने की अपील करते हुए कहा कि उन्हें सदर अस्पताल एवं रिम्स रांची में इलाज हेतु हरसंभव सहयोग मिलेगा। साथ ही, वर्तमान में हो रही भारी बारिश और अतिवृष्टि की समस्या को लेकर भी प्रशासन सक्रिय है ताकि किसानों को राहत मिल सके। मौके पर कार्यकारी जिलाध्यक्ष हाजी सकील अहमद, विधायक प्रतिनिधि निशीथ जायसवाल, जिप अध्यक्ष रीना भगत, रोहित प्रियदर्शी उराँव, प्रखंड विकास पदाधिकारी छंदा भट्टाचार्य, अंचल अधिकारी शीला उरांव, प्रभात भगत, विशाल डुंगडुंग, सहित सैकड़ों कार्यकर्ता, समाजसेवी, महिला और ग्रामीण जन उपस्थित थे।

कुडू में बेखौफ घूम रहे जंगली हाथी

कुडू/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। पिछले कुछ दिनों से जंगली हाथियों का आतंक आम लोगों की नींद उड़ा रहा है। अब सिर्फ जंगल ही नहीं, बल्कि घरों, होटलों और ढाबों तक हाथियों का कब्जा देखने को मिल रहा है। सबसे डराने वाली बात यह है कि ये हाथी अब दिन के उजाले में भी रिहायशी इलाकों में बेखौफ घूमते नजर आ रहे हैं। बुधवार सुबह एक हाथी के गांव में प्रवेश करते ही दहशत का माहौल बन गया। दिन के उजाले में ही हाथी ने विश्रामगढ़ निवासी नंदा उरांव का मकान ध्वस्त कर डाला। इसके अलावा मनातू निवासी चंदन शाहदेव के आम बागान को भी भारी नुकसान पहुंचाया। सैकड़ों ग्रामीण हाथी को गांव से बाहर भगाने के प्रयास में दिन भर परेशान रहे। हाथी जब वापस चंदवा के जंगल की ओर लौट रहा था, उसी दौरान कुडू के टीको कुंबाटोली में एक और घर को ध्वस्त कर घर में रखा अनाज खा गया। इससे दो दिन पूर्व, सोमवार की शाम करीब पांच बजे हाथी ने कुंदो नीचे टोली, टाटी, और कुडू ब्लॉक मैदान मोहल्ला सहित कई गांवों में घूम-घूमकर उत्पात मचाया। इस दौरान सुका उरांव, विजय लोहारा, लालजीत लोहारा और नदी के ऊपर बने कयूम अंसारी, असदली अंसारी तथा कबीर अंसारी के घरों को क्षतिग्रस्त कर घर में रखे अनाज का सेवन कर गया।

नशा मुक्ति को लेकर स्कूली बच्चों को पुलिस ने किया जागरूक

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के बालिका उच्च विद्यालय में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत बुधवार को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी चंदन कुमार के निर्देश पर एसआई रंजीत कुमार सिंह ने छात्राओं को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में बताया। कहा कि नशा समाज से दूर करता है। शारीरिक और मानसिक स्थिति को खराब करता है। छात्राओं को नशा करने वालों या इसे फैलाने वालों की सूचना टोल फ्री नंबर 112 पर देने की अपील की गई। मौके पर प्रधानाध्यापक धर्मेंद्र कुमार सिंह, शिक्षक अनुप कुमार, रंजीत कुमार, केदारनाथ मौर्य, शिक्षिका अर्पणा कुमारी सहित शिक्षक-छात्र मौजूद थे।

कोयल नदी में नहाने के दौरान डूबे दो सगे भाई, बड़े की मौत

मछुआरों की मदद से बचायी गयी छोटे की जान, गांव में मातम

आजाद सिपाही संवाददाता

विश्रामपुर/पलामू। रेहला थाना क्षेत्र के सिगसिगी गांव के समीप कोयल नदी के गहरे पानी में डूबने से एक किशोर की मौत हो गयी। उसकी पहचान साकेत राज सिंह (15) के रूप में हुई है। वह मृतक रेहला ज्ञान निकेतन में 9वीं कक्षा का छात्र था। जबकि इसी हादसे में मृतक के छोटे भाई को वहां मछली मार रहे मछुआरों ने किसी तरह बचा लिया। जानकारी के अनुसार सिगसिगी के सहायक शिक्षक ऋतुराज सिंह की पत्नी, उनके दो बेटे एवं साला बुधवार को कोयल नदी की तरफ घूमने गये थे। इसी बीच दोनों बच्चे कोयल नदी में नहाने लगे। नहाने के क्रम में जब छोटा भाई सन्निराज सिंह गहरे पानी में डूबने लगा तो बड़े भाई साकेत राज सिंह ने उसे बचाने की कोशिश की। छोटे भाई को बचाने के दौरान वह खुद गहरे पानी मे चला गया और डूब गया। तभी परिजन की शोरगुल सुनकर वहां मछली मार रहे उसी गांव के प्रमोद चौधरी ने दौड़कर मृतक के छोटे भाई को किसी तरह पानी से बाहर निकाला। जबकि बड़ा भाई साकेत राज गहरे पानी में चला गया। काफी मशक्कत के बाद प्रमोद चौधरी ने अन्य मछुआरों के सहयोग से उसे पानी से बाहर निकाला। अचेत अवस्था में उसे गढ़वा सदर अस्पताल भेजा गया जहां चिकित्सक ने जांचोपरांत उसे मृत घोषित कर दिया। उधर, ज्ञान निकेतन के निदेशक अमित कुमार उर्फ बाबुल सिंह ने बताया कि साकेत राज काफी मेधावी छात्र था। वह इस बार आठवीं बोर्ड की परीक्षा दी थी जिसमें बढ़िया अंक लाकर उत्तीर्ण हुआ था। निदेशक ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने अपने स्कूल का एक होनहार छात्र खो दिया है। इधर, घटना के बाद से परिजनों का रो - रो कर बुरा हाल है। क्षेत्र में शोक की लहर है।

जपला एके सिंह कॉलेज के कर्मियों ने काली पट्टी बांधकर किया विरोध प्रदर्शन

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। संबद्ध डिग्री महाविद्यालय महासंघ के नीपी विश्वविद्यालय ईकाई के अध्यक्ष विवेकानंद उपाध्याय के आह्वान पर जपला एके सिंह कॉलेज के प्राचार्य सहित सभी शिक्षक-शिक्षकेतर कर्मचारियों ने काली पट्टी बांध कर नियमित कार्य किया। बतातें चलें कि महासंघ की ओर से 17 जून को विश्वविद्यालय को संबोधित पत्र के माध्यम से यह आग्रह किया गया था कि झारखंड सरकार के मार्च 2025 में स्वीकृत एवं निर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 की अनुदानित राशि को स्थायी संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षकों और शिक्षकेतर कर्मचारियों के मानदेय भुगतान के लिए 24 जून तक संबंधित महाविद्यालयों को हस्तांतरित किया जाए। उक्त आवेदन के आलोक में महासंघ के प्रतिनिधि मंडल को कुलपति और कुल सचिव की ओर से 17 जून को स्पष्ट आश्वासन प्रदान किया गया था कि एक सप्ताह के अंदर अनुदान राशि विश्वविद्यालय द्वारा संबंधित महाविद्यालय को हस्तांतरित कर दी जाएगी। पर आश्वासन की निर्धारित समय-सीमा के बाद भी उक्त अनुदान राशि हस्तांतरित नहीं की गई। जिससे स्थायी संबद्ध महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों में असंतोष उत्पन्न हुई। इसी की प्रतिक्रिया स्वरूप महासंघ ने चरणबद्ध शांतिपूर्ण आंदोलन की रूपरेखा तय की। गौरतलब हो कि आंदोलन के क्रम में बुधवार को सभी शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारी काली पट्टी लगाकर नियमित किये। वहीं, गुरुवार को प्रत्येक महाविद्यालय के प्रतिनिधि अपने-अपने विधानसभा क्षेत्र के विधायक को ज्ञापन सौंपेंगे। जबकि 28 जून को सभी महाविद्यालय के प्रतिनिधि मेदिनीनगर विश्वविद्यालय मुख्यालय में एकत्र होकर शांतिपूर्ण तरीके से धरना प्रदर्शन करेंगे।

लंबित मामलों का त्वरित निष्पादन करें: डीआइजी

रेहला थाना का किया औचक निरीक्षण, दिये कई निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

विश्रामपुर/पलामू। पलामू डीआइजी नौशाद आलम ने बुधवार को रेहला थाने का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान पुलिस पदाधिकारियों को कई आवश्यक निर्देश दिया। वहीं, डीआईजी के थाना पहुंचते ही रेहला थाना प्रभारी गुलशन बिरुवा की ओर स उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके बाद डीआईजी ने थाना में पदस्थापित पदाधिकारी एवं जवानों के टर्न आउट का निरीक्षण किया। उन्होंने थाना सिरिस्ता में संधारित अभिलेखों का अवलोकन करते हुए त्रुटियों में सुधार करने का निर्देश दिया। कहा कि पुलिस पदाधिकारी आम जनता की शिकायतों का ईमानदारी से समाधान करने का प्रयास करें। आम लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करें। लंबित मामलों का त्वरित निष्पादन करें। डीआईजी ने क्षेत्र में अपराध नियंत्रण एवं विधि व्यवस्था बनाये रखने, पुलिस मुख्यालय, वरीय पदाधिकारी से प्राप्त आदेश-निर्देश संबंधित पत्रों को पदाधिकारी एवं कर्मियों को अवगत कराते हुए अलग से गार्ड फाइल में रक्षित करने का भी आदेश दिया। इसके अलावा स्कूल -कॉलेज सहित वैसे स्थान जहां महिलाओं-लड़कियों का आना-जाना हो या ज्यादा अड्डा बाजी वाले क्षेत्रों में कारगार पेट्रोलिंग करने, मादक पदार्थों के विरुद्ध छापामारी, नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाने सहित कई बिंदुओं पर आवश्यक दिशा निर्देश दिया। निरीक्षण के क्रम में डीआइजी ने थाना में पदस्थापित अधिकारियों-जवानों का मनोबल बढ़ाने के लिये पुरष्कृत भी किया। इस मौके पर पुलिस निरीक्षक रामाशीष पासवान सहित कई अधकारी मौजूद थे।

मनातू में अफीम खेती, शराब बंदी एवं कुरीतियों के खिलाफ चलाया गया जागरूकता अभियान

मनातू/पलामू (आजाद सिपाही)। मनातू थाना क्षेत्र के ग्राम बिश्राव स्थित देवी मंडप परिसर में गुरुवार को मादक पदार्थ की रोकथाम, सड़क सुरक्षा, डायन बिसाही, अंधविश्वास एवं शराबबंदी को लेकर एक दिवसीय जागरूकता अभियान चलाया गया। जिसकी अगुवाई मनातू थाना प्रभारी निर्मल उरांव ने की। इसमें क्षेत्र के सोहे, मितार, अप्टी, सिलदाग, जसपुर, चिड़ीखुर्द, कर्मा, झांटी, गीतहर, नागद, बेटा पत्थर, बिश्राव, सीकनी, केदल, सिकदा और सस्तीरवा सहित दर्जनों गांवों के ग्रामीण शामिल हुए। इस दौरान ग्रामीणों को विशेष रूप से अवैध अफीम की खेती नहीं करने को लेकर जागरूक किया गया। अधिकारियों ने बताया कि अफीम की खेती गैरकानूनी है। इसके दुष्परिणाम समाज एवं परिवार पर गंभीर प्रभाव डालते हैं। इस मौके पर उपस्थित ग्रामीणों को शपथ दिलाई गई कि वे न तो खुद अफीम की खेती करेंगे और न ही किसी को ऐसा करने देंगे। लगे हाथ डायन बिसाही एवं अंधविश्वास जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लोगों को जागरूक किया गया। बताया गया कि इस तरह की मान्यताएं समाज को पीछे धकेलती हैं। कानून के तहत इन कुरीतियों में लिप्त लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का भी प्रावधान है। शराबबंदी एवं सड़क सुरक्षा के विषय पर भी विस्तार से जानकारी दी गई। अभियान के माध्यम से लोगों से अपील की गई कि वे नशे से दूर रहें और समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करें।

पर्व-त्योहारों में जुलूस के दौरान नहीं कटेगी बिजली

- झंडों एवं डीजे वाहनों की ऊंचाई होगी कम
- हाईकोर्ट के निर्देश के बाद जेबीवीएनएल ने जारी की गाइडलाइन

आजाद सिपाही संवाददाता

हैदरनगर/पलामू। झारखंड में किसी भी पर्व-त्योहारों के जुलूस और शोभायात्रा के दौरान बिजली नहीं कटेगी। इस संबंध में झारखंड हाइकोर्ट के 10 जून को पारित आदेश के बाद झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड ने राज्य के सभी पर्व-त्योहारों के आयोजकों, समितियों, श्रद्धालुओं व नागरिकों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी कर दिया है। जिसमें बताया गया है कि किसी भी आयोजन में शामिल झंडों की ऊंचाई अधिकतम चार मीटर जबकि डीजे साउंड से वाहनों की ऊंचाई न्यूनतम चार और अधिकतम 13 फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए। गाइडलाइन का अनुपालन नहीं करने पर संबधित आयोजक पर कानूनी कार्रवाई की जायेगी। गौरतलब है कि रामनवमी, सरहुल, मोहर्रम जैसी त्योहारों के दौरान कई घंटों तक बिजली काटे जाने की समस्या सहित आमजनों की परेशानी भी दूर होने से बड़ी राहत मिलेगी। आयोजनों में कोई भी दुर्घटना से बचाने के लिये समितियों की पर्याप्त संख्या में वॉलेंटियर्स को तैनात कर शोभायात्रा में शामिल श्रद्धालुओं पर लगातार विशेष निगरानी रखने, जुलूस मार्ग में पड़ने वाले बिजली के तारों, उपकरणों को नहीं छूने या किसी डंडे या अन्य माध्यम से भी इसके संपर्क से दूर रहने को कहा गया है। आयोजनों से पूर्व आयोजक समितियों, जिला प्रशासन को स्थानीय प्रमुख अखबारों एवं अन्य माध्यम से भी इसका प्रचार - प्रसार किया जायेगा। त्योहार से पूर्व संबंधित मुख्य स्थलों, शोभायात्रा, जुलूस में मार्गों के विद्युत्त पोल, झूलते तार, ट्रांसफार्मर आदि विद्युत विभाग की ओर से मेंटेनेंस कराया जायेगा।

पलामू डीसी ने जनता दरबार में सुनी लोगों की समस्याएं

कंप्यूटर ऑपरेटर पर जमीन की ऑनलाइन रसीद के एवज में 10 हजार रुपये मांगने की शिकायत

आजाद सिपाही संवाददाता

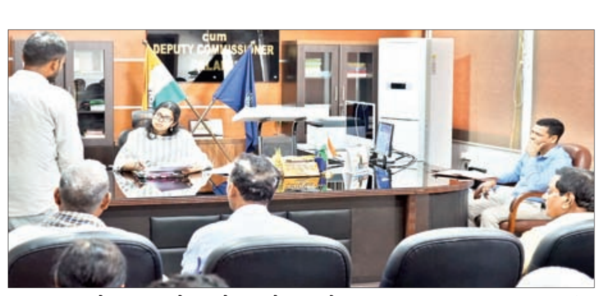

मेदिनीनगर। पलामू डीसी समीरा एस ने अपने कार्यालय प्रकोष्ठ में बुधवार को जनता दरबार लगाकर लोगों की समस्याएं सुनी। इस दौरान जिले के विभिन्न क्षेत्रों से व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्या लेकर काफी संख्या में लोग पहुंचे। डीसली ने उनकी समस्याएं सुनीं और प्राप्त आवेदनों को संबंधित अधिकारियों को अग्रसारित करते हुए यथोचित कार्रवाई का निर्देश दिया। कई समस्याओं का मौके पर ही निष्पादन भी कर दिया। जबकि कुछ आवेदनों को संबंधित विभाग के अधिकारियों को अग्रसारिह करते हुए प्राथमिकता के आधार पर निष्पादित कर लोगों को लाभान्वित करने की बात कही। जनता दरबार में पड़वा के ग्राम मुरमा से आये सागर ठाकुर ने अंचल के कंप्यूटर ऑपरेटर द्वारा जमीन की रसीद ऑनलाइन किये जाने के एवज में 10 हजार रुपये मांगने की शिकायत की। इसी तरह विश्रामपुर के ग्राम टोना से आये मीणा देवी ने बताया कि उनके पुत्र आयुष कुमार को किडनी से जुड़ी गंभीर बीमारी है। उनका परिवार अत्यंत गरीब है जिस कारण बेटे का इलाज नहीं करा पा रहें है। इतना ही नहीं बेटे का नाम राशन कार्ड में नहीं जुड़ा होने के कारण आयुषमान कार्ड भी नहीं बन पा रहा है। उन्होंने डीसी से अपने बेटे का नाम राशन कार्ड में जुड़वाने को लेकर अनुरोध किया। वहीं, चैनपुर के ग्राम भड़गवां से आयी सुमित्रा देवी ने भूमि मापी के संबंध में आवेदन दिया। सदर प्रखंड के ग्राम चियांकी से आये किसुनि साव ने एनएच 75 के तहत झूठे तथ्यों को दिखाकर जिला भू-अर्जन कार्यालय से एक करोड़ 41 लाख 16 हजार 226 रुपये धोखाधड़ी कर निकाल लेना एवं गबन करते हुए विश्वासघात किये जाने के संबंध में आवेदन दिया। इसी तरह एक पूर्व सीओ ने भी डीसी से चैनपुर अंचल में अपना जमीन ऑनलाइन नहीं किये जाने की शिकायत की। उपरोक्त के अतिरिक्त जनता दरबार में मुख्य रूप से भूमि विवाद, सार्वजनिक रास्ता रोकने, अयोग्य लाभुकों को पीएम आवास दिये जाने, दाखिल खारिज, राजस्व, स्वास्थ्य विभाग, आपूर्ति, पेयजल, शिक्षा, कल्याण विभाग से संबंधित आवेदन प्राप्त किये गये।

नशा शारीरिक, मानसिक और आर्थिक नुकसान करता है : प्रोफेसर मुन्नी देवी

छतरपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। छतरपुर अनुमंडल स्थित गुलाबचंद प्रसाद अग्रवाल कॉलेज में उच्च शिक्षा निदेशालय के निर्देश पर मादक पदार्थों के विरुद्ध नाटक का मंचन छात्राओं द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रभारी प्राचार्य अखिलेश सिंह ने कहा कि नशा मुक्ति के लिए समाज के सभी वर्गों को सामान जिम्मेदारी लेनी होगी। नशेड़ियों पर विशेष नजर बनाए रखने की जरूरत है। वहीं. नशामुक्ति भारत अभियान के नोडल पदाधिकारी प्रो मुन्नी देवी ने कहा कि नशा शारीरिक, मानसिक और आर्थिक नुकसान करता है। इसलिए महिलाओं का कर्तव्य की अपने परिवार पर पहली नजर रखें। नशा पर पैसे खर्च के बजाय अपने बच्चों के शिक्षा पर खर्च करें। जिससे पीढ़ी दर पीढ़ी बदल जाएगी। वहीं, पूजा कुमारी, शोभा कुमारी, रेहाना, प्रवीण और आरती कुमारी आदि ने जागरूकता संबंधी शानदार नाटक का मंचन किया।

आपातकाल की 50वीं बरसी पर देवघर में संगोष्ठी का आयोजन

लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हुई चर्चा, याद किया 1975 का काला दौर

आजाद सिपाही संवाददाता

देवघर। भाजपा की ओर से आपातकाल की 50वीं बरसी पर देशभर में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में देवघर के मनोरमा इंटरनेशनल होटल के सभागार में भी संगोष्ठी एवं संवाददाता सम्मेलन का आयोजन हुआ। जिसकी अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष सचिन रवानी ने की। इसमें भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक भानुप्रताप शाही मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने पत्रकारों को संबोधित करते हुए 25 जून 1975 को भारतीय लोकतंत्र का काला दिन बताया। कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता बचाने के लिए देश पर आपातकाल थोपा, लाखों लोगों को जेल में डाला गया और उन पर अत्याचार किया। उन्होंने कांग्रेस पर लोकतंत्र को कुचलने का आरोप लगाते हुए कहा कि आज राहुल गांधी संविधान की बात करते हैं, लेकिन नए कानूनों का विरोध कर उसे फाड़ने की मानसिकता दिखाते हैं। कहा कि युवाओं को भारतीय इतिहास की सच्ची जानकारी देना आवश्यक है। मोदी सरकार द्वारा अनुच्छेद 370 और 35ए को हटाना ऐतिहासिक कदम था।

जबरन नसबंदी अभियान की कड़ी आलोचना की : नेताओं ने संजय गांधी के जबरन नसबंदी अभियान को कुख्यात बताया, जिसमें गरीब और कमजोर तबके के लाखों लोगों को निशाना बनाया गया था। उधर, संवाददाता सम्मेलन के बाद संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं ने युवा पीढ़ी को आपातकाल के बारे में जागरूक करने और लोकतंत्र की मजबूती के लिए जन-जागरूकता का आह्वान किया। इस दौरान आपातकाल के समय जेल जाने वाले नारायण टेकरीवाल, योगीनाथ झा और गौरीशंकर शर्मा को सम्मानित किया गया। वहीं, नारायण टेकरीवाल ने आपातकाल के अपने अनुभव साझा किए। इस मौके पर पूर्व विधायक नारायण दास, पूर्व मंत्री राज पलिवार, प्रदेश मंत्री गणेश मिश्रा, जिला अध्यक्ष सचिन रवानी, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य संजीव जजवाड़े, रीता चौरसिया, विशाखा सिंह, दिलीप सिंह, दिवाकर गुप्ता, पूर्व जिला अध्यक्ष नवल राय, नारायण टेकरीवाल, योगीनाथ झा, चौकीदार झा, गौरीशंकर शर्मा, विपिन देव, सीताराम पाठक के अलावा राजीव रंजन सिंह, प्रज्ञा झा, विजया सिंह, चंद्रशेखर खवाड़े, सचिन सुल्तानिया, अमृत मिश्रा, विनय चंद्रवंशी, सुलोचना देवी, धनंजय तिवारी, निरंजन देव, रूपा केशरी, विष्णु राउत, धनंजय खवाड़े, पंकज भदोरिया, संजय राय, ललन दुबे, मिथलेश यादव, बबलू पासवान, सोना धारी झा, निर्मल मिश्रा, सीएन दुबे आदि उपस्थित थे।

मधुपुर आरपीएफ ने रेल यात्री का ट्रेन में छुटा समान लौटाया

मधुपुर (आजाद सिपाही)। आरपीएफ ने आसनसोल से प्राप्त सूचना के अनुसार, यात्रा के दौरान ट्रेन संख्या-12370 डाउन देहरादून हावड़ा एक्सप्रेस में एक यात्री द्वारा सामान छोड़ दिये जाने की सूचना दी गयी थी। जिसके अनुसार ड्यूटी पर तैनात आरपीएफ के अधिकारी और कर्मचारी उक्त ट्रेन के डिब्बे में पहुंचे और मधुपुर रेलवे स्टेशन पर तलाशी ली। इस दौरान सामान (भगवान कृष्ण का वस्त्र मुकुट) बरामद कर रेल यात्री को सूचित किया। इसके बाद मधुपुर आरपीएफ पोस्ट में बांका बिहारी (27) नामक युवक पहुंचा, जो उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के शिवाल थाना क्षेत्र का रहने वाला है। उसने रेलवे मदद संदेश के अनुसार गुम हुए सामान की मांग की। जिसके बाद उचित दस्तावेज सत्यापन करने के बाद रेल यात्री को समान सौंप दी गई। बैग में करीब 20 हजार रुपये मूल्य का सामान था।

अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक सेलिब्रेशन सप्ताह पर देवघर में खिलाड़ियों को किया गया सम्मानित

देवघर (आजाद सिपाही)। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक सेलिब्रेशन सप्ताह के अवसर पर बुधवार को देवघर जिला ओलंपिक संघ की ओर से भव्य कार्यक्रम का आयोजन कर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संथाल परगना का नाम रोशन करने वाले विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिला ओलंपिक संघ के अध्यक्ष डॉ सुनील खवाड़े ने कहा कि संघ हमेशा खिलाड़ियों के विकास और प्रोत्साहन के लिए तत्पर रहा है। उन्होंने घोषणा की कि जनवरी महीने में संथाल परगना का सबसे बड़ा अवॉर्ड समारोह आयोजित किया जाएगा। इस दौरान सम्मानित खिलाड़ियों में वॉलीबॉल में कृति सिंह, ताइक्वांडो में सौम्या भारद्वाज, श्रद्धा सुमन, जयवीर यादव, राहुल कुमार, दीपक कुमार, प्रिया कुमारी, रिया कुमारी, गतका में साबरा खातून, मानसी कुमारी, दिव्यांशु कुमार, हैंडबॉल में त्रुसा कुमारी, साक्षी भारद्वाज, आयुषी कुमारी, लक्ष्मी भारद्वाज, ` कोच राजेश रंजन, कुश्ती में आरुषि कुमारी, अनमोल कुमार झा, विद्या कुमारी, मनीष कुमार, नम्रता भारती, युवराज ठाकुर, खो-खो में राज राजवर, अमित कुमार, लकी कुमार, बॉक्सिंग में मो इरशाद, आशुतोष आयुष, एथलेटिक्स में विष्णु मुर्मू, अनुषा मुर्मु, समीर सिंह, जयराम पंडित ` कोचः दीपक कुमार, पावरलिफ्टिंग में आयुष संतोषी, बैडमिंटन में अंकेश कुमार, सोनाली दुबे, नेहा कुमारी, प्राची, लाडली रोज, सृष्टि सिंह, शतरंज (चेस) में मयंक राज, नमन मित्तल, कोच कुमार सौरभ, कबड्डी में अंडर-18 बॉयज एंव अंडर-14 गर्ल्स टीम, कोच आलोक कुमार आदि शामिल रहे। इन सभी खिलाड़ियों और कोचों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला ओलंपिक संघ के अध्यक्ष डॉ सुनील खवाड़े, सचिव चन्दना झा, लानिंग कमिटी के चेयरमैन आशीष झा, उपाध्यक्ष संजय मालवीय, वीरेंद्र सिंह, कोषाध्यक्ष नवीन शर्मा, संयुक्त सचिव कृष्ण कुमार बर्नवाल, संजीव झा, आजाद पाठक, कौशल कुमार और श्वेता सिंह मौजूद रहे। इसके अलावा प्रमेश राव, प्रीतम भारद्वाज, राकेश पांडेय, मयूरी गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

श्रावणी मेला को लेकर देवघर में हुई अंतरराज्यीय बैठक, यात्रियों की सुविधा पर दिया विशेष जोर

आजाद सिपाही संवाददाता

देवघर। विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला के सफल आयोजन को लेकर मंगलवार को देवघर के सर्किट हाउस में एक महत्वपूर्ण अंतर्राज्यीय समन्वय बैठक हुई। जिसमें झारखंड और बिहार के वरिष्ठ प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारियों ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता देवघर डीसी सह जिला दंडाधिकारी नमन प्रियेश लकड़ा और संथाल परगना के आयुक्त लाल सिंह चांडिल ने संयुक्त रूप से किया। इसमें बिहार के मुंगेर, भागलपुर और बांका जिले के जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं अन्य संबंधित विभागों के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। श्रावणी मेला में हर वर्ष लाखों की संख्या में कांवरिया बाबाधाम में जलार्पण के लिए पहुंचते हैं। ऐसे में उनकी सुविधा, सुरक्षा और सुगम यात्रा सुनिश्चित करना दोनों राज्यों के प्रशासन की प्राथमिकता है। बैठक में चर्चा हुई कि जलार्पण मार्ग पर यातायात व्यवस्था, पेयजल, स्वास्थ्य सुविधा, साफ-सफाई और ठहराव की व्यवस्था को बेहतर और सुविधाजनक बनाया जाए। इस दौरान डीसी नमन प्रियेश लकड़ा ने कहा कि देवघर जिला प्रशासन पूरी तत्परता से श्रावणी मेले की तैयारी में जुटा है। श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा देने के लिए हर स्तर पर काम तेज किया गया है। कक्ष लाल सिंह चांडिल ने बताया कि सुरक्षा व्यवस्था को लेकर विशेष बलों की तैनाती, सीसीटीवी निगरानी और महिला कांवरियों की सुरक्षा को लेकर विशेष उपाय किए जा रहे हैं। बिहार और झारखंड के बीच समन्वय के साथ इस धार्मिक आयोजन को शांतिपूर्ण और व्यवस्थित तरीके से संपन्न कराना प्रशासन की प्राथमिकता है। अधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया कि किसी भी स्थिति से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन टीमों को भी सक्रिय किया गया है। बैठक में प्रशासनिक समन्वय, सीमावर्ती क्षेत्रों की निगरानी और कंट्रोल रूम की स्थापना जैसे मुद्दों पर भी चर्चा की गई। श्रावणी मेला 2025 को भव्य, सुरक्षित और श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक बनाने का संकल्प दोहराया गया।

धान का बीज नहीं मिला, नाराज किसानों ने जाम किया गुमला-छत्तीसगढ़ मार्ग

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। जिला में मानसून की शुरुआत के साथ ही अच्छी बारिश हो चुकी है। इस बार अच्छी पैदावार को लेकर किसान खुश हैं । कृषि विभाग की ओर से सब्सिडी के रूप में सभी किसानों को धान देने की योजना है लगातार किसान 15 दिनों से कार्यालय का चक्कर काट रहे हैं। लेकिन कुछ किसानों को धान उपलब्ध कराया गया, जबकि प्रतिदिन काफी संख्या में किसान कार्यालय का चक्कर काटते हुए वापस लौट जाते हैं। लगातार 15 दिनों से यही नजारा देखने को मिल रहा है किसान पैसे लगाकर गाड़ी भाड़ा देकर विभाग पहुंचते हैं। सुबह से शाम होने के बाद उनको धान नहीं है बोलकर बैरंग वापस लौटा

दिया जाता है। जिसको लेकर किसान काफी चिंतित हैं। त्रस्त होकर किसान बुधवार की सुबह 8 बजे शहर के पटेल चौक को जाम कर दिया पटेल चौक के जाम होने से चारों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई मामले की सूचना वरीय पदाधिकारी और विभाग को दी गई लेकिन वार्ता के लिए कोई पदाधिकारी घंटों बीत जाने के बावजूद सामने नहीं आए वहीं किसानों का कहना है कि हम लोग लगातार विभाग का चक्कर काट रहे हैं लेकिन विभाग की ओर से किसी प्रकार की स्पष्ट जानकारी नहीं दी जा रही है। 10 बजे कृषि पदाधिकारी विजय कुजूर अंचल अधिकारी हरीश कुमार जाम स्थल पहुंचे और किसानों से बातचीत की वहीं किसानों को जल्द धान दिए जाने का आश्वासन भी दिया। मामले को लेकर कृषि पदाधिकारी ने कहा जितना धान आया था किसानों के बीच वितरित कर दिया गया। स्टेट से धान आने के बाद ही किसानों के बीच वितरण किया जाएगा। वहीं भाजपा किसान मोर्चा के प्रमंडलीय प्रभारी मंगल सिंह भोगता ने कहा बीज बोने का यह अनुकूल समय है समय बीतने के बाद धान का किसान क्या करेंगे वहीं उन्होंने जिले में धान की कालाबाजारी का आरोपी भी लगाया है। जाम का नेतृत्व कर रहे झारखंड प्रदेश प्रतिज्ञा महिला एसोसिएशन की अध्यक्ष देव की देवी ने कहा कि सरकार किसान विरोधी है 20 बीत जाने के बाद कंबल बांटती है खेती बाड़ी का समय बीत जाने के बाद धान बांटेगी। जल्द किसानों को धान का बीज मुहैया नहीं कराया गया तो कृषि विभाग में तालाबंदी की जायेगी।

चैनपुर में अबुआ आवास का गृह प्रवेश

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर प्रखंड के कातिंग अंबाटोली गांव में बुधवार को दो नए परिवारों के लिए खुशी का दिन था। अमृता टोप्पो और हेंजा रौतिया ने अपने नवनिर्मित अबुआ आवास में गृह प्रवेश किया। इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी चैनपुर यादव बैठा ने दोनों परिवारों को बधाई दी और उनके गृहप्रवेश कराकर नये घर की चाबी सौंपी। अमृता टोप्पो और हेंजा रौतिया दोनों ही अपने नये घर में जाने के लिए बेहद उत्साहित थे। उन्होंने बताया कि अबुआ आवास योजना के तहत उन्हें घर बनाने के लिए आर्थिक सहायता मिली, जिससे उनका सपना पूरा हुआ। अबुवा आवास के तहत पक्का मकान बन जाने से पूरा परिवार खुश है। उन लोगों ने बताया कि पक्का मकान हमारे लिए एक सपना की तरह था सरकार के अबुवा आवास योजना के तहत यह सपना आज पूरा हो गया है। वे अपने नये घर में खुशी-खुशी रहने के लिए तैयार हैं। चैनपुर में अबुआ आवास योजना का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस योजना के तहत बनाए गए घरों में रहने वाले परिवारों के चेहरे पर खुशी साफ झलकती है। अमृता टोप्पो और हेंजा रौतिया जैसे लाभार्थियों के लिए यह योजना वरदान साबित हुई है।

आवासीय विद्यालय के छात्र का सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में इंजीनियरिंग की कोचिंग के लिए चयन

बसिया (आजाद सिपाही)। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय,बसिया के कक्षा ग्यारहवीं का छात्र अलोक टोप्पो का चयन राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति, जनजातीय कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इंजीनियरिंग की कोचिंग प्राप्त करने के लिए हुआ है। ज्ञात हो की दक्षणा फाउंडेशन, पुणे द्वारा परीक्षा ली गयी थी, जिसके बाद परीक्षा परिणाम के आधार पर राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति ने दो सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाकर एक-एक केंद्र में 20 छात्रों को इंजीनियरिंग तथा 20 छात्रों को मेडिकल के कोचिंग की व्यवस्था की है। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय,बसिया से 89 .20 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्णता हासिल करने वाले अलोक टोपो का चयन चनकापुर, महाराष्ट्र के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में इंजीनियरिंग की मुफ्त कोचिंग हेतु हुआ है। अलोक टोप्पो को चनकापुर के सेंटर आफ एक्सीलेंस में दो वर्षों के लिए इंजीनियरिंग की कोचिंग दी जायेगी। यहां पढ़ाई के साथ-साथ रहना-खाना व अन्य सभी सुविधाएं भारत सरकार द्वारा मुहैया करायी जाएगी। झारखंड के एकलव्य विद्यालयों से अलोक टोप्पो एकमात्र छात्र हैं जिनका चयन राष्ट्रीय स्तर के इस कोचिंग संस्थान के लिए हुआ है। अलोक टोप्पो के इस सफलता से विद्यालय में हर्ष का माहौल है।

बीडीओ-सीओ ने मृतक के परिजन से की मुलाकात

भरनो (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत ग्राम मकरा में सर्प दंश से शिकार हुई बालिका संजोनी उरांव उम्र लगभग 13 वर्ष की मृत्यु मंगलवार हो गयी थी। इसमें प्रखंड प्रशासन की ओर से इस दुख की घड़ी में परिवार को ढांढस बनाने हेतु प्रखंड विकास पदाधिकारी अरुण कुमार सिंह, अंचल अधिकारी अविनाश कूजूर संबंधित पंचायत के मुखिया, पंचायत समिति सदस्य एवं पंचायत सचिव मृतक के माता-पिता से मिले। तत्काल सहायता के रूप में चावल, वस्त्र एवं कुछ नगद राशि उपलब्ध करायी गयी। उनका आवास भी काफी जर्जर अवस्था में था। अंबेडकर आवास की स्वीकृति हेतु जिला को अभिलेख भेजने का निर्देश प्रखंड विकास अधिकारी द्वारा संबंधित पंचायत सचिव को दिया गया। साथ ही मृतक के पिता नक्कू उरांव जो कि दोनों आंखों से नेत्रहीन थे, उन्हें विकलांगता सर्टिफिकेट देने हेतु प्रस्ताव संबंधित मुखिया को लाने का निर्देश दिया गया। सरकारी सहायता के रूप में सर्प दंश से शिकार परिवार के आश्रित को 4 लाख का लाभ दिलाने हेतु तत्काल पहल करने की बात प्रखंड प्रशासन की ओर से कही गयी।

चैनपुर में कई दुकानों पर छापा, जुर्माना वसूला गया

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर थाना क्षेत्र के चौक-चौराहों पर मंगलवार को तंबाकू निषेध कार्यक्रम के तहत एक बड़ी कार्रवाई की गई, जिसमें दर्जनों दुकानों पर औचक छापेमारी कर गुटखा, सिगरेट और अन्य नशीले पदार्थ जब्त किये गये। यह अभियान प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा, अंचल अधिकारी दिनेश गुप्ता और थाना प्रभारी कुन्दन चौधरी के संयुक्त नेतृत्व में चलाया गया उपायुक्त प्रेरणा दीक्षित के आदेश पर चैनपुर प्रखंड मुख्यालय में गुटखा, तंबाकू, सिगरेट सहित सभी प्रकार के नशीले पदार्थों की बिक्री पर सरकार ने पूर्ण प्रतिबंध लगा रखा है। बीडीओ यादव बैठा ने बताया कि इस प्रतिबंध के बावजूद कई दुकानदार चोरी-छिपे इन प्रतिबंधित पान मसालों की बिक्री कर रहे थे। इसी को रोकने के लिए यह विशेष अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान कुल दस दुकानों से जुर्माना वसूला गया और सभी दुकानदारों को सख्त चेतावनी दी गयी। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि यदि अगली बार छापेमारी में कोई दुकानदार बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू या गुटखा बेचते हुए पाया जाता है, तो उस पर 10,000 का भारी जुर्माना लगाया जायेगा और कानूनी कार्रवाई भी की जायेगी। इस छापेमारी दल में बीडीओ यादव बैठा, सीओ दिनेश गुप्ता, थाना प्रभारी कुन्दन चौधरी, अंचल निरीक्षक मुनेश्वर सिंह और थाने के जवान शामिल थे।

कोनबीर व्यापार संघ के अध्यक्ष बने अनमोल तिवारी

बसिया (आजाद सिपाही)। गुरुवार को प्रखंड के कोनबीर व्यापार संघ का चुनाव कोनबीर सामुदायिक भवन में संतोष सोनी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस दौरान संतोष सोनी के द्वारा व्यापारिक संघ के अध्यक्ष का नाम का प्रस्ताव मांगा गया तो लोगों ने सर्व समिति से अनमोल तिवारी का नाम प्रस्तावित किया एवं उनको कोनबीर व्यापारिक संघ का अध्यक्ष चुना गया, इसके बाद नीरज कुमार साहू को सर्व समिति से उपाध्यक्ष, संदीप चौधरी को सचिव एवं सूरज गोप को कोषाध्यक्ष बनाया गया। अध्यक्ष अनमोल तिवारी ने कहा कि व्यवसायियों के हित में कार्य करना उनकी प्राथमिकता है। साथी ही उन्होंने उपस्थित सभी व्यवसायियों का आभार व्यक्त किया एवं सभी चयनित पदाधिकारी को शुभकामनाएं दी। इस दौरान मुख्य रूप से अजय कुमार पांडे, आनंद कुमार साहू, अनूप सोनी, बबलू ठाकुर एवं सभी व्यवसायिकगण उपस्थित थे।

नशीले पदार्थ के खिलाफ चला छापेमारी अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

बिशुनपुर। प्रखंड मुख्यालय में बुधवार को प्रखंड विकास प्राधिकारी सुलेमान मुंडरी, अंचलाधिकारी शेखर वर्मा एवं थाना प्रभारी राकेश सिंह के नेतृत्व में प्रतिबंधित नशीले पदार्थ पान, बीड़ी, गुटखा, सिगरेट, खैनी आदि प्रतिबंधित नशीली पदार्थ के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया गया। इसके तहत मध्य विद्यालय बिशुनपुर से लेकर हॉस्पिटल चौक तक के सभी किराना दुकान एवं गुमटी में छापेमारी की गयी। इस मौके पर प्रखंड विकास प्राधिकारी सुलेमान मुंडरीने कहा कि झारखंड सरकार के द्वारा सभी प्रकार के गुटका एवं पान मसाला सहित कई प्रकार के नशीली पदार्थों पर प्रतिबंध लगाया गया है, ताकि राज्य के छोटे-छोटे बच्चों को नशा से दूर रखा जा सके। प्रतिबंधित नशीली पदार्थों के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया गया। जहां भारी मात्रा में गुटका सहित कई अन्य नशीली पदार्थ जब्त कर उसे नष्ट किया गया। उन्होंने लोगों से आग्रह करते हुए कहा कि सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन का सभी लोग पालन करें कोई भी व्यक्ति गुटका या अन्य नकली पदार्थ का बिक्री न करें नहीं तो प्रशासन के द्वारा सख्त कार्रवाई की जायेगी श्री मुंडरी ने बताया कि दुकानदारों के द्वारा भी प्रशासन को अस्वस्थ किया गया कि कोई भी दुकानदार प्रतिबंधित नशीले पदार्थ की बिक्री नहीं करेंगे।

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास की सबसे त्रासदीपूर्ण घटना थी इमरजेंसी: अलखनाथ

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। वरिष्ठ भाजपा नेता एवं प्रदेश कार्य समिति सदस्य अलखनाथ पांडेय ने बुधवार 25 जून को आपातकाल की 50वीं बरसी पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि 1975 की वह काली रात भारतीय लोकतंत्र के इतिहास की सबसे त्रासदपूर्ण घटना थी। लेकिन आज देश ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लोकतांत्रिक मूल्यों को नये आयाम तक पहुंचा दिया है। श्री पांडेय ने याद दिलाया कि कांग्रेस शासनकाल के दौरान लागू किया गया आपातकाल न केवल संविधान विरोधी था, बल्कि जनता के मौलिक अधिकारों की खुली अवहेलना भी थी। प्रेस पर सेंसरशिप, न्यायपालिका पर दबाव, और लाखों नेताओं व कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी झ ये सब उस समय लोकतंत्र के नाम पर धोखा था। ह्नउस दौर ने यह सिखाया कि सत्ता जब निरंकुश हो जाती है, तो राष्ट्र को कितना नुकसान होता है। श्री पांडेय ने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत लोकतंत्र, पारदर्शिता और सबको साथ लेकर चलने की मिसाल बन गया है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, और सबका प्रयास जैसी सोच ने देश को एक नयी दिशा दी है। उन्होंने कहा कि आज हर नीति में गरीब, किसान, युवा, महिला, व्यापारी, अनुसूचित वर्ग, अल्पसंख्यक - सभी की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। डिजिटल भारत, आत्मनिर्भर भारत, स्टार्टअप इंडिया, और जनकल्याणकारी योजनाएं आज देश को विकास और समरसता की नयी ऊंचाई पर ले जा रही हैं।

कामडारा थाना प्रभारी ने बच्चों को सड़क सुरक्षा और साइबर अपराध की जानकारी दी

कामडारा (आजाद सिपाही)। कामडारा ग्लोरी मेमोरियल उच्च विद्यालय कामडारा में बुधवार को कामडारा थाना प्रभारी शशि प्रकाश के द्वारा विद्यालय के कक्षा 6 से 10वीं के बच्चों के बीच विद्यालय के वर्ग में जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। कार्यक्रम में प्रभारी द्वारा सड़क सुरक्षा,साइबर अपराध,डायन बिसाही, नशापान,डिजिटल अरेस्ट,बाल विवाह,बाल मजदूरी आदि से संबंधित विस्तार पूर्वक जानकारी दी और कहा कि अफीम की खेती करना गैर कानूनी है, अगर कोई अफीम की खेती कर रहा हो तो इसकी सूचना थाने को दें,साथ ही ग्रामीण इलाके में बहुत जल्द लोग अंधविश्वास का शिकार हो जाते हैं, जिससे तरह तरह की अफवाहें उड़ने लगती है, जिससे परहेज करें। वहीं थाना प्रभारी द्वारा कई सामाजिक कुरुतियों के बारे जानकारी देते हुए स्कूली बच्चों को कहा कि अपने गांव घर के लोगों को जाकर इन सब बातों को बताकर उन्हें भी जागरूक करें। साथ ही इमरजेंसी की स्थिति में डायल 112 नंबर के बारे में भी बताया गया। मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य एमएल नाग समेत स्कूली बच्चे मौजूद थे।

कांग्रेसियों ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी से की मुलाकात

सिसई (आजाद सिपाही)। गुमला जिला कांग्रेस कमिटी के महासचिव सह पूर्व 20 सूत्री अध्यक्ष गंगा उरांव के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी, गुमला प्रीतिलता किस्कू से मुलाकात की। इस दौरान कांग्रेस नेता गंगा उरांव ने कहा कि कार्डधारियों के हित के लिए ससमय राशन संबंधित सभी सामग्री का उठाव हो, गोदाम से डीलर के लिए उचित माप तौल के साथ खाद्यान्न आवंटित किया जाये। प्रति कार्डधारियों से डेढ़ - दो किलो अनाज राशन डीलर काटता है उस पर रोक लगाया जाए। प्रति माह सभी प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी के द्वारा जनवितरण दुकानों का निरीक्षण हो, कई महिला मंडल जनवितरण दुकान से सिर्फ अध्यक्ष व सचिव लाभ उठा रहे हैं, बाकी सदस्य को भी लाभ दिलाया जाये। श्री उरांव ने कहा कि आपूर्ति विभाग से आकस्मिक कोष, गरीब असहाय लोगों के लिए प्रत्येक महीने, हरेक पंचायत के मुखिया को दस-दस हजार रुपये आवंटन होता है। उसका लाभ असहाय लाचार गरीबों को दिलाया जाए एवं उनके उपयोगिता प्रमाण की जांच हो। इस मौके पर कांग्रेस के पूर्व मंडल अध्यक्ष बिहारी भगत ने कहा कि सिसई प्रखंड अंतर्गत नगर पंचायत के रोशनी महिला मंडल के अध्यक्ष जयंती देवी पूर्व मुखिया और सचिव हेमंती देवी दोनों के मिलीभगत से वर्ष 2022 जून ,जुलाई, अगस्त तीन माह की, निशुल्क व शुल्क दोनो तरह की राशन को गबन किया गया था। जांच के उपरांत तीन साल से दुकान निलंबित है। इनकी लाइसेंस रद्द करें और कार्डधारियों की गबन की गयी राशन की भरपाई कराया जाये एवं खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत दोषियों पर कानूनी कार्रवाई किया जाये। मौके पर गंदूर मुंडा, रामधारी सिंह, कैलाश उरांव, बनबिहारी भगत, रविन्द्र उरांव मौजूद थे।

गुमला में थाना दिवस का आयोजन आज

गुमला (आजाद सिपाही)। गुरुवार को गुमला थाना में थाना दिवस का आयोजन किया गया है (सुबह 11 से लोगों की समस्याएं सुनी जायेगी। जिसमें गुमला अंचलाधिकारी हरीश कुमार गुमला थाना प्रभारी महेंद्र करमाली एसडीपीओ सुरेश प्रसाद यादव मौजूद रहेंगे। जहां जमीन से जुड़े मामले व जनता की अन्य समस्याओं को सुनी जाएगी और निष्पादन भी किया जायेगा।

किसी भी शहर का चेहरा होता है बस स्टैंड, इसे सुव्यवस्थित रखें : एसडीएम

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत आज बुधवार को कॉफी विद एसडीएम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस नियमित साप्ताहिक संवाद श्रृंखला की मेजबानी अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार द्वारा की गयी।

इस सप्ताह के सत्र में गढ़वा के बस मालिकों और बस एजेंटों को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद गढ़वा सुशील कुमार भी उपस्थित रहे। बस मालिकों और बस स्टैंड से जुड़े एजेंटों ने एसडीएम के समक्ष अपनी समस्याएं और सुझाव रखे। वहीं, बस मालिकों ने भी अपने-अपने मुद्दे साझा किये। एसडीएम संजय कुमार

ने सभी की समस्याओं और सुझावों को गंभीरता से सुना और आवश्यक कार्रवाई का भरोसा दिलाया।

बस स्टैंड में यात्री सुविधायें बहाल हों : बस एसोसिएशन

इस संवाद कार्यक्रम के दौरान ज्यादातर बस संचालकों ने कहा कि बस स्टैंड का नवनिर्माण जरूर हुआ है, किंतु यहां न्यूनतम आवश्यक सुविधाओं की घोर कमी है। उन्होंने यहां पर सार्वजनिक शौचालय, पेयजल के साथ-साथ यात्री शेड की जरूरत बतायी। बस एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने एसडीएम से कहा कि वे नियमित तौर से नगर परिषद की सैरात के अनुरूप निकाय शुल्क अदा करते हैं किंतु यहां यात्रियों को बैठने के लिए एक कुर्सी भी नहीं है। पूरे बस स्टैंड में यात्री विशेष कर महिलाएं, बूढ़े, बच्चे सभी खड़े रहते हैं। उक्त शिकायत के आलोक में एसडीएम ने मौके पर मौजूद कार्यपालक पदाधिकारी सुशील कुमार को यथाशीघ्र उक्त यात्री सुविधायें बहाल करने हेतु नियमानुसार पहल करने का निर्देश दिया।

कार की चपेट में आने से बच्चे की मौत

सिसई (आजाद सिपाही)। प्रखण्ड थाना क्षेत्र अंतर्गत तेज रफ्तार बोलेरो की चपेट में आने से बच्चे की दर्दनाक मौत हो गयी। थाना क्षेत्र के बरगांव करंजटोली गांव के चन्दु उरांव के सात वर्षीय एकलौते पुत्र रितिक उरांव को बुधवार की शाम करीब सावा पांच बजे अपने ही घर के समीप एक तेज रफ्तार बोलेरो गाड़ी द्वारा कुचल दिया गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बोलेरो को रोकने का प्रयास किया गया, किन्तु गाड़ी तेज रफ्तार से बरगांव से मुर्गू की ओर फरार हो गया।

हर हाल में प्रखंड बनेगा पेशका, विधानसभा में मामला को उठाउंगा : सत्येंद्रनाथ तिवारी

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। पेशका प्रखंड बनाओ संघर्ष समिति के बैनर तले पेशका को प्रखंड का दर्जा देने की मांग को लेकर समाहरणालय के समक्ष ग्रामीणों ने एक दिवसीय धरना दिया। धरना के बाद मुख्यमंत्री के नाम उपायुक्त दिनेश कुमार यादव को मांग पत्र सौंपा गया। ग्रामीणों के मांग पर धरना में पहुंचे विधायक सत्येंद्रनाथ तिवारी के अलावे विभिन्न राजनीतिक दलों के लोग भी शामिल थे। मौके पर विधायक ने कहा कि पेशका को प्रखंड बनाने के लिए वे गंभीरता से पहल करेंगे। जुलाई माह में होने वाले विधान सभा सत्र में इसे प्रमुख से उठाएंगे और हर हाल में प्रखंड का दर्जा पेशका को दिलाकर रहेंगे। उन्होंने कहा कि पेशका ही नहीं ओखरगाड़ा, डुमरिया, विश्रामपुर, गोदरमाना को भी प्रखंड

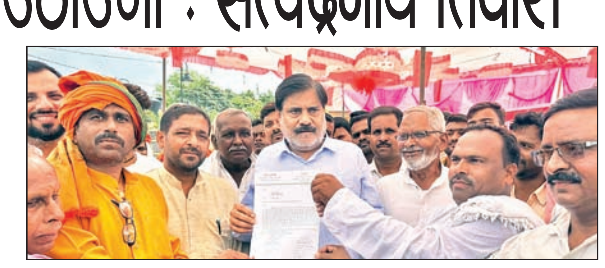

बनना चाहिए। इससे ग्रामीणों को सहूलियत होगी, योजनाओं का क्रियान्वनय भी सही तरीके से होगा। उन्होंने पूर्व मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर को ओखरगाड़ा को प्रखंड बनाने की पहल पर कहा कि उन्हें जनता को ठगना नहीं चाहिए। जनप्रतिनिधि पर जनता विश्वास करती है। जब वे मंत्री थे तो क्यों नहीं पहल किया। अब जनता को छलने व ठगने का काम कर रहे हैं। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के मंत्री होने के बावजूद पिछले पांच साल में पेयजल का एक भी नया योजना पूरा नहीं हुआ। योजना में भारी घोटाला हुआ है। चुनाव के दौरान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और पूर्व मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने भी जनता को पेशका को प्रखंड बनाने का भरोसा दिलाया था। मगर अब पूर्व मंत्री ओखरगाड़ा को प्रखंड बनाने की पहल कर पेशका की जनता के साथ छलावा कर रहे हैं। अब जनता जाग चुकी है। छलावा में नहीं आने वाली है। जबकि पूर्व मंत्री को पेशका व आसपास की जनता ने भरपूर सहयोग किया था। बावजूद वे मंत्री रहते कुछ नहीं कर सकें।

Jharkhand BijliVitran Nigam Limited
CIN:U40108JH2013SGC001702)
ELECTRIC SUPPLY CIRCLE, RANCHI
Kusai Colony, Doranda -834002,
Ph No. 0651-2490467, Fax No – 0651-2490558
Eamil Id ranchicircle.cse@gmail.com

CORRIGENDUM

The cost of BOQ (Non-Refundable) of Short e-NIT 68/PR/JBVNL/25-26 and 69/PR/JBVNL/25-26 may kindly be read as Rs. 1250.00 +GST extra Rs. 1475.00 instead of Rs. 1250+ GST extra Rs. 1450.00

Other terms & conditions of Short e-NIT will remain the same.

स्वहित एवं राष्ट्र हित में ऊर्जा बचायें। कृपया अपनी शिकायतों को टॉल फ्री नं० 1800 345 6570 पर दर्ज करायें।

PR No. 355875

Sd/-
Deputy General Manager (Technical)
Electric Supply Circle, Ranchi

PR 355965 (Jharkhand Bijlee Vitran Nigam Ltd)25-26*D

Jharkhand UrjaUtpadan Nigam Limited.
(CIN: U40108JH2013SGC001703)
Regd. Office:- Engineering Building H.E.C, Dhurwa, Ranchi- 834004
Email- cegenjuunl@gmail.com

Notice Inviting E-tender

NIT No.:- 14/PR/JUUNL/2025-26

General Manager (Technical), JUUNL invites E-tender from approved vendor of CEA, MoP, GoI for "Appointment of consultant for RLA Study, DPR Preparation and its approval for Renovation & Modernization, Life Extension and Upgradation of both units(2x65MW) of Swarnrekha Hydel Power Project, Sikidiri".

Sl. No.	Details of Work	
1	"RLA Study, DPR Preparation and its approval for Renovation & Modernization, Life Extension and Upgradation of both units(2x65MW) of Swarnrekha Hydel Power Project, Sikidiri".	
2	Estimated Cost of Work	Rs. 5.90/- Cr. (Rupees Five Crore Ninety Lacs only) (Inclusive of GST)
3	Cost of Tender Document	Rs. 10,000/- (Rupees Ten Thousand only) +18% GST
4	Bid Security/ Earnest Money Deposit(EMD)	Rs. 11,80,000/-(Rupees Eleven Lakh Eighty Thousand only)
5	Project Completion Period	14 months from the date of issue of LOI
6	Validity of Bid/Tender	180 Days from bid opening date
7	Calendar of Events:	
i.	Date of Publication of NIT	26.06.2025 at 16:00 hrs
ii.	Last date for sending pre-bid queries/ suggestions in writing or via Email- cegenjuunl@gmail.com	09.07.2025 at 16:00 hrs
iii.	Pre-Bid Meeting Date and Time	10.07.2025 at 16:00 hrs
iv.	Last Date / Time for receipt of bids	25.07.2025 at 16:00 hrs
v.	Date and Time for Opening of Technical bid	30.07.2025 at 16:00 hrs
vi.	Online opening of Financial Bid	To be Intimated after technical evaluation.
8	Address of communication	General Manager (Technical), Jharkhand Urja Utpadan Nigam Limited Engineering Building H.E.C, Dhurwa, Ranchi- 834004,Email- cegenjuunl@gmail.com Mob.: 8210263836/ 8083523563

- e-Tender document and BOQ can be downloaded from the website http://jharkhandtenders.gov.in.The downloaded document shall be treated as a valid document for participation in the tender only if payment has been made towards price of BOQ and earnest money.
- The earnest money should be deposited in online mode one-tender portal i.e.www.jharkhandtenders.gov.in only.
- Cheque /DD/ Fixed Deposit receipt/Money Order or saving certificate etc. are not acceptable towards deposit of earnest money and tenders with above will be considered without earnest money.
- The earnest money of unsuccessful bidders will be refunded to them after award of the contract.
- Tender without Earnest Money shall not be considered.
- The tenders shall not be entertained after the dead line under any circumstances whatsoever.
- The under signed reserves the right to issue, extend the date of publishing/ submission/ opening tender/ distribute the works among the tenders or reject any / all tenders without assigning any reason thereof.
- Corrigendum/ addendum if any will be published in newspaper and also be uploaded on above website.
- Prospective bidders are requested to visit website regularly.

स्वहित एवं राष्ट्र हित में ऊर्जा बचायें। कृपया अपनी शिकायतों को 18003456570 (कॉल सेन्टर) पर दर्ज करायें।

Sd/-
General Manager (Tech.)
JUUNL

PR 355979 Jharkhand Urja Utpadan Nigam Ltd(25-26).D

चिंता : हिलटॉप एनर्जी की आउटसोर्सिंग परियोजना को लेकर टकराव

धनबाद-गिरिडीह सांसद आमने-सामने, रैयतों की जमीन बनी सियासी रणभूमि

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा/धनबाद। कोयलांचल क्षेत्र में एक बार फिर सियासी तापमान चरम पर है। खरखरी कोलियरी क्षेत्र स्थित प्रस्तावित हिलटॉप एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड की आउटसोर्सिंग परियोजना ने धनबाद और गिरिडीह के सांसदों को आमने-सामने खड़ा कर दिया है। इस परियोजना के धरातल पर उतरने से पहले ही राजनीतिक संघर्ष की आहट सुनाई देने लगी है। मंगलवार को धनबाद सांसद ढुल्लू महतो द्वारा हिलटॉप आउटसोर्सिंग परियोजना के महाप्रबंधक से कथित दुर्व्यवहार के बाद स्थिति और तनावपूर्ण हो गई। इसके अगले ही दिन बुधवार

को सांसद ढुल्लू महतो ने सीनिडीह में एक आमसभा कर ग्रामीणों की भावनाओं का हवाला देते हुए परियोजना को ग्रामीण हित में बताया। वहीं, गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी ने बीसीसीएल के सीएमडी से मुलाकात कर स्पष्ट कहा कि जब तक रैयतों की मांगें पूरी नहीं होतीं, तब तक परियोजना को धरातल पर नहीं उतरने दिया जाएगा। जानकारी के अनुसार, मधुबन थाना और धर्माबांध ओपी क्षेत्र के बाबुडीह सहित तीन पंचायतों की सीमा में लगभग 1250 एकड़ जमीन पर यह परियोजना प्रस्तावित है। कंपनी की योजना है कि पांच किलोमीटर के परिधि क्षेत्र में कोयला उत्पादन केंद्र स्थापित किया जाए, जिसका पहला चरण 1250 एकड़ भूमि पर सीमांकन कर शुरू किया जाना है। इस परियोजना को लेकर रैयतों की सहमति और मुआवजे की मांग के बीच राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन शुरू हो गया है। सांसद ढुल्लू महतो के समर्थक जहां परियोजना को क्षेत्र के विकास और रोजगार का माध्यम मानकर समर्थन कर रहे हैं, वहीं चंद्रप्रकाश चौधरी के समर्थक ग्रामीण हितों की अनदेखी का आरोप लगाते हुए विरोध की अगुवाई कर रहे हैं। बताते चलें कि कुछ दिन पहले इस परियोजना को लेकर क्षेत्र में खूनी हिंसक झड़प भी हुई थी, जिसमें कई ग्रामीणों और पुलिस कर्मियों को चोटें आई थीं। यह देख प्रशासन की चिंता बढ़ गई है। निकट भविष्य में राजनीतिक संघर्ष के और भी गंभीर रूप लेने की आशंका भी जताई जा रही है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि हिलटॉप एनर्जी की यह परियोजना अब सिर्फ औद्योगिक निवेश का विषय नहीं रह गई है, बल्कि यह झारखंड की राजनीति का नया मोर्चा बनती नजर आ रही है। देखना होगा कि यह टकराव विकास की ओर बढ़ता है या राजनीतिक बवाल की आग में जलता है।

कांग्रेस का जिला मीडिया चेयरमैन सह प्रवक्ता बनाये जाने पर पर्यवेक्षक ने दी पप्पू तिवारी को शुभकामनाएं

धनबाद (आजाद सिपाही)। जिला कांग्रेस पर्यवेक्षक अशोक कुमार चौधरी के धनबाद आगमन पर बुधवार को सर्किट हाऊस में नेताओं-कार्यकर्ताओं ने अभिनंदन किया। इस दौरान उन्होंने धनबाद जिला का मीडिया चैयरमेन सह प्रवक्ता बनाएं जाने पर पप्पू तिवारी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। वहीं, विधानसभा चुनाव में धनबाद जिला के पूर्व प्रभारी रहे प्रदेश सचिव महेंद्र मिश्रा ने भी बधाई दी। वहीं, कांग्रेस पर्यवेक्षक अशोक चौधरी ने पप्पू तिवारी को धनबाद जिला का मीडिया चेयरमैन सह प्रवक्ता बनाए जाने पर पार्टी के प्रदेश प्रभारी केराजू, कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश सहित शीर्ष नेतृत्व के प्रति

आभार प्रकट किया। कहा कि कांग्रेस ने संगठन के प्रति समर्पित एवं ऊर्जावान कार्यकर्ता पप्पू तिवारी को धनबाद जिला का मीडिया चैयरमेन सह प्रवक्ता की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी सौंपी है, जिससे संगठन की मजबूती में बल मिलेगा। कहा कि मुझे आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है संगठन ने जिस आशा और विश्वास के साथ पप्पू तिवारी को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है वे उसका निष्ठा और ईमानदारी के साथ निर्वहन करते हुए जिला के हर छोटी-बड़ी ज्वलंत समस्याओं को प्रमुखता के साथ रखेंगे एवं संगठनहित में कार्य करते हुए संगठन को धारदार, सशक्त एवं मजबूती प्रदान करेंगें। इस मौके पर झारखंड कांग्रेस के सचिव महेंद्र मिश्रा, योगेंद्र सिंह योगी, राजेश्वर सिंह यादव, बबलू दास, पप्पू पासवान, मनोहर दास, आशीष सिन्हा और अरविंद सैनी आदि उपस्थित थे।

रक्तदान शिविर का आयोजन, 44 यूनिट रक्त संग्रह

धनबाद (आजाद सिपाही)। भारतीय रेडक्रास सोसाइटी एवं एसबीआई बीआरओ धनबाद रूरल के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को मेमको मोड़ स्थित प्रांगण में एसबीआई बैंक के 70वें स्थापना दिवस पर रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। जिसमें भारतीय रेडक्रास समिति धनबाद के चेयरमैन कौशलेंद्र कुमार सिंह, चेयरमैन सलाहकार कुमार मधुरेन्द्र सिंह, नोडल पदाधिकारी ब्लड डोनेशन प्रोग्राम बेनजीर परवीन, नोडल पदाधिकारी वाहन अनिल भगत, रंजीत कुमार सिंह आजीवन सदस्य सिंदरी क्षेत्र, सुजीत कुमार, इरशाद आलम, एसबीआई के रीजनल मैनेजर निर्मल कुमार, सुभाष कुमार, संजय कुमार वर्मा, ईशा सिंह, संगीता कुमारी और सुमन कुमारी ने आयोजन में अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। इस दौरान 44 यूनिट रक्त संग्रह कर धनबाद एसएनएमएमसीएच के ब्लड बैंक को सौंप दिया गया। इस मौके पर अशोक कुमार, संजीव, विष्णु, राजू और साहनी आदि मौजूद रहे।

आरोप : रात के अंधेरे में जयरामपुर आउटसोर्सिंग के 50-60 समर्थकों का तांडव

हरवे-हथियार के साथ मोदीभिट्ठा बस्ती में बोला धावा, महिलाओं के साथ मारपीट

- त्रिपक्षीय वार्ता में दोबारा गुंडागर्दी नहीं होने और उपद्रवियों पर कार्रवाई का आश्वासन

आजाद सिपाही संवाददाता

झरिया/जोरापोखर। जयरामपुर आउटसोर्सिंग परियोजना में सोमवार को हुई हैवी ब्लास्टिंग से ईस्ट बरारी एवं मोदीभिट्ठा मुहल्ले में एक दर्जन से अधिक घर क्षतिग्रस्त हो गये थे। इससे आक्रोशित ग्रामीणों परियोजना का कामकाज बंद करवा दिया गया था, जो बुधवार को तीसरे दिन भी जारी रहा। कथित रूप से इससे कंपनी को करोड़ों रुपये की आर्थिक क्षति हुई है। जिससे बौखलाए आउटसोर्सिंग के 50-60 लोग मंगलवार की देर रात हर्वे-हथियार से लैस होकर मोदीभिट्ठा बस्ती में घुसकर जमकर तांडव किये। इस दौरान परियोजना समर्थकों ने बस्ती के पास धरना देकर परियोजना का विरोध कर रही महिलाओं के साथ कथित रूप से मारपीट और छेड़खानी की। वहीं, बंद समर्थकों के हर्वे-हथियार लेकर पहुंचने और

मोदीभिट्ठा बस्ती में तांडव मचाते जयरामपुर आउटसोसिंग परियोजना समर्थक।

मारपीट-छेड़खानी शुरू करने से भयभीत होकर महिलाएं बस्ती की ओर शोर मचाते हुए भागने लही। आरोप है कि मारपीट में पार्वती महतो, जोबा महतो, अंकुरी देवी, ममता देवी, भानु देवी, कोलावती देवी, कुंती देवी और झूनी कुमारी नामक महिलाएं घायल हुई हैं। दूसरी ओर, घटना को लेकर बस्ती के ग्रामीणों ने रात में ही जोरापोखर थाना को लिखित शिकायत कर हमलावरों को अविलंब गिरफ्तार करने की मांग की है। वहीं, घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी राजेश प्रकाश सिन्हा दल बल के साथ तुरंत घटनास्थल पर पहुंच कर निरीक्षण किये। इसी को लेकर बुधवार को थाना प्रभारी ने प्रबंधक एस सील और सीआईएसएफ के निरीक्षक विजय शर्मा के साथ मोदीभिट्ठा में ग्रामीणों के साथ बैठक की। इसके बाद लोगों को आश्वस्त किया कि जो घटना होनी थी वह हो गई। अब किसी तरह की गुंडागर्दी नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने हमलावरों के खिलाफ कार्रवाई करने का भी आश्वासन दिया है। इस दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता सह झामुमो नेता सोमनाथ चटर्जी एवं सपन बनर्जी ने घटनास्थल का निरीक्षण कर ग्रामीणों को उसका अधिकार दिलाने को उनकी लड़ाई कानूनी तरीके से लड़ने का भरोसा दिया। वहीं, बस्ती की एक दर्जन महिलाओं ने पुलिस को दिए लिखित शिकायत में कहा कि हैवी ब्लास्टिंग के प्रभाव से सोमवार को बस्ती में अनगिनत पत्थर उड़कर गिरे थे, जिसमें वे लोग बाल बाल बच गयी थीं। घटना के विरोध में ग्रामीणों ने परियोजना में काम को बंद करा दिया जो अभीतक जारी है। परियोजना को चालू कराने के लिए रात के अंधेरे में आउटसोर्सिंग समर्थक हेमंत पासवान, उज्ज्वल मंडल, संदीप यादव, सतीश सिंह और बंटी सिंह सहित करीब पांच दर्जन समर्थकों ने लाठी डंडे और पिस्टल लेकर बस्ती के पास धरना दे रही दो दर्जन महिलाओं पर हमलाकर कर उनके साथ मारपीट और छेड़छाड़ की। यहां तक कि हमलावरों ने बस्ती में घुसकर ग्रामीणों को भी खदेड़ खदेड़ कर मारा। वहीं, मामले को लेकर जोरापोखर थाना में प्रबंधन के साथ ग्रामीणों की तीन बार वार्ता हुई। जिसमें ग्रामीणों ने रात की घटना का प्राथमिकी दर्ज कर आरोपियों को गिरफ्तार करने, मुआवजा के साथ विस्थापन करने, डीजीएमएस के नियम के तहत खनन कार्य करने और विस्थापन होने तक हैवी ब्लास्टिंग पर रोक लगाने की मांग की है। इस दौरान प्रभारी जीएम एस के सिन्हा ने मोदीभिट्ठा के रैयत ग्रामीण की समस्या को सुलझाने को लेकर चार जुलाई को झरिया सीओ की मौजूदगी में वार्ता करने का आश्वासन दिया। अधिकारियों ने ग्रामीणों को जमीन के कागजों के साथ आने को कहा गया है। इस दौरान प्रबंधन ने परियोजना में संतुलित ब्लास्टिंग करने का भी आश्वासन दिया है। मौके पर थाना प्रभारी राजेश प्रकाश सिन्हा, प्रभारी जीएम एसके सिन्हा, पीओ एके पांडेय, ग्रामीणों की ओर से रामप्रसाद सिंह, सुरेश चक्रवर्ती, पार्वती महतो, जोबा महतो, मुकेश महतो, अमित सिंह, मकसूद आलम और शिवपूजन महतो आदि शामिल थे।

दिवंगत पत्रकार की पत्नी को सौंपी गयी पेंशन आदेश की प्रति

धनबाद (आजाद सिपाही)। मेपल वुड में कर्मचारी राज्य बीमा निगम के पूर्वी क्षेत्र के बीमा आयुक्त प्रणय सिन्हा की अध्यक्षता में झारखंड क्षेत्र के शाखा प्रबंधक, अधीक्षक एवं सामाजिक सुरक्षा अधिकारी की बुधवार को बैठक हुई, जिसमें निगम के कार्यकलापों पर चर्चा की गई। बीमा आयुक्त ने निगम की ओर से प्रदत्त सेवाओं को बेहतर तरीके से बीमाकृत व्यक्तियों को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। वहीं, क्षेत्रीय निदेशक राजीव रंजन ने सभी अधिकारियों को वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यकलापों को सुधार करते हुए बेहतर लीडरशिप का उदाहरण प्रस्तुत करने का अनुरोध किया, ताकि बीमाकृत व्यक्तियों को बेहतर सेवा मुहैया करायी जा सके। इस दौरान बीमा आयुक्त द्वारा बीमाकृत व्यक्ति दिवंगत पत्रकार अजय तिवारी की आश्रित विधवा नीतू तिवारी को पेंसन आदेश की प्रति सौंपा। विदित हो कि स्व अजय तिवारी एक प्रमुख हिंदी अखबार के पत्रकार थे। काम खत्म कर घर जाने के क्रम में सड़क दुर्घटना में उनकी मौत हो गयी थी, जिसे कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम के तहत रोजगारजनित चोट के रूप में स्वीकृत करते हुए उनके आश्रितों को प्रतिमाह 17040 रुपये पेंशन के रूप में मृत्यु की तिथि से भुगतान किया जाएगा। बैठक में झारखंड हाई कोर्ट के अधिवक्ता आशुतोष आनंद ने कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम के तहत अभियोजन की कार्रवाई के लिए विभिन्न प्रावधानों के बारे मे चर्चा की। इस मौके पर रांची कर्मचारी राज्य बीमा मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ अशोक कुमार सामंता, राज्य चिकित्सा अधिकारी डॉ अर्चना तिर्की, डॉक्टर डीके राकेश, डॉक्टर मधुलिका कुमारी, शिवेंद्र कुमार, राजेंद्र टुडू आदि उपस्थित थे।

27 जून को बोकारो हवाई अड्डे से चास मौसी बाड़ी के लिए निकलेगी रथ यात्रा

बोकारो (आजाद सिपाही)। इस्कॉन संस्था की ओर से 27 जून को बोकारो हवाई अड्डे से भव्य रथ यात्रा निकाली जाएगी, जो विभिन्न रास्तों से होते हुए भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और बहन सुभद्रा का रथ मगध हॉल स्थित मौसी बाड़ी पहुंचेगा। यहां नौ दिनों तक भगवान जगन्नथ को छप्पन भोग चढ़ाकर पूजा की जाएगी। बुधवार को चास में संवाददाता सम्मेलन आयोजित कर इस्कॉन

संस्था के संचालक जगन्नाथ दास ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भगवान जगन्नाथ का रथ महोत्सव 27 जून से पांच जुलाई तक धूमधाम से मनाया जाएगा। इस साल सबसे बड़ी और अकर्षक रथ यात्रा आयोजित होगी। कहा कि मौसी बाड़ी भगवान जगन्नाथ को प्रतिदिननये पोशाक अपर्ण करते हुए प्रसाद भंडारा का आयोजन होगा।

बाइक चोर गिरोह का पर्दाफाश, पांच गिरफ्तार, 21 बाइक बरामद

फर्जी कागजात बनवाकर झारखंड और बिहार में बेचने की थी तैयारी

झारखंड-बिहार के विभिन्न जिलों में सक्रिय हैं सदस्य

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। पुलिस ने बाइक चोर गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए चोरी के 21 बाइक और दो मोबाइल फोन के साथ पांच आरोपियों को भी गिरफ्तार किया है। पकड़े गये लोगों में धनबाद के मो आरिफ अंसारी उर्फ आरिफ गद्दी और छोटू कुमार उर्फ छोटू पंडित शामिल हैं। इनके अलावा

बिहार के लखीसराय से सूरज कुमार, जामताड़ा से मो असलम

झरिया के गैरेज में लाकर मिटाए जाते थे पहचान चिह्न

गिरोह का नेटवर्क बिहार और झारखंड के कई जिलों में फैला था। चोरी की बाइक को झरिया के गैरेज में लाकर पहचान चिह्न मिटाए जाते थे। फिर फर्जी दस्तावेज बनाकर बेच दी जाती थी।

और धनबाद से जागो उर्फ जगदीश भुईया को भी गिरफ्तार किया गया है। एसएसपी प्रभात कुमार ने बुधवार को बताया कि जिले में बढ़ती बाइक चोरी की घटनाओं के मद्देनजर विशेष टीम बनाई गई थी। सिंदरी एसडीपीओ और झरिया थाना प्रभारी के नेतृत्व में पांच अलग-अलग स्थानों पर छापामारी की गई। झरिया क्षेत्र से बरामद की गई बाइक के इंजन और चेसिस नंबर बदले गए थे। इन्हें फर्जी कागजात के साथ झारखंड और बिहार में बेचा जाना था।

जिप चेयरमैन ने टेक्सटाइल मार्केट का किया औचक निरीक्षण

टेक्सटाइल मार्केट में हो रही अवैध वसूली और अव्यवस्था बर्दाश्त नहीं : शारदा सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। जिला परिषद अध्यक्ष शारदा सिंह ने जिला पंचायती राज पदाधिकारी के साथ बुधवार को बैंक मोड़ स्थित टेक्सटाइल मार्केट का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान अवैध वसूली, अव्यवस्था के साथ ही कई अनियमितताएं पाई गई। निरीक्षण के दौरान शारदा सिंह ने टेक्सटाइल मार्केट के आसपास गंदगी को देखकर भी नाराजगी जताई। कहा कि नगर निगम को इस समस्या का समाधान करने के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए। साथ ही टेक्सटाइल मार्केट में हो

बैंक मोड़ स्थित टेक्सटाइल मार्केट का निरीक्षण करती जिप अध्यक्ष शारदा सिंह एवं अन्य।

रही अवैध वसूली और अव्यवस्था को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि जल्द ही इस मामले में गहन जांच और ठोस कार्रवाई की जाए। जिससे जिला परिषद को हो रहे आर्थिक नुकसान को रोका जा सकेगा और टेक्सटाइल मार्केट की व्यवस्था सुधारा जा सके।

एनएच 114ए के निर्माण कार्य में लापरवाही से जमुवा नवाडी गांव की सैकड़ों एकड़ जमीन टापू में तब्दील

किसानों का धान बीज-फसल का नुकसान होने से आक्रोशित ग्रामीणों ने की सड़क जाम

विधायक प्रतिनिधि मिथिलेश सिंह ने कंपनी से वार्ता कर किसानों को दिया मुआवजा दिलाने का आश्वासन

आजाद सिपाही संवाददाता

जरमुंडी/दुमका। राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच) 114ए के निर्माण कार्य में बरती जा रही लापरवाही के कारण जरमुंडी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत पहरीडीह पंचायत के जमुवा नवाडी गांव की सैकड़ों एकड़ जमीन बड़े टापू में तब्दील हो गई है। एनएच 114ए के सामने लगभग 40 लोगों की जमीन पूरी तरह पानी में डूब गई हैं। ग्रामीणों ने बताया कि इसमें से 10-15 खेतों में धान का बीज भी है। कुछ लोगों का घर भी डूबने के कगार पर हैं। ग्रामीणों ने बताया कि एच एच 114ए का निर्माण करा रहे संवेदक, हाईवे के अभियंताओं एवं स्थानीय विधायक देवेंद्र कुंवर को भी फोन पर इसकी सूचना भी दी गई थी। लेकिन अभी तक कोई सुनवाई नहीं होने के कारण बुधवार को जमीन जलमग्न हो गयी है। ग्रामीणों ने बताया कि हालात बद से बद्तर हो गए है, लोगों को आने जाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। यह सड़क काफी व्यस्त है और आने वाले समय सावन में कांवरिया को भी ज्यादा दिक्कत हो सकती हैं। ग्रामीणों ने कहा कि मजबूर होकर बुधवार को हमलोगों ने सड़क को जाम कर दिया था। उधर, मामले की सूचना ग्रामीणों ने फिर से विधायक देवेंद्र कुमार को दी। इसके बाद सूचना मिलते ही विधायक प्रतिनिधि मिथिलेश कुमार पहुंचे और ग्रामीणों को समझाते हुए कहा कि उन्होंने भी मामले में फोन से कंपनी को निर्देश दिया था कि इस क्षेत्र में बरसात के पहले काम करवा दीजिए नहीं तो दिक्कत होगी जो आज हो ही गयी। ग्रामीणों एवं जरमुंडी थाना प्रभारी श्याम सुंदर मंडल के सामने कंपनी वाले को फोन कर विधायक प्रतिनिधि मिथिलेश सिंह ने कहा कि गांव के लोगों का धान का बीज एवं फसल को नुकसान हुआ है। उनको उचित मुआवजा मिलना चाहिए। इस पर कंपनी ने आश्वासन देते हुए दो दिन का समय मांगा है। कहा कि सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। इस मौके पर मुखिया पार्वती देवी, उप मुखिया मुकेश यादव, ग्राम प्रधान वार्ड पार्षद एवं सैकड़ों ग्रामीण मौजूद थे।

हिमाचल के कुल्लू में चार जगह फटे बादल, तबाही

आजाद सिपाही संवाददाता

शिमला। मानसून की दस्तक के बाद बुधवार को ऑरेंज अलर्ट के बीच हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश से कई जगह तबाही हुई है। बंजार, सैंज कुल्लू, मणिकर्ण से लेकर मनाली तक जिले में विभिन्न स्थानों पर बादल फटने और अचानक आयी बाढ़ की घटनाएं सामने आयी हैं। बुधवार को कुल्लू के सैंज के जीवानाला, गड़सा के शिलागढ़, मनाली के स्रो गैलरी, बंजार के होरनगाड़ में बादल फटने की घटना हुई है। इसी प्रकार गड़सा घाटी में हुरला नाला, पंचा नाला और मनिहार नाला, मणिकर्ण के ब्रह्म गंगा नाला, ग्ररहण, कुथी काकड़ी नाला तथा जिभी के पास कोटलाधार के पास भारी बारिश के कारण बाढ़ आ गयी। सैंज के जीवानाला में

धर्मशाला में 15-20 मजदूर बाढ़ में बहे, 2 शव बरामद

हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला में बुधवार को तेज बारिश हुई। खनियारा इलाके के सोकणी दा कोट में इंदिरा प्रियदर्शनी हाइड्रल प्रोजेक्ट में काम करने वाले 15-20 मजदूर मनुणी खड्ड (नदी) में बह गए। अबतक दो मजदूरों के शव मिले हैं। मजदूर नदी किनारे बने शेड में रह रहे थे। इसलिए बह गये।

इरान ने दोबारा परमाणु कार्यक्रम शुरू किया, तो हमला करेंगे : ट्रंप

एजेंसी

तेहरान। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को नीदरलैंड में नाटो शिखर सम्मेलन में मीडिया से कहा कि इरानी परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी हमलों के कारण 12 दिनों तक चली इरान-इजराइल जंग रुकी। उन्होंने कहा, 12 दिनों के दौरान इरान नर्क से गुजरा, जिसके कारण उसे परमाणु हथियार बनाने की इच्छा छोड़नी पड़ी। अगर इरान ने फिर से परमाणु कार्यक्रम शुरू किया, तो हम फिर हमला करेंगे। दूसरी तरफ इरान ने भी मान लिया है कि 22 जून को अमेरिकी हमलों से उसके परमाणु ठिकानों को काफी नुकसान पहुंचा है। इरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाघई ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी बस्टर बमों के हमले असरदार थे और उससे परमाणु ठिकानों को नुकसान पहुंचा है।

इजराइल-इरान में 12 दिन के बाद सीजफायर

इजराइल-इरान के बीच जंग के 12वें दिन मंगलवार को सीजफायर हो गया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ने सबसे पहले कल सुबह 3:30 बजे सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए सीजफायर की जानकारी दी थी। बाद में दोनों देशों ने इसकी पुष्टि की और जंग में अपनी-अपनी जीत का दावा किया। इजराइली ढट बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि ईरान के खिलाफ इजराइल ने ऐतिहासिक जीत हासिल की है, जो पीढ़ियों तक याद रखी जाएगी। ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि उनका देश न्यूक्लियर प्रोग्राम बंद नहीं करेगा। उन्होंने कहा- 'हमने इस तकनीक को हासिल करने के लिए बहुत मेहनत की है। हमारे वैज्ञानिकों ने बलिदान दिए हैं।' ईरान की राजधानी तेहरान में कल विक्ट्री सेलिब्रेशन प्रोग्राम भी आयोजित किया गया था।

तेहरान के इंकलाब स्क्वायर में विक्ट्री सेलिब्रेशन आयोजित किया गया।

इरान ने माना कि हमारे परमाणु ठिकानों को नुकसान पहुंचा

इरान ने मान लिया है कि 22 जून को अमेरिकी हमलों से उसके परमाणु ठिकानों को काफी नुकसान पहुंचा है। ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाघई ने बुधवार को इसकी पुष्टि की है। अल जजीरा से बात करते हुए बाघई ने कहा कि अमेरिकी बस्टर बमों के हमले असरदार थे और उससे परमाणु ठिकानों को नुकसान पहुंचा है। हालांकि, बाघई ने नुकसान की डिटेल जानकारी नहीं दी।

उपराष्ट्रपति धनखड़ के सीने में दर्द उठा

नैनीताल (आजाद सिपाही)। उपराष्ट्रपति जगदीश धनखड़ की उत्तराखंड में बुधवार को अचानक तबीयत बिगड़ गयी। उन्हें तुरंत नैनीताल राजभवन ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उनका चेकअप किया। फिलहाल उनकी सेहत ठीक है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ नैनीताल में कुमाऊं यूनिवर्सिटी के गोल्डन जुबली समारोह में चीफ गेस्ट थे। 45 मिनट के संबोधन में उन्होंने बार-बार 1989 में अपने साथ सांसद रहे डॉ. महेंद्र सिंह पाल का जिक्र किया। कार्यक्रम खत्म होने के बाद उपराष्ट्रपति धनखड़ महेंद्र सिंह पाल के कंधे पर हाथ रखकर बाहर निकले। करीब 10 कदम चलने पर उपराष्ट्रपति पूर्व सांसद के गले लग कर भावुक हो गये, तभी उनके सीने में अचानक दर्द उठा। पूर्व सांसद महेंद्र पाल और सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें संभाला।

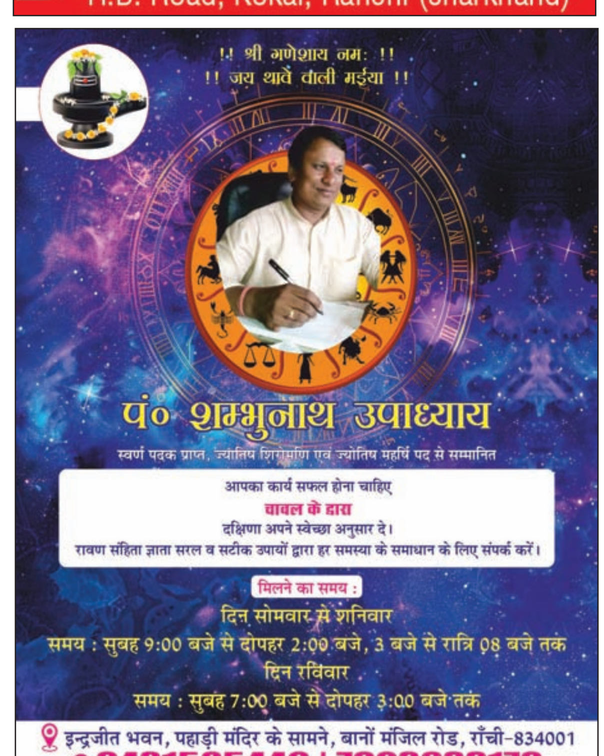

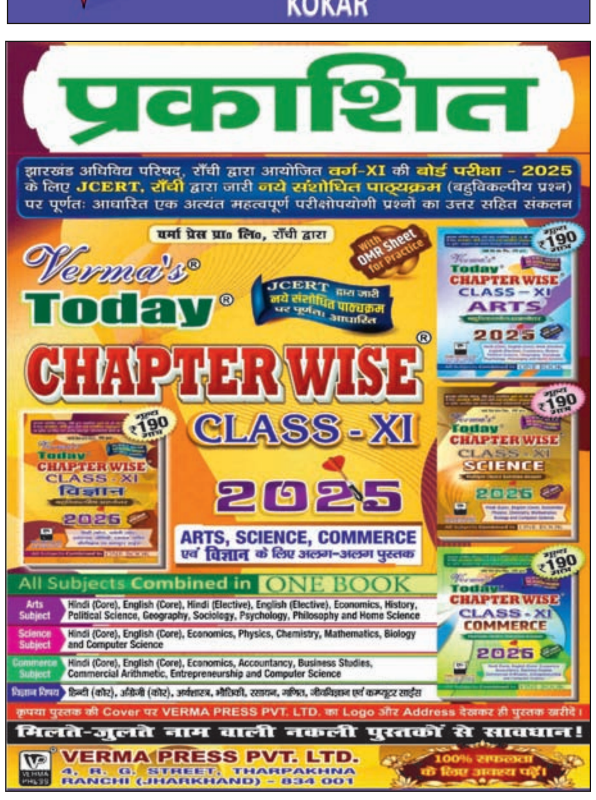

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित। संपादक : हरिनारायण सिंह, स्थानीय संपादक* : विनोद कुमार, ***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, राज्य समन्वय संपादक : अजय शर्मा। समस्त विवादों, न्यायोचित कार्यवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109, Postal Registration No. RN/249/2019-21